

"ऐतिहासिक बकरी अथवा जहाज"

("रोजा"-"जुआरी" - "स्त्री धर्म" - "काम अथवा स्वाद"-
"कुल अथवा वंश" - "नर्क अथवा स्वर्ग")

बकरी पाती खात है वा की तारे खाल ।
जो बकरी को खात है तिन का कउन हवाल ?

इस वाक्य में फकीर का भाव उच्च दर्जे का विचारणीय विषय है । मानव शरीर के पोषण के लिये पैदा हुआ बाल बिना आहार अर्थात दूध के कैसे अपने को स्थिर रखे अथवा

विकास को प्राप्त हो । जिसके दूध का सहारा लिये पट्ठा जवान होता है, फिर उसी दूधारू माँ अर्थात जानवर विशेष रूप से गाय-बकरी इत्यादि की गर्दन पर बड़ी बेरहमी से अपना "तेज धार" वाला शैतानी हाथ अपनी आँखों पर स्वाद नाम की निकृष्ट वासनाओं के रस में डूबी हुई पट्टी बाँध कर फिरता है । निकलने वाले गर्म-2 लाल रंग के खून तथा चर्बी अथवा माँस से अपने कुल परिवार तथा संबंधियों के अनन्त जन्म इस सुन्दर कार्य से रंग लेता है अथवा नर्क तथा निकृष्ट निचली जूनों के जन्म अपने इन्हीं प्यारे-2 हाथों से निश्चित रूप से लिख अथवा पक्के कर लेता है । पहला सम्बन्धी जिसने जानवर को पाला-दूसरा जिसने इसे खरीदा-तीसरा जिसने दलाल से लेकर कसाई तक पहुँचाया-चौथा कसाई जिसने इसकी गर्दन पर छुरी फेरी-पाँचवा जिसने कसाई से खरीदा, अर्थात दुकानदार बेचने वाला-छटा जिसने दुकानदार से लेकर पकाने वाले के हाथ पर धरा- साँतवा वो प्यारे-2 कर्म-2 रेशम से हाथ (पता नहीं परमात्मा न करे इन रस से भरे मीठे-2 हाथ पर मेंहदी की बजाय "कुछ और रंग" कोई और जबरदस्ती चढ़ा देवे । सावधान) जिन्होंने इस दुर्गन्ध तथा जहर से भरे "लाश" के टुकड़ों पर अपनी अनन्त जन्मों की "तप" से भरी कमाई उड़ेल कर "स्वादिष्ट" बनाते भरसक "आखिरी" प्रयत्न किया । और आंठवा वो परमात्मा (केवल शैतानी ताकत)

के प्यारे जिन्होंने अपने सुन्दर-2 दूधिया "दाँतों" नाम की ओखली में रख कर कूटा अथवा चबाया ! इस तरह से कुल आठ परिवार कुल सम्बन्धियों सहित अपने "निकृष्ट जन्म अथवा घोर नरक" निश्चित रूप से अपने ही हाथ से लिख लेते हैं ऐसा यकीनी तौर पर निश्चित समझो । पहले तीन अवश्य जानते हैं की, जानवर अथवा बर्ड किस लिये पाला जा रहा है । अब व्यापार करने के लिये किसी का खून बहाना पड़े (बेशक निकृष्ट जून ही क्यों न हो) लानत है ऐसे रोजगार अथवा कमाई के साधन पर ! आप की ये दलीलें अथवा चालाकियाँ इस धर्म अर्थात शैतानी ताकतों के दरबार में भूले से भी कल्पना में भी चलने में कभी किसी भी काल में समर्थ न हो सकेंगी ! "अण्डे" पेड़ पर लगे मिलें तो बेशक "प्रयोग" में लाओ । अगर किसी के पेट में से निकले हैं तो उसमें कोई जीवन सुरक्षित "बेशक एक कैदी आत्मा" है । उसे केवल अपने "स्वाद" के लिये भक्षित करना, आप को स्वंय एक निकृष्ट कैदी पिंजरा रोशन करने के लिये अनंत युगों अथवा कल्पों के बाद भी "मजबूर" होना ही पड़ेगा इसे आप प्रभु का निश्चित नियम अथवा न्याय समझो ! इशारे के रूप में कुछ निश्चित मुरब्बे जो स्वयं आपने अपने सुन्दर-2 हाथों से अपने प्यारे-2 संबधियों सहित सब के भाग्य में तकसीम कर दिये हैं बहुत संक्षिप्त रूप में आप जिद करते हैं, तो हम भाई आप को कैसे निरूसाहित कर

सकते हैं इसलिये बताते हैं । आप हमारे बड़े प्यारे "अज़ीज" जो ठहरे ये भी कोई बताने की बात है, कि कहते हैं कि "शाही आम" एकत्रित करो तो आप दौड़-2 कर "आक" की प्यारी-2 अमियों का जरूरत से ज्यादा अम्बार लगा ही देते हो । "जरूरत से भी कई गुना अधिक ।" ये तो केवल आप का प्यार अथवा "शौक़" ही साबित करता है । आपकी "नज़र" में अगर ये "आक" ही "शाही आम" है तो भाई हम कोई डॉक्टर तो है नहीं, जो इस "नज़र" का मुआइना करें । रब न करे जो आप की इस प्यारी-2 सी "नज़र" पर किसी "शैतानी ताकत" की नजर दूर से भी लगे । अवश्य किसी प्यारी-2 सी "नज़र" वाली से इस अपनी मीठी-2 "नज़र" की जरूर याद से, कुछ ले दे कर के भी जल्दी से "नज़र" अवश्य उतरवा लो । कहीं ऐसा न हो कि कोई "काली नज़र" इस "नज़र" से ये "दुर्लभ नज़र" सदा के लिये दूर ही कर दे । अतः जल्दी से कोई सुरक्षित उपाय इस "दुर्लभ नज़र" को कायम रखने के लिये अवश्य कर ही लो । भाई आप की इस प्यारी "नज़र" के बिना तो हम इस "नज़र" को कभी सुरक्षित रख ही न पायेंगे । कुछ हमारा भी तो सोचो कैसे जियेगें ? आप के बिना हम ? सब से पहले तो आप को ऐसे पार्क की सैर कराई जायेगी, जिसमें एक काले से चमकते रंग का दानव जैसा दिखने वाला विकराल लाल-2 मोटी-2 आँखों वाला, जिसके एक हाथ में बहुत तेज धार वाला चौड़े फल का चमकता हुआ तेग की आकार से मिलता

जुलता शस्त्र पकड़ रखा होता है कस कर । जैसे ही आप इसके दायरे में प्रवेश करोगे आप की नाक सड़े-2 माँस की दुर्गन्ध से फूलने लगेंगी । पैरों में मानव शरीर की हड्डियाँ तथा खोपड़ियाँ ठोकरें मारने लगेगें अंधेरा सा होने के कारण, न आप इस अंधेरे से बच सकोगे न दुर्गन्ध से और न ठोकरें ही खाने से । अभी कुछ सोच भी न सकोगे बचने का कि कोई भयानक बड़ा सा पंजा झट से एक हाथ से आप के बाल पकड़ लेगा और आप को धरातल से ऊपर उठा लेगा, जैसे आप किसी बेचारे निरीह प्राणी अर्थात "पक्षी" को एक हाथ से ऊपर उठा कर उसका वजन तोला करते थे । वो प्राणी प्रत्यक्ष फड़फड़ाता हुआ सा आकाश में आप को प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा, आप भी बालों के खिंचने से भयानक होने वाले दर्द को बर्दाश्त न कर पाने की अवस्था में चिल्लाने लगोगे, पर यकीनी तौर पर वहाँ पर आप जैसे और कितनों के चिल्लाने के सिवा, सुनने वाला कोई भी नहीं मिलेगा । फिर दूसरा शस्त्र वाला हाथ उठेगा और बड़े "प्यार" से आप की गर्दन की उस नस पर रगड़ेगा, जिससे मुख रूप से खून का दौरा शरीर में दौड़ता है । उबलता-2 गर्म-2 खून जो आप का केवल आप का अपना ही "कमाया" हुआ है आप का ही अपना केवल मुँह ही नहीं सारा का सारा शरीर रंग देगा । फिर जब आप घोर दर्द से भयानक-2 चीत्कार करोगे और बचने के लिये फड़फड़ाओगे तो वो दूसरा हाथ जिसने आप के बाल पकड़ रखे थे, क्रोध में भर कर जोर से

आकाश में आप को घुमा कर धरातल पर पटक देगा । भयानक दर्द को बर्दाश्त न कर पाने की अवस्था में आप जब जोर-2 से तड़पोगे-चिल्लाओगे-हाहाकार मचाओगे तो उस काली सी दानव आकृति का एक पैर जोर से आप की कमर पर पड़ेगा और आप आकाश में कई कलाबाजियाँ खाते (नट की तरह) दूर जा कर "नुकिले पत्थरों" जैसे धरातल पर गिर पड़ोगे । फिर वहाँ से घसीट कर दूर नुकिले पत्थरों पर पटक दिये जाओगे । फिर धीरे-2 आप के अंग छोटे-2 टुकड़ों में बदल दिये जायेंगे, जैसा कि आप ने लेते वक्त जल्लाद अथवा कसाई से कहा था कि भाई "पीस" छोटे करिओ नहीं तो "बच्चों" को दिक्कत होती है खाने में ! आप का भयानक चीत्कार सुन कर तथा आप को तड़पता देख कर वो काला सा भयानक दानव जोर-2 से ठहाका लगा कर हँसेगा । कितना सुन्दर प्यारा सा दृश्य होगा न ढोल-बाजा बजाने वाले की जरूरत न नाचने वाले की । सब कार्य ये केवल आप स्वंय ही कर लोगे । चीत्कार और ठहाका बिल्कुल बाजे-ढोल का कार्य सम्पन्न करेंगें तथा आप का घोर दर्द से तड़पना ऐसा ताल ठोक कर नाचना साबित करेगा कि जैसे आप कोई पेशेवर नाचने-गाने वाले कई कला सम्पन्न श्रेष्ठ जाने-माने कलाकार हैं। शायद इसी अवस्था को सुन्दर तथा सजीव बनाने के लिये आप आये दिन आधी-2 रात को भी क्लबों इत्यादि नाचघरों अथवा सड़कों-गलियों आदि चौबारों पर निर्वस्त्र जैसे लाल-पीले रंग में पुते

नाचते-कूदते तथा गाते बजाते रहते हो । आपका ये "गुप्त भेद" आज हमारी जानकारी में "विशेष दया" किसी की से जानने में प्रत्यक्ष हुआ, भाई सचमुच आप "छुपे रूस्तम" निकले ! ऐसा कब तक बार-2 चलेगा इसकी गिनती तो केवल आप ही जानते होंगे भाई आप जैसे छुपे "दुर्लभ कलाकार" की कलायें भला हम जैसे मूर्ख कैसे बता सकते हैं । फिर लम्बे समय काल के बाद आप को दूसरे डिपार्टमेंट अथवा पार्क में ट्रांसफर अर्थात तबादला कर दिया जायेगा । इस पार्क में डायनासोर श्रेणी के कई प्रकार के बड़ी-2 चोंच अथवा दाँतो वाले उड़ने वाले जानवर जैसे प्राणियों से आप की गुप्त भेंट होगी । लम्बी चोंच वाला एक गिद्ध जैसी नकल का भयानक मोटी-2 लाल-2 आँखों वाला पक्षी तुरन्त झपट कर आप की प्यारी-2 रस से भरी मीठी-2 आँखें नोच कर हज्म कर लेगा । ऐसे झपटेगा कि कोई दूसरा उस से पहले न नोच ले इस प्यारी "निधि" को, अब आप इस गर्म तपती धरातल पर जो नीचे से तपता ही रहता है निरन्तर खड़े होने में असमर्थ पेड़ों पर चढ़ने की कोशिश करोगे, अन्धकार में । रोशनी तो बहुत होगी पर आँखें छिन जाने के कारण आपके लिये तो केवल अंधेरा होगा "भाग्य" में । दर्द अलग से (ब्याज) "इंटरेस्ट" के रूप में मिलता अथवा बढ़ता ही जायेगा । अभी आप एक हाथ ऊपर पेड़ पर चढ़ भी न पाओगे कि कोई भयानक सी बड़े-2 दाँतों वाली आकृति भेड़िये से मिलती जुलती आप की टाँगें अपने जबाड़ों से

दबा कर नोच लेगी । फिर जो नाच बिना ढोल-बाजे के आप को नाचना पड़ेगा, ये आज तक रोज का अभ्यास ही आप की शान में चार चाँद लगायेगा ! इसी तरह से बार-2 ये क्रिया लम्बे समय तक अच्छी तरह अभ्यास करवाने के बाद फिर आपकी तबदीली एक और बढ़िया पार्क में सैर करवाने के लिये कर दी जायेगी ! इस पार्क की चमक तथा हाहाकार नामक "धुन" आप को काफी दूर से ही सुनाई देने लगेगी, जिसे सुनते ही आप के रोंगटे अवश्य खड़े हो ही जायेगें । जैसे यहाँ डिस्को लगाते ही आप की समस्त इन्द्रियाँ खड़ी होकर थरथराने लगती थीं । आखिर ज़िन्दगी भर का अभ्यास इस मुश्किल की घड़ी के लिये ही तो बचा कर रखा था । "संचित धन" जोखिम में ही तो काम आता है । अन्दर का दृश्य इस पार्क का तो भाई लफजों में ब्यान ही नहीं किया जा सकता । यार खुद ही जा कर स्वंय क्यों नहीं अनुभव कर लेते । अपने समस्त सम्बन्धियों सहित सैर की सैर और मनोरंजन का मनोरंजन कुल-परिवार बच्चों सहित कर आओ तो ज्यादा बढ़िया भाई टिकट थोड़े ही लगती है । कई "विशेष सरकारी पार्क" हैं बने ही केवल आबो हवा बदलने के लिये हैं । आगे जैसे आप की इच्छा । अन्दर बीच में एक बड़ा सा तालाब जैसा कड़ाया है, जिसमें कोई तरल सा पदार्थ कोल रंग का बड़ी जोर-2 से आवाज करता हुआ निरन्तर उबलता ही रहता है । उस कड़ाये के ठीक

बीच में एक बहुत मोटा खम्बा सा खड़ा रहता है उस खम्बे में बहुत फिसलन रहती है । हाथ पैर की पकड़ उस पर टिकती ही नहीं झट से फिसल जाती है । उस खम्बे के ठीक ऊपर एक गोल धुरा सा लगातार बड़ी तेजी से निरन्तर घूमता रहता है । इस पार्क में आये भाग्यशाली प्राणियों को उस धुरे पर बड़ी-2 काली आकृति वाली भयानक शक्लें लिये, केवल आप की निजी सेवा के वास्ते रखे सेवादार-फेंक देते हैं । धुरे के तेजी से घूमने के कारण आप इस पर अधिक देर तक टिक ही नहीं सकते, चक्कर आने लगते हैं और फिर चकरा कर नीचे उबल रहे तरल तेल जैसे पदार्थ से भरे कड़ाये में गिरना ही पड़ता है । अब उस गर्म-2 उबल रहे तेल में जलने-उबलने से बचने के लिये आप बीच में खम्बे को कस कर पकड़ लोगे और फिर ऊपर चढ़ने लगोगे । हाथों में लगे तेल तथा खम्बे की स्वाभाविक फिसलन के कारण आप उसे अधिक समय तक पकड़ नहीं सकोगे और फिर आपको उस उबलते कढ़ाये में नहाने के लिये डुबकी लगानी ही पड़ेगी । वहाँ आप की भाई हम यकीन से कहते हैं कि बिना साबुन अथवा लिकुयिड सोप लगाये जन्मों-2 की चढ़ी मैल अवश्य धुल ही जायेगी । आप जब भी इस "दुर्लभ स्नान घर" से बाहर निकलोगे निर्मल-पाक-पवित्र हो कर के ही आओगे । चारों तरफ ऐसे ही बड़े-2 कड़ाये और आप जैसे सम्बन्धों सहित भयानक चीत्कार अथवा हाहाकार करते सुनाई अथवा दिखाई देंगे । मुबारक हो ऐसी "शुभ घड़ी-

लगन-मूर्हत !" जब आप कड़ाये में फिसलोगे तो आप को जरूरी बात है, किसी से बताना मत "अन्दर की बात" है । वो मजा आयेगा जो "अप्पू घर" में भी नहीं आया होगा । किसी को बताने से भाई "अप्पू घर" चलाने वाले का धन्धा चौपट हो जायेगा क्योंकि सब बिना टिकट वाले इस "विशेष सरकारी पार्क" में ही मजा लूटने सम्बन्धों सहित पहुँच जायेगें । किसी के "पेट पर लात मारते" हमें बहुत डर लगता है भाई हमारी तो "तौबा ।" ऐसा लम्बे समय तक मजे लूटने के बाद आप को अगले पार्क की सैर करवाई जायेगी ।

"जोगिंग" आप ने सुना नहीं होगा केवल भाई आप तो बड़े नियम से "जिम" में भी रोज अभ्यास करते ही हो । भाई मुबारक हो ऐसी सुन्दर विवेकशील बुद्धि प्रभु "मुफ्त" में बाँटे अगर तो, भाई शायद हम जैसे भिखारियों के भाग्य भी अवश्य चमक ही जायेगें ! वहाँ धरातल ही इस तरह की नुकीली मोटी-2 कीलों से बनाया गया, विशेष रूप से केवल आप जैसों के लिये ही है कि आप को कुछ भी नहीं करना, बस एक बार आप अपने नर्म-2 (कोमल) कूले-2 चरण उस विशेष धरातल पर रखोगे, कि फिर उन कीलों के चरणों में घुसते ही खून के फुव्वारे फूट पड़ेंगे और आप का जोगिंग करने का अभ्यास भयानक चीत्कार अर्थात डिस्को बाजे जैसा प्रत्यक्ष होने लगेगा । सीधा धरातल आप को

चारों तरफ कहीं भी दिखायी ही नहीं देगा । फिर आप कहोगे कि आप जिम में "भार" भी उठाते हो, तो भाई फिक्र मत करो वो परीक्षा भी यहाँ हो ही जायेगी । आप के अंगों को छेद कर विशेष रूप से नाक तथा कान इत्यादि को, उस पर डोरी जैसी रस्सी से भार बाँध कर लटका दिया जायेगा । अब समझे गाने नाचने-कूदने आदि के समस्त अभ्यास आज तक के आप के अवश्य सार्थक हो ही जायेगें निश्चित रूप से । इस भयानक चीत्कार से भरे जोगिंग के अभ्यास में काफी समय बीत जाने के बाद जब आप "बोर" होने लगोगे तो आप को अगले पार्क में ले जाया जायेगा "हवा" बदलने के लिये । यहाँ की आबो हवा विशेष रूप से तपाई जाती है ठीक "मरू भूमि" की तरह । नीचे से रेत भयानक रूप से तपती है और ऊपर सिर पर सूर्य जैसा आग का गोला तपता है । न आप नीचे पैर ही रख सकोगे और न सिर उठा कर ऊपर ही देख सकोगे । कुछ ही क्षणों में आप का हल्क भयानक तरीके से खुश्क होने लगेगा । शीतल जल के लिये आप तड़पने लगोगे । दूर आपको पानी के समुद्र की लहरों का भण्डार सा दिखाई देगा । आप उस तरफ घिसटने लगोगे । जब काफी समय तड़पनें तथा गर्म-2 रेत में घिसटने के बाद आप कुछ दूर तक पहुँचोगे, तो लहरों का भण्डार आप को उतना ही दूर दिखाई देगा जितना दूर कि आपने पहले देखा था । यहाँ ये खूबी है कि आप को खामोश रहने का "दुर्लभ" अभ्यास अवश्य करवा दिया

जायेगा क्योंकि गले की ऐसी भयानक दर्द से भरी खुश्की आप के हलक से एक लफज भी करोड़ खून कर लेने के बावजूद भी निकलने ही नहीं देगी । आप केवल दर्द तथा तपश के जलने से भयानक रूप से तड़प तो सकोगे, पर मुँह से आवाज निश्चित रूप से चाहने के बावजूद आप निकाल ही नहीं सकोगे । इसे ही "मृग-मरीचिका" कहते हैं आप के इस धरती की मरू भूमि का । रेत तपश तथा प्रकाश में जल के समुद्र का आभास तो देता है पर जल तो सुपने में भी सम्भव नहीं हो सकता । ऐसी भयानक दर्द भरी यातना बार-2 भुगत कर आप की वृद्धि को "कुंदन" बनने पर अवश्य मजबूर कर देगी । इसके बाद फिर आप को ऐसे पार्क में घुमाया जायेगा जिस में चारों तरफ बिना धुँऐं वाली केवल आग की लपटें ही नज़र आयेंगी । जहाँ तक भी आप की दृष्टि जायेगी आग ही आग चारों तरफ दिखाई देगी । आप बार-2 भयानक हाहाकार करते हुये जिस भी दिशा में दौड़ोगे बचने के लिये केवल आग से ही "मुलाकात" होगी । सिवा उस के और कुछ भी आप देख ही न पाओगे, तब आप को अपनी ज़िन्दगी की सभी "मुलाकातें" इस आग में ही अनुभव प्रत्यक्ष करवा ही दी जायेंगी । लम्बे समय तक बार-2 हाहाकार करते, आग में जल कर मरते-2 जब सब मुलाकातें "विद इंटरेस्ट" समाप्त हो जायेंगी, तो आप को फिर अगले पार्क में ले जाया जायेगा । यहाँ आप एक विचित्र बात देखोगे कि बहुत मोटे-2 तपते खम्बे चारों तरफ खड़े किये

गये हैं, पर दूर से तपश नहीं लगती केवल सम्पर्क में आने पर ही भयानक विशेष तरह की तपश अनुभव आती है । सारे पार्क "विशेष कारीगरी" के ही केवल उत्कृष्ट नमूने मात्र हैं । यकीन जानों अगर केवल एक खम्बा ही केवल आपकी इस धरती पर गिर जाये तो आप का पूरा समुंद्र उसे ठंडा करने में असमर्थ साबित होगा । उल्टा धीरे-2 ये तपश सारे समुंद्र को ही सुखा देगी और फिर जानते हो क्या होगा, कुछ समय में ही आपका ये सुन्दर "प्लैनेट" सभी पदार्थो सहित केवल राख में बदल जायेगा । और वो दिव्य तपश से भरा खम्बा खड़ा-2 आकाश में केवल आप का मुँह चिढ़ायेगा । इसे निश्चित रूप से समझ लो । अब ये किन के भाग्य जाग्रत होंगे जो आप जैसे प्यारे, दूसरे प्यारे-2 गलों को गले से लगाने का "मुक्त" व्यवहार करते रहे । उन्हें जबरदस्ती विकराल आकृति के काले-2 रंग के दानव मोटी-2 लाल-2 आँखों वाले जिन की ताकत के आगे किसी का कोई जोर नहीं चलता, इन तपते खम्बों से बार-2 चिपकाते हैं । आप केवल तड़प तथा भयानक चीत्कार कर सकोगे-केवल बच नहीं सकोगे किसी भी तरह से । इस तरह से लम्बे समय तक तपते खम्बे गले लगाने से आप की समस्त गले लगाने वाली लहरें पूरी तरह से मिटा दी जायेंगी । फिर आप को अगले पार्क में घुमाया जायेगा । यहाँ की पहले से बढ़ कर "कारीगरी" है । ऐसा भोगी शरीर आप को मिलेगा जो बिल्कुल रबड़ की तरह लचीला होता है । और उसका एक गुण

"पारे" जैसा होता है । जैसे पारे के आप जितने मर्जी अंश अलग कर लो और फिर जब चाहे सब को मिला कर एक सा कर लो । ऐसा ही इस भोगी भुगतान के शरीर में खूबी रहती ही है । वैसे ही विकराल-भयानक काली आकृतियाँ आप को पकड़ कर, एक पैर आप के शरीर पर स्थिर रख कर दबायेंगी कि कलेजा मुँह को आ जाये । फिर दोनों हाथों से बारी-2 आप के एक-2 अंग को सख्ती से पकड़ कर धीरे-2 उस अंग को जड़ से ही अलग करने का प्रयत्न करेंगी । अंग के भंग होने पर जो भयानक दर्द आप के अनुभव में आयेगा उसे आप किन लफ्जों से ब्यान करोगे । और आप भयानक तरीके से ही केवल तड़पते रहोगे, तब तक जब तक कि आप का जो अंग भंग हुआ है उसे फिर से उसी स्थान पर पारे की तरह से इकट्ठा कर के जोड़ न दिया जाये । इस तरह से जगह-जगह चारों तरफ विक्षिप्त अंगों के टुकड़े तथा खून के समुद्र से दिखाई पड़ते हैं । और बड़े-2 "राज" श्रेणी के जीव जिनके धरती पर चलने के समय कई-2 योजन "छत्र" चलते थे, आपको ऐसी दीन-हीन हालत में भयानक हाहाकार करते तड़पते दिखाई देंगे कि उसे कैसे ब्यान किया जा सकता है । लम्बे समय तक इस अवस्था को भुगतने पर जब तक समस्त अधिकार जो दूसरों के हज्म करता आया है न तू आज तक, उगल नहीं देगा "इंटरेस्ट" के साथ इसी पार्क में आप की मौज मनेगी । फिर अगले पार्क में ले जाया जायेगा ! इस पार्क में पतली-2 सलाखें

सदा आग पर तपती ही रहती हैं । विकराल भयानक आकृतियाँ पकड़ कर सामने रखती हैं, और दूसरी उन सलाखों को लाल-2 तपा कर बार-2 स्त्री पुरुष दोनों के योनी द्वारों में लम्बे-2 समय तक डाल कर रखते हैं । इन भोगी भुगतान के शरीरों में ये खूबी रहती ही है कि ये जलते नहीं, केवल भयानक घोर यान्त्रणा का ही अनुभव करवाते हैं । यह नतीजा "मुक्त व्यवहार" का बहुत लम्बे समय तक भुगतना पड़ता है । भयानक हाहाकार करते हुऐ ! इस के बाद ऐसे पार्क में घुमाया जायेगा आपको, जहाँ आपकी दृष्टि पवित्र अर्थात शुद्ध अमृत का भण्डार ही बना दी जायेगी । ताकी फिर से आप इस "प्लैनेट" पर "नजर मार" कर अमृत बनाने का धन्धा पहले से बढ़िया ढंग से कर सकें । यानी के यहाँ भी वही सलाखें गर्म करके तपाई जाती हैं, और यहाँ योनी द्वार के बदले आँखों को छेदा जाता है बार-2 । इस क्रिया में आँखे पूरी तरह नष्ट नहीं होती, केवल ठंडी होते ही फिर से पहले जैसी ही हो जाती हैं । और फिर उसे घसीट कर सलाखों के सामने कर दिया जाता हैं और फिर छेदने का काम शुरू हो जाता है । भयानक चीत्कार-हाहाकार करते चारों तरफ केवल तड़पते मानव जैसे दिखने वाले भोगी शरीर ही दिखाई देते हैं । एक बार इन पार्कों में प्रवेश पा जाने पर फिर "दुखों का खजाना" ढूँढने के लिये आप को कहीं भटकने की कभी कोई ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी इसे आप यकीनी तौर पर जान लो । ये आप की "कुदृष्टि" जब

तक (बन कर) "सुदृष्टि" नहीं हो जाती, आप इसी पार्क में अपनी "प्रिय रोशनी" जो आपको बिना जेनरेटर के निरन्तर स्वाभाविक रूप से धुर से केवल निरन्तर प्राप्त होती रहती है, बिना कुछ खर्च किये बिखेरने का परोपकार अपने आप अपनी विशेष "दया की वृति" के कारण कमाते ही रहोगे । इस परोपकार का जब बहुत बड़ा अर्थात विशाल भण्डार आपके पास सचित हो जायेगा तो फिर आपको अगले पार्क में घुमाया जायेगा । यहाँ बहुत बड़े-2 विशाल तालाब के साईज़ के घड़े के आकार के विशेष "सरोवर" से बने रहते हैं । इनमें मवाद तथा गन्द इत्यादि लबालब भरा ही रहता है और बहुत भयानक दुर्गन्ध चारों तरफ फैली रहती है । बालों से पकड़ कर घसीट कर आपको इन सरोवरों में फेंक दिया जायेगा । पीव-मवाद-गंद इत्यादि आपके मुँह नाक में भरने लगेगा तो आप को अपने प्यारे-2 "प्याले सोम रस" के याद आने लगेंगे स्वाभाविक रूप से । सभी पार्कों में ये समर्था अपने आप रहती ही है कि हर (मीठी और रस से भरी) प्यारी कामना का अपने आप प्रत्यक्ष होना आप के "एटोमैटिक" लफज को सार्थक बना देता है । लगता है शायद ये "फार्मूला" स्वचालित ढंग का आपने यहीं से कापी किया है अथवा "मारा" है । यहाँ लगता है आपको काफी समय तक रह कर काफी मेहनत करनी पड़ी होगी ? जब आपको सभी तरह के "विदेशी अथवा देसी" ब्रांड "रंगीन प्यालों" सहित घोट-2 कर पिला नहीं दिये जायेंगे अर्थात याद

करा दिये जायेगें पक्की तरह से यकीनी तौर पर, कि कहीं आप फिर से इन्हें यहाँ आकर भूल जाने की गल्ती न कर बैठें, आप को ये अभ्यास बार-2 यहाँ दृढ़ करवाया जायेगा । जैसे ही आप बाहर निकलना चाहोगे आप के सिरों पर बड़े भारी-2 मूसल बरसने लगेगें और फिर आपको इन बड़े-2 प्यालों में ही रंगने के लिये डूबना ही हितकारी अनुभव होगा । इस तरह से प्यालों का अभ्यास दृढ़ करवा कर आपको अगले पार्क की सैर के लिये ले जाया जायेगा । यहाँ की विशेष बात यह है कि बिना कुछ खर्च किये आप को "स्नोफॉल" के दर्शन करवाये जायेगें व्यवहारिक रूप से । ऐसी "स्नोफॉल" जो आपने आज तक न कभी किसी पहाड़ पर देखी न किसी से सुनी होगी । इस पार्क में घुप अन्धकार रहता है । नीचे बर्फ से भी कई गुना अधिक ठंडा धरातल आपको जमने पर ही मजबूर कर देगा । वातावरण कई डिग्री जीरो से भी नीचे यानी के माईनेस में रहता है । जो भोगी भुगतान का शरीर मिलता हैं, वो सिकुड़ता अथवा जमता नहीं, केवल भयानक ठंड को अनुभव करवाने में ही समर्थ साबित होता है । जब कुछ दिखाई नहीं देगा आपको तो आप चारों दिशाओं में दौड़ोगे, इस ठंड से बचने के लिये तो बीच-2 में बर्फ के पहाड़ों से आप की टक्कर होगी, अब ये सुन्दर मुलाकात आप को बहुत सस्ती साबित होगी क्योंकि बर्फ के टुकड़े छोटे-बड़े बड़ी तेजी से ऊपर से आप के ऊपर गिरने लगेंगें बिन बुलाये मेहमान की तरह । स्थिर आप रह

नहीं सकोगें ठंडे धरातल के कारण और सभी दिशाओं में सिवा बर्फ जैसे पहाड़ों के और कुछ है ही नहीं । टैम्प्रेचर माईनेस का आप को तड़पने-चिल्लाने पर अवश्य मजबूर कर ही देगा । इन्ट्रेस्ट में बर्फ के गोले सिरों पर बरसेगें तो आपको ये बिना पहाड़ी की स्नोफॉल सभी पहाड़ों पर आप की अपनी देखी गई "स्नोफॉलो" से कई गुना उत्कृष्ट अवश्य ही साबित होगी । ऐसे कितने ही बढ़िया-2 पार्क हैं जो केवल आप ने अपनी निजी "प्यारी-2 मीठी रस से भरी वासनाओं" को पूरा करने के लिये अपने सुन्दर-2 हाथों से निश्चित रूप से लिख रखे हैं । जो आपको यकीनी तौर पर ऐसे ही बिना गिनती किये जा सकने वाले पार्कों की सैर करने के लिये मजबूर कर ही देंगे । आप की अपनी ही लिखित है "शैतानी ताकतें" मजबूर कर ही देंगी आप सुपने में भी नहीं सोच सकते । अभी विचार कर लो कैसे बचोगे अपनी इन प्यारी-2 वासनाओं से । मर्यादा से रहित जीवन जीने का अन्जाम केवल आप को इशारे के रूप में, इस अनन्त काल के दुख का आभास केवल एक लाईन में बता दिया है, केवल ऐसा ही समझ लो (थोड़े में ज्यादा) । इन दुखों को कभी भी लफजों में ब्यान ही नहीं किया जा सकता है । अनन्त काल से "हम सब" इन जेलखानों की अंधेरी कोठरियों को रोशन करते चले आ रहे हैं । निकलने का अथवा छूटने का इस जेल खाने से केवल एक ही रास्ता है । उसको पुकारना जिसने इस खेल अथवा जाल को रचा

है केवल तमाशे के रूप में ! और बचने वाले को बचाने के लिये वो हर वक्त निरन्तर तेरे रोम-2 में समाया बैठा है । तू ही उसे भूला बैठा है पर वो अपने फर्ज़ से कभी जुदा नहीं होता सुपने में भी ! दोनों आँखों के पीछे बैठा ज़िन्दगी भर वो तेरे को केवल तुझे तेरे ही कमाये गये दुखों से सदा के लिये तुझे आजाद कराने के लिये अर्थात तुझे इन विपिदाओं से बचाने अथवा दूर करने के लिये केवल तेरे आने का इंतजार करता रहता है, पर तू अंत तक अपने कमाये हुए दुखों में ही केवल सुख को ढूँढता-2 अपने इस दुर्लभ मानुख जन्म को सदा के लिये खो बैठता है । जानवर-परिंदा तो बेचारा शाक इत्यादि कंद मूल पर अपना जीवन स्थिर करता है । "बकरी पाती खात है वाकी तारे खाल ।" और तेरा जुर्माना उस पर, कि तू उस की गर्दन पर छुरी फेरने का निकृष्ट कर्म केवल अपनी जुबान के स्वाद के लिये करता है । "जो बकरी खात है तिन का कोउन हवाल ।" अर्थात कि जो तूं माँस का "धन्धा" खाने अथवा-काटने-पालने-बेचने का कर रहा है, कौन तेरा जिम्मा अर्थात जमानत भरेगा । कौन तेरे इन कर्मो के बदले अपनी गर्दन फँसानी पसंद करेगा । सोच ले केवल तुझे ही इन सब कुकर्मो का भुगतान निश्चित रूप से चुकाना ही पड़ेगा । बड़ा जुर्माना अर्थात इस धन्धे का 50 प्रतिशत केवल खाने वाले को ही भुगतना पड़ता है क्योंकि केवल उसी एक खाने वाले, एक की जुबान के स्वाद के कारण ही शेष सात परिवार इस धंधे में जुटते

हैं । शेष ५० प्रतिशत इन सातों को तकसीम कर दिया जाता है इसे निश्चित रूप से शैतानी ताकतों के दरबार का न्याय समझ लो । इसी तरह का एक फैसला और आप को जानकारी के लिये निश्चित रूप से बता रहे हैं गाँठ बाँध लो । प्रत्येक सभा में अगर कोई अपराधी प्रस्तुत किया जाता है तो यदि सभा खामोश रहती है अर्थात जान कर के भी न्याय नहीं करती, अपराधी को दण्ड नहीं सुनाती तो सुन लो निश्चित रूप से कि किये गये अपराध के जुर्माने का आधा यानी के ५० प्रतिशत केवल जो उस सभा का सभापति है उसे ही चुकाना पड़ता है, न्याय न करने के एवज के रूप में । इसीलिये इंचार्जो को "जी-हजूरी" करने वालों से विशेष रूप से अवश्य सावधान रहना ही चाहिये ! अगर आप की लुटिया साल दो साल बाद डूबनी लिखी है तो इन "जी-हजूरी" करने वालों का "संग" निश्चित रूप से केवल आपका ही भाग्य बदलने में हर वक्त समर्थ साबित होगा, अर्थात वो लुटिया "शैतानी ताकतें" इन जी "हजूरियों" की मदद से केवल आज नहीं अभी तुरन्त अवश्य ही डुबो दी जायेगी ! ये ताकतें इन्हीं के रूपों में बड़ी प्यारी तथा "मीठी जहर की पुड़िया" बनकर "राम बाण" की तरह से कार्य करती हैं । शेष आधे का आधा २५ प्रतिशत जो सभा के सदस्य हैं उनके खाते में जुर्माना तकसीम कर दिया जाता है । इसलिये सोच कर ऐसी सभाओं में जाओ अथवा संग करो । अगर जाना ही पड़े तो न्याय की तरफ ब्यान दो । मत भूलो कि तुम खामोश

रह करके ही केवल छूट जाओगे । तुम्हारे सामने अपराध हो रहा है अथवा आप अपराध को जानते हैं और खामोश हो, तो भी उस अपराधी के अपराध में अवश्य शामिल कर दिये जाओगे । इसीलिये कहा है कि या तो जाओ ही नहीं, अगर जाना ही पड़े तो आप को ठीक ब्यान केवल अपने को बचाने के लिये देना ही पड़ेगा । शेष बचा केवल 25 प्रतिशत ही, किये गये अपराध के अपराधी के खाते में तकसीम कर दिया जाता है । मत भूलो कोई हर जर्रे पर निरन्तर भरपूर नजर रख कर बैठा है, तू करोड़ यत्न करके भी उस "न्याय की लाठी" से बच नहीं सकता । तेरे सर्वस्व उपाय केवल व्यर्थ का धन्धा अवश्य साबित होगें । जुर्माना स्थिति और ज़रूरत को ध्यान में रख कर के ही तकसीम किया जाता है । जब डॉक्टर आप को केवल आप का दुर्लभ मानुख जन्म सुरक्षित रखने के लिये खून अथवा माँस की माँग पेश करता है, तो आप को केवल मनुष्य का ही माँस अथवा खून का इन्तजाम करना ही पड़ता है । जो सीधा आप की रगों में तकसीम कर दिया जाता है तुरन्त । उस वक्त इस का कोई जुर्माना नहीं रहता, क्योंकि मनुष्य का जन्म कीमती है यह एक कर्म तथा भोगी जून है । इसमें ही केवल उस आत्मा का निजी फैसला होना सम्भव है मुक्त होने का सदा के लिये इस जेलखाने से ! इसे सुरक्षित रखने के लिये फिर और निकृष्ट भोगी जूनों पर ध्यान नहीं किया जाता । कहीं-2 विशेष स्थिति में अगर कुछ जुर्माना रहता भी है, तो

बहुत नगण्य । जुर्माना आत्मा के शरीरों की समर्था के अनुसार ही लगाया जाता है । एक-दो-तीन-चार तथा पाँच तत्वों की इन शरीरों की रचना ही दण्ड को निर्धारित करती है । आप जीवित रहने के लिये वनस्पति का केवल उपभोग करते हैं तो उस का दण्ड बहुत कम रहता है पर रहता अवश्य है निश्चित रूप से । क्योंकि ये सब एक जेलखाने से अधिक कुछ भी नहीं है । इनमें आत्मायें कैद हैं, ये पिंजरा उनका अपना रहने का सुरक्षित घर है । आपको उन्हें बेघर करने का कोई अधिकार ही नहीं है अर्थात आप इस सृष्टि में बिना उसका "हनन" किये कभी सुपने में भी स्थिर होने की कल्पना ही नहीं कर सकते । आत्मा केवल आत्मा को खा करके ही केवल जिन्दा रहने का सपना संजोये रख सकती है । अन्न-जल-वायु इत्यादि में केवल आत्मायें ही सूक्ष्म अदृश्य छुद्र शरीरों में कैद हैं । वनस्पति में केवल एक तत्व "जल" की ही प्रधानता रहती है । इस रचना के शेष चार तत्व सूक्ष्म-सुप्त अथवा गुप्त अवस्था में ही उसमें रहती हैं । इसीलिये इसका जुर्माना मिसाल के तौर पर एक रूपया मान कर चलो । इससे ऊपर दो तत्वों की प्रधानता वाले प्राणी आते हैं। जैसे कीड़े-मकोड़े । इनमें अग्नि और पृथ्वी तत्व की प्रधानता रहती है, शेष तीन तत्व गुप्त-सुप्त अथवा सूक्ष्म रूप में रहते ही हैं । इनके हनन का दण्ड दो रूपए मान कर चलो । इसके ऊपर तीन तत्वों के प्राणी आते हैं जिनमें अग्नि-जल-पृथ्वी की प्रधानता तथा शेष दो

तत्व सुप्त-गुप्त अथवा सूक्ष्म रहते हैं । इनमें थोड़ा बहुत कम-ज्यादा करके जलचर तथा उड़ने वाले परिन्दें इत्यादि आ जाते हैं । इनके हनन का दण्ड तीन रूपए मान कर चलो । इन से ऊपर चार तत्वों के प्राणी आते हैं। इनमें केवल आकाश तत्व ही सुप्त-गुप्त अथवा सूक्ष्म रूप से होता है शेष चारों तत्वों की प्रधानता रहती है । इनमें सभी प्रकार के जानवर इत्यादि आ जाते हैं । इनके हनन का दण्ड चार रूपए मानकर चलो । इन से ऊपर चार तत्वों की प्रधानता वाला सूक्ष्म "केवल प्राणमयी शरीर" दैवी जूनों में प्रत्यक्ष रहता है इनमें केवल पृथ्वी तत्व का अभाव अथवा सूक्ष्म या गुप्त रूप में रहता ही है । प्राणमयी शरीर होने के कारण इसका हनन असंभव सा ही है । तथा पृथ्वी तत्व के सूक्ष्म होने के कारण इसकी समर्था आपके सुपने में भी विचार से अधिक प्रत्यक्ष रहती ही है । इसी कारण इसकी परछाई नहीं बनती ये धरातल का आधार नहीं माँगता इस पर किसी तरह की मैल नहीं चढ़ती अथवा प्रभावित करती पृथ्वी तत्व के अभाव के कारण ही इसमें से आत्मिक प्रकाश प्रत्यक्ष होता रहता है इसे किसी भी शस्त्र से नष्ट नहीं किया जा सकता यह पारदर्शी होता है इसमें पलक नहीं झपकती यह केवल ख्याल से एक स्थान से दूसरे स्थान तक आत्मा को पहुँचाने में समर्थ रहता है । यह कुछ मुख्य सुविधायें जीव की कमाई के अनुसार थोड़ी या अधिक रहती ही हैं इस प्राणमयी दैवी शरीर में । जैसे देव लोक में तो बहुत सी आत्मायें

दिव्य सुखों को अपनी-2 कमाई के अनुसार भोगती हैं । पर सब की सुविधा कुछ आधार भूत साधनों को छोड़ कर "बहुत बड़ा फर्क" रखती ही हैं । यहाँ के अपने राजा से मजदूर तक की मिसाल तकसीम कर लो साधनों सहित । एक राजा इन्द्र की कुर्सी अथवा सिंहासन पर जो आत्मा आसीन होती है और उसे जो राज-सुविधा अथवा साधन उपलब्ध होते हैं उसे कोई दूसरी आत्मा कैसे सुपने में भी प्राप्त करने में समर्थ हो सकती है ? इसीलिये यहाँ "ईर्ष्या" नाम की महामारी दिन-रात निरन्तर सभी आत्माओं को ईर्ष्या की आग में जलने पर मजबूर किये ही रहती हैं । दूसरा ये डर निरन्तर भूत की तरह पीछे लगा डराता ही रहता है कि पता नहीं कब कमाई खत्म हो जायेगी और ये सब उपलब्ध झूठे सुख का नकली दिखावा पेश करने वाले सारे समस्त साधन शरीर सहित वापस ले लिये जायेगें, इसका भोगी आत्मा को कुछ भी ज्ञान ही नहीं रहता । इसी डर के कारण वो इन भोगों को ढंग से भोग भी नहीं पाती । इसी चिन्ता में घंटी बज जाती है, उसके पुण्यों के खत्म हो जाने की और उसे फिर से इस अवस्था को प्राप्त करने के लिये फिर से मनुष्य जन्म का इन्तजार तथा कमाई करनी ही पड़ती है । इसके अभाव में उसे सूक्ष्म निकृष्ट जूनों को रोशन के लिये मजबूर होना ही पड़ता है । हम सब के साथ ऐसा अनन्त काल से अनन्त बार हो चुका अथवा हो रहा है । यानी के इस भवसागर में जीव बार-2 ऊपर नीचे गोते लगाता

ही रहता है, पर इससे मुक्त नहीं हो पाता । "बुद्धि" शैतानी ताकतों द्वारा मोहित रहती है जब मानुख जन्म का दुर्लभ मौका मिलता है तो उसे उल्टे धन्धों में खर्च करवा कर ये "शैतानी ताकतें" चालाकी से फिर से इस कैद खाने का बन्दी बना ही लेती है ।

दैवी जूनों में सब से नीचे भूत-प्रेत-फिर राक्षस-फिर दानव-फिर किन्नर-फिर गंधर्व-फिर यक्ष तथा फिर सबसे ऊपर देव आते हैं । इनके बारे में तफ्तीश से ब्यान कई ग्रन्थों को प्रत्यक्ष कर देगा । लगभग मिलता जुलता विधान ही मिसाल के तौर पर आपके ये मृत लोक प्रत्यक्ष हैं । शेष जब आप इस कब्र से ऊपर उठोगे तो सब कुछ प्रत्यक्ष अनुभव करने लगोगे कि सब कुछ एक "भयानक" अंधेरे कैदखाने के और कुछ भी नहीं है । "देव लोक" नाम के कैद खाने में केवल देव श्रेणी के पिंजरे में कैद आत्माओं की गिनती "तेंतीस लाख" है । अब सोचो किस-2 को कब तक और कैसे प्रसन्न अथवा संतुष्ट कर लोगे । अंधे को जैसे मर्जी चपत लगा लो क्या फर्क पड़ता है ? यकीनी तौर से समझ लो इन की पूजा से केवल यही सम्पति आप को प्राप्त हो रही है निरन्तर । जिनको तू पूज रहा है उन में ज्यादातर सब से निचली दैवी जून भूत-प्रेत श्रेणी के शरीरों में फँसी तड़पने वाली अपराधी जगत की बहुत मैली वृति की आत्मायें हैं । तेरे अन्धेपन का फायदा ये स्वंय को "देव" बता कर तेरा मानुख जन्म अपने खाते

में तकसीम करवाती जा रही हैं । इनकी पूजा तुझे निश्चित रूप से इन्हीं की ही श्रेणी अथवा जूनों में एड़ियाँ रगड़ने पर मजबूर कर ही देंगी शैतानी ताकतें । इसी तरह जो कब्रों को पूजने में लगे हैं उन में भी लगभग इसी श्रेणी की निकृष्ट शरीरों में फँसी आत्मायें आपके अन्धे बहरें पन का लाभ उठा कर आप का जन्म अपने खाते में लिख रही हैं । इनका मोह-अथवा वासना आपको भी इन्हीं कब्रों को रोशन करने को अवश्य मजबूर कर ही देंगी "शैतानी ताकतें ।" ये इनका केवल एक कैद करने का आत्मा को जेलखाना मात्र ही है । "भ्रम-भूले-अगिआनी-अंधले भ्रम-भ्रम फूल तौरावे । निरजीउ पूजह - मड़ा (कब्र) सरवेह - सभ बिरथी घाल गवावे ।"

अमेरिका इतिहास में एक मिसाल है प्लेन क्रैश होने की, जब दो-तीन महीने बाद पता चला तो उस प्लेन के कुछ यात्री जिन्दा थे । कैसे, बिना भोजन के ? तो पहले तो बात छुपी रही फिर बाद में प्रत्यक्ष हुआ कि उसमें जो यात्री मर गये थे, शेष जिन्दा यात्रियों ने केवल अपने जीवन को सुरक्षित अथवा कायम रखने के लिये अपने सहयात्री, जो दम तोड़ चुके थे उनके मुर्दा शरीरों का भक्षण करके ही केवल अपने प्राणों को सुरिक्षत रखा । अब आप ने केवल आप ने ही अपने स्वंय का फैसला केवल अपने ही हाथ से लिखना है कि आपको कितना जुर्माना देना स्वीकार है । एक रूपया या दो या तीन अथवा चार-कि पाँच । यानी कि

आप पाँच तत्वों की प्रधानता वाले "दुर्लभ मानुख शरीर" को तो प्राप्त कर ही चुकें हैं और इसे अब खर्च किस पर किस तरह से करना है, ये फैसला केवल आप पर ही निर्भर करता है कि आप कितना जुर्माना देकर के इसे कायम अथवा स्थिर रखते हैं । दिन में "रोजा" (उपवास) रहते हैं रात हनत है "गाय ।" ये ही खून वो बन्दगी-क्यों कर खुशी खुदाय" ? इस वाक्य में फकीर का भाव जीव की चालाकियों की तरफ है कि कैसे वह दिन भर, ज़िन्दगी पूरी में केवल अपनी जुबान के स्वाद को पूरा करने के लिये उस "माँ" अर्थात "गाय" की गर्दन पर छुरी फेरता है, जिसके स्तनों का सफेद खून रूपी दूध पी कर के पट्ठा जवान होता है अथवा अपने इस दुर्लभ मानुख जन्म को केवल स्थिर रखने में समर्थ होता है और दुनिया की आँखों में मिट्टी झोंकता है अर्थात रोजा (उपवास) तथा नमाज (परमात्मा को याद करने का केवल एक ढंग मात्र) पढ़ने का झूठा पाखण्ड अथवा दिखावा पेश करता है । भूल जाता है कि कोई भूत की तरह से हर जर्रे में निरन्तर एक "महामारी" के रूप में व्याप्त है । तेरे रोम-2 में उस की सत्ता भरपूर समायी हुई है भला कैसे तू उसको धोखा देने में समर्थ हो सकेगा ? ज़रा सोच तो सही ! कोई चालाकी से तेरे साथ निरन्तर धोखा करता चला जा रहा है और तू दुनिया की गर्दन पर "छुरी फेरने" में ही लगा केवल निरन्तर अपने लिये "घोर नरक" तथा निकृष्ट भोगी जूनें निश्चित करता चला जा रहा है अन्जाने में ।

केवल जुबान के स्वाद हेतू अपनाई गई तेरी इस क्रिया से जरा तू सोच इससे "परमात्मा" की प्रसन्नता कैसे कभी भी किसी युग काल में भी तुझे प्राप्त हो सकेगी ? अर्थात कभी भूले से भी नहीं हो सकेगी और तू इस बात से अनभिज्ञ केवल "नाचने कूदने" में ही अपने दुर्लभ मानुख जन्म को निरन्तर बर्बाद करता चला जा रहा है । कोई तेरी इस "अज्ञानता" का निरन्तर फायदा उठा रहा है । कुछ समय पहले जो कसाई के कटघरे में केवल एक "मुर्दा" अथवा लाश कहलाती है, ताज्जुब है कि कुछ समय बाद ही वह "लाश" जहर से भरी केवल, जिसमें से निरन्तर दुर्गन्ध उठनी ही केवल संभव मात्र उपलब्धि है, नहा धोकर सुगंधी लगा कर ठंडे वातावरण में "खोज" कर के बैठती है भोजन बन करके और इंतजार करती है तो केवल आप के कुल-परिवार का नाश करने के लिये ! ऐसी "मुर्दा लाश" रूपी बनी बैठी सुन्दर तथा मीठी (झूठे स्वाद से भरी केवल "जहर" रूपी मिठास) "दुल्हन" से सदा अथवा निरन्तर सावधान रहना ही तेरे लिये श्रेयकर है निश्चित रूप से तू इसे गाँठ बाँध ले । जैसे ही "जानवर" विशेष को उस स्थान पर ले जाया जाता है, तो वहाँ के वातावरण का प्रभाव उस जानवर पर निरन्तर पड़ने लगता है और वह उस वातावरण के अनुरूप अपना प्रतिफल निरन्तर उगलने लगता है । निरन्तर अंदरूनी तथा बाहरी रूप में । जानवरों में कैद आत्मायें दुख तथा दर्द से निरन्तर चिल्लाती हैं तथा अपने बचने की दुहाई देती हैं । क्योंकि सभी

को अपना ये प्यारा सा "कैदखाना" बहुत मीठा सा लगता है, कोई भी अपने को इस घर से बेघर होना सुपने में भी पसन्द ही नहीं करता । आप एक कीड़े को ही गन्दी नाली में से तिनके से उठाकर के साफ जगह पर रख कर के ही देख लो, वो तड़फेगा इस साफ जगह पर और फिर धीरे-2 रेंगता हुआ उसी गन्दी नाली में पहुँच करके ही केवल शांत होगा और आपको देख करके फिर गंद में ही अपना मुँह छुपा लेगा कि कहीं आप उसे फिर से उसके अपने ही "कमाये" हुए सुख अथवा स्वर्ग से अलग ही न कर दें । उसका बैकुंठ केवल वही गंदी नाली तथा गंद ही है । इतिहास में भी एक मिसाल विचारणीय है, आखिरी समय जब भगवान कृष्ण जी इस मुल्क से अपनी लीला समेटने लगे तो उनका प्यारा सखा अथवा शिष्य "ऊद्धव" जिसे भगवन अपनी "आत्मा" ही कहा करते थे कहने लगा कि हे भगवन आप सभी को अपने साथ अपने बैकुंठ ही क्यों नहीं ले चलते ? तो भगवन कहने लगे कि भाई मैं तो ले जाना ही चाहता हूँ, पर कोई जाना ही नहीं चाहता तो भला मैं क्या कर सकता हूँ । ये बात "ऊद्धव" को हजम नहीं हुई । जब सखा नहीं माना तो कहने लगे भगवन, अच्छा चल जिसे तूं कहे मैं उसे ही ले चलता हूँ, तूं खुद ही देख लियो ! अब ऊधौ ने विचार कर सोचा कि भगवन झूठ तो कहते नहीं फिर ये कैसे संभव है, चलो आज इसे भी प्रत्यक्ष अनुभव कर ही लेते हैं । अतः उसने सोचा कि इस वक्त सृष्टि में सबसे निकृष्ट योनी जानवरों में सुअर

की ही है जो खाने में गंद तथा रहने को कीचड़ में ही केवल पड़ा रहता है तो चलो उसे ही भगवन के सामने पेश कर देते हैं ! अपने आप साबित हो जायेगा कि भगवन चालाकी करते हैं या सच कहते हैं । भला कौन इस "भयानक नर्क" से छूटना नहीं चाहेगा । तो वह भगवन को लेकर सुअर के पास पहुँचे । अब वहाँ पहुँच कर भगवन का मुँह देखने लगे भला सुअर से कैसे बात करें । इसे जान भगवन ने अपनी "दिव्य ताकत" उस निकृष्ट योनी में कैद आत्मा को दी और सखा को इशारा किया कि अब बात करें । अब सखा ने उस सुअर में कैद आत्मा को कहा कि चलो भाई बैकुंठ, हम तुझे वहाँ ले जाने के लिये आये हैं । पहले तो उसने कुछ जवाब ही नहीं दिया फिर काफी देर बाद उस सुअर ने कहा कि भाई क्यों आप मेरी "शान्ति" में दखल दे रहे हो । मुझे किसी बैकुंठ में नही जाना है, जब सखा जिद करने लगे तो उसने कहा कि ये बैकुंठ क्या बला है भाई जरा बताओ तो सही ? तथा "ऊधो" स्वर्गों वैकुंठों को ब्यान करने लगे । काफी देर तक सुनने के बाद बोर होकर के कहने लगे "सुअर महाराज जी" कि भाई सीधा सा बताओ कि वहाँ मैं रहूँगा कहाँ । क्या कीचड़ है वहाँ मेरे रहने के लिये ? तो परेशान ऊधौ ब्यान करने लगे कि वहाँ कैसे-2 साधन हैं दिव्य सामग्रियों से सम्पन्न रहने के लिये । तो अनमना सा हो करके करवटें बदलता रहा परेशान सा, और फिर बीच में रोक करके बोला कि अच्छा ये बताओ कि मैं वहाँ खाँऊगा क्या ? कहीं

मुझे वहाँ भूखा तो नहीं रहना पड़ेगा ? अब ऊधौ दिव्य भोगों को ब्यान करने लगे कि वहाँ खाने को क्या-2 उपलब्ध है ! अब तो हद ही हो गई उसने जोर से डांट कर पूछा कि भाई स्पष्ट बताओ क्या मुझे खाने को वहाँ गंद मिलेगा कि नहीं, सीधी तरह से बताओ अपना भाषण अधिक मत झाड़ो मुझे और नहीं सुनना तुम्हारा ये फीका सा भाषण । अब ऊधौ की हालत बिगड़ने लगी कि भला बैकुंठों में गन्द कहाँ से आयेगा ? तो लाल-पीला हो करके बहुत क्रोध में "सुअर भगवान" जी ने जोर से कहा कि मुझे नहीं रहना ऐसे निकृष्ट घोर नर्क नाम के बैकुंठ में, जहाँ न तो मेरे रहने के लिये कीचड़ ही उपलब्ध है और न खाने के लिये कुछ गंद ही है । भाई क्यों तुम दोनों मुझे मेरे उपलब्ध इस स्वर्ग से दूर ही करना चाहते हो, भला क्यों तुम्हें मेरी इस महान उपलब्धी से ईर्ष्या हो रही है भाई । मैनें तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम मुझे बेघर कर भूखा मारने पर तुले हुऐ हो तुम दोनों । मुझे तो रहने को कीचड़ और खाने को केवल ये गन्द ही चाहिये भाई । अब तुम दोनों जल्दी ही यहाँ से दूर हो जाओ पहले ही तुम ने काफी मेरी शान्ति भंग कर दी है । ऊधौ की हालत अब देखने योग्य थी, मुँह से झाग और शरीर से पसीने छूटने लगे । भगवन की ओर देखने का भी ऊधौ का साहस नहीं हुआ । भगवन मंद-2 मुस्कुरा रहे थे । सहारा देने के लिये कहने लगे कि भाई मैनें तो तुझे पहले ही कहा था कि मैं तो ले जाना चाहता ही हूँ पर कोई मेरे साथ जाना ही चाहे

तब न । हे ऊधौ सुन मैंने रचना ही ऐसी रची है कि प्रत्येक आत्मा अपनी उपलब्धी में ही रहना केवल पसन्द करती है विशेष तौर पर सभी योनियाँ जो बुद्धि से रहित होती हैं । उन्हें अपने इन्हीं निकृष्ट शरीरों में रहने में ही आनन्द मिलता है । तथा यही दूषित वातावरण ही इनका सुगन्ध अथवा बैकुंठ मात्र है । इनसे दूर होना इन्हें कदापि पसन्द ही नहीं है । इससे अलग होना ही केवल इन का नर्क है । यदि ऐसी वृति मैं इनको न दूँ तो सोच भला ये सब सृष्टि कैसे चलेगी अगर सभी बैकुंठ माँगने लगें तो कैसे होगा ये रंग-तमाशा ! भगवन के इन वचनों से ऊधौ को कुछ सहारा मिला फिर अपने को नियंत्रण में रख कर धीरे से कहने लगा कि भगवन आप सदा सच ही फरमाते हैं भला झूठ से आप का क्या सम्बन्ध, मैं ही मूर्ख हूँ जो आप की महिमा को ज़िन्दगी भर साथ रहने के बावजूद न जान सका ! अतः कृप्या आप मुझे ही अपने संग ले चलिये मैं तो आप के दर्शनों के अभाव में अन्न-जल भी ग्रहण करने में असमर्थ हूँ भला आप के वियोग में मैं जिन्दा ही कैसे रह सकूँगा ! तब भगवन ने फरमाया कि हे ऊधौ अगर मेरे संग रहना चाहता है तो तुझे "योग" कमाना ही होगा । बिना इस कमाई के कोई भी प्राणी मेरी संगत करने में सदा असमर्थ ही है । ये तो तेरे ऊपर मेरी विशेष कृपा थी जो तूं जिन्दगी भर मेरे संग का लाभ कमाता रहा । बिना मेरे विशेष ज्ञान के कोई सुपने में भी मेरा दर्शन करने में असमर्थ ही है । अतः तू अब धरती पर ही रह कर

के "योग" को "कमा" और अपने इस दुर्लभ मानव शरीर को सफल बना । तभी तू मेरी विशेष दया से बैकुंठों में रहने के योग्य बन सकेगा । तब भगवन ने अपने प्यारे सखा ऊधौ को विशेष "योग की दीक्षा" दी तथा बिदर के लिये भी सदेश भेजा और अपनी समस्त ताकत को समेट कर के उस "ए क्लास" के "पिंजरे" को रोशन करने के लिये बैकुंठों की ओर प्रस्थान कर दिया ! इसी तरह कोई भी जानवर अथवा प्राणी बेघर होना कतई पसन्द नहीं करता जैसे "आप" (स्वंय भी) कोई यदि आप को बेघर करना चाहे तो आप भी उसका विरोध करते ही हैं अपनी पूरी ताकत से जब तक कि आप में समर्था है । इसी तरह अथवा वह जानवर अथवा प्राणी भी बचने का पूरा भरसक प्रयास करता ही है अपनी समर्था अनुसार । अपने को न बचा सकने की हालत में उसके रोम-2 से जो पानी सा निकलने लगता है वो "केवल ज़हर" के सिवा और कुछ भी नहीं है । उसे आप अपनी खूबसूरत लैबोट्रियों में टेस्ट (प्रयोग) कर के देख सकते हो । आप के प्रयोग साबित कर चुके हैं कि केवल साधारण से क्रोध करने पर ही केवल आप की अन्दरूनी ग्रन्थियाँ जो द्रव्य उत्पन्न करती हैं वो "केवल ज़हर" के और कुछ भी नहीं हैं तथा उस अवस्था में आप सभी को सावधान करते हैं कि आप को कदापि भोजन करना ही नहीं चाहिये क्योंकि वह निकला हुआ द्रव्य जो "केवल ज़हर" ही है आप के खाये हुए समस्त पौष्टिक आहार को भी केवल ज़हर

में बदल देने में हर काल अथवा अवस्था में सदा समर्थ ही साबित होगा केवल । फिर ऐसी घोर यातना से भरी मृत्यु से बचने के लिये प्रयन्नशील जानवर के अन्दर क्या अमृत के फुव्वारे फूटने लगेंगे विचारणीय प्रश्न है ? ऐसे भयानक "विश" से भरी उस लाश को खा कर के आप ज़िन्दा कैसे हैं यही ताज्जुब है ! यकीन जान लो बेशक आप का प्राण चल रहा है लेकिन आप "आत्मिक मौत" अवश्य मर ही चुके हैं । केवल अपना बोझा एक लाश बन करके बिना कुछ मजदूरी लिये ढो रहे हैं । अपने हाथ से केवल अपने लिये आप ने "घोर नरक" तथा निकृष्ट जूनें निश्चित रूप से लिख कर के अपने "गुप्त विदेशी एकाउन्टों" में जमा कर रखी है ये "गुप्त निधि ।" जो केवल आप आने वाली वह मुश्किल घड़ी में ही अवश्य "नकद" (कैश) करा कर आप के मुँह को उज्जवल (काला) करने के लिये मजबूर कर ही देगी ! ऐसी ही एक मिसाल सदना कसाई की इतिहास में दर्ज है । "सदना कसाई" एक बार आधी रात के समय राजा ने माँस मँगवाया । रसोईया अभाव की स्थिति में सदना कसाई के पास पहुँचा मास की याचना की । राजा की माँग जानकर के सदने ने सोचा कि यदि सारा बकरा काटा तो माँग थोड़ी होने के कारण शेष बचा हुआ सारा माँस कल तक तो खराब ही हो जायेगा । ऐसा करता हूँ कि इसकी एक ही टाँग काट करके दे देता हूँ, शेष बकरा कल इस्तेमाल कर लूँगा, इस होने वाले नुकसान से तो बच ही जाऊँगा । अगर इन्कार

करता हूँ तो राजा का कोप पता नहीं सिर ही कलम करवा दे । ऐसा सोचकर जैसे ही इसने छुरी लेकर बकरे की टाँग काटनी चाही, कि बकरे से आवाज आई ठहर सदना ! तेरा मेरा हिसाब बहुत पुराना है कभी तू बकरा मैं कसाई और कभी मैं बकरा और तू कसाई । इसका मुझे कोई गम नहीं । लेकिन तूने सोचा है कि इसका क्या नतीजा निकलेगा जो तू अब करने जा रहा है । जरा सोच जब तू मेरी एक टाँग काट देगा और मुझे दर्द से तड़पने के लिये तू कल तक के लिये जिन्दा रखेगा, तब दर्द से मेरा क्या हाल होगा ? जरा सोच तो सहीं ! तू केवल अपने लिये ये नई "भाजी" (भुगतान) बीज रहा है तुझे तो अवश्य अगली बार ऐसी ही स्थिति का सामना करने के लिये मजबूर होना ही पड़ेगा । ये आवाज सुनकर सदने के हाथ-पाँव फूलने लगे पसीना छूटने लगा, उस के अन्तर में ज्ञान प्रत्यक्ष होने लगा । बकरा बोले ऐसा तो उसने कभी देखा अथवा सुना ही न था । जरूर कुछ विशेष बात है । अगर माँस नहीं देता तो जरूर कल सुबह ही राजा अवश्य सिर धड़ से अलग करवा ही देगा । और अगर टाँग काटता हूँ तो बकरे की बात सच प्रतीत होती है, पूरा काटता हूँ तो नुकसान उठाना पड़ता है । सब तरफ से फँसा जान सदने ने यहाँ से "खिसक" जाने में ही अपनी भलाई समझ कर पीछे के रास्ते से निकल जंगलों की राह अपनाई, रात भर दौड़ता ही रहा उस राज्य की सीमा से दूर होने के लिये । आखिर उसी जन्म में अपना "शेष

हिसाब" दोनों हाथ अपने "कलम" करवा कर के चुकाया और उस "एक" की भक्ति में ही शेष जीवन को बिता करके अपना निपटारा "किसी" से करवाया ! इस से निश्चित होता है कि अनन्त काल बाद भी आप को केवल अपने किये हुऐ का भुगतान देने के लिए विवश होना ही पड़ेगा अर्थात अनन्त कल्पों के बाद भी जब आप "घोर विशेष-2 पार्को" की सैर कर के "दुर्लभ मानव योनी" में आने से पहले इन्हीं निकृष्ट योनियों को रोशन करोगे, तब अवश्य यकीनी तौर पर कोई आप की गर्दन पर भी अवश्य छुरी चलायेगा ही निश्चित रूप से । और वह छुरी चलाने वाला आप की इस प्यारी-2 सुराईदार गर्दन पर उस "निरीह प्राणी" के सिवा और कोई भी नहीं हो सकता । और आप को गर्म-2 उबलते हुऐ अपने ही खून से केवल नहाना ही नहीं पड़ेगा बल्कि फड़फड़ा कर के तड़पने पर भी मजबूर होना पड़ेगा ही । "परमात्मा" के इस निश्चित न्याय को कोई सुपने में भी बदलने में सदा हर काल में असमर्थ ही साबित होगा अवश्य रूप से इसे गाँठ बाँध लो अभी से ही । अब इन विद्वानों (महामूर्ख श्रेणी के) की भी सोच, जो इन निरीह प्राणियों के खून से होली खेलने में आँखों पर भ्रम रूपी "स्वाद" नाम की पट्टी बाँधे निरन्तर अपनी हस्ती मिटाने में ही केवल अपने को श्रेष्ठ साबित करने में लगे हुऐ हैं । इन निरीह प्राणियों के खून से अपने पेट को भरने, दीवारों को रंगने में ही समस्त कुल परिवार तथा संबधियों को निरन्तर इस "अंधे भयावले" कुँऐं में डुबोने में

ही केवल अपने को उत्कृष्ट विद्वान स्थापित करते हुऐ नाचने कूदने तथा "ईद" मनाने में व्यस्त हैं । अपनी सर्वस्व हस्ती केवल उस "एक" पर न्यौछावर कर उसे केवल प्रत्यक्ष करना ही "ईद" है या दुनिया की गर्दन अथवा जेब पर छुरी फेरना और केवल रोजा (उपवास) रख कर नमाज पढ़ कर "पत्थर के टुकड़े" "चाँद" को देख कर ही नाचना कूदना "ईद" है । इन बेचारे विद्वानों का क्या होगा जो इस चाँद (पत्थर के टुकड़े) को देख समझते हैं कि परमात्मा के ही दर्शन हो गये । इन प्यारे-2 गुरू भक्तों का क्या होगा जो इस चाँद (पत्थर के टुकड़े) में अपने प्यारे से परमात्मा "नानक" को कैद कर के बैठे हैं । जरा उन प्यारी-2 गर्म-2 सांसों वाली लाल-2 कपड़ों (कफनों) में सजी जिन्दा मुर्दो जैसी चलती-फिरती इन "दुल्हनों" का भी सोचो जो दिन भर तरह-2 के स्वादों का भोग लगाती फिरती हैं और दुनिया को बताती हैं कि आज मेरा उपवास (व्रत) है । शाम को टेड़ी आँखों से (भैंग मार कर) अर्थात छानने सें इस चाँद (पत्थर के टुकड़े) को देखती हैं और फिर नाचती-कूदती हैं गाने-गाती फिरती हैं कि हमने अपने इन प्यारे-2 रस से भरे खस्मों (मुर्दो) की उम्र लम्बी कर ली है । कोई बेचारा इनको इस प्यारे "कब्रिस्तान" (मृत लोक के) में बनी "शमशान भूमि" में ले जाकर के ब्रत रखने वाली, आज के रोज ही वे बना दी गई विधवाओं से जरा सी भेंट करवा दें, तो शायद ये मुर्दे अर्थात प्यारी-2 सी लाल दुल्हनें कुछ जाग्रत

हो सकें । क्या इन बेचारी विधवाओं को विभिन्न रस से भरे ब्रतों (उपवासों) का रखना ठीक-2 समझ नहीं आया था ? कि बेचारी आज के ही दिन ब्रत (उपवास) रखने के बावजूद विधवा श्रेणी में "धकेल" दी गई । सृष्टि कर्म पर आधारित है । आप के इन पाखण्डों से कोई किसी का तो दूर अपना भी केवल एक प्राण भी अधिक अथवा कम करने में भी कभी भी किसी भी काल में सुपने में भी सदा असमर्थ ही साबित हो सकेगा ऐसा आप निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । ताज्जुब है कि एक मुर्दा दूसरे डूबे हुए मुर्दे को ही केवल जीवन दान करने में ही अपने को श्रेष्ठ स्थापित करने में लगा हुआ है । ऐसी बिना अर्थ तथा उपवादों (अथवा अपराधों) से भरी जिन्दगी जीने पर आप को बहुत बड़ा जुर्माना देने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा निश्चित रूप से जान लो ! आप को केवल कुछ करने से पहले ही छूट है केवल बीजने की । फसल तो केवल वही कट कर के आप के घर आयेगी जो आप ने बोई थी । ऐसा कदापि न हो अथवा कर सकोगे कि बीजोगे तो आक-धतूरे और घर पर आप को "शाही आमों" के टोकरे उपलब्ध करा दिये जायेंगें । ऐसा कभी सुपने में भी संभव न हो सकेगा अथवा करने में समर्थ हो सकोगे करोड़ यत्न कर लेने के बावजूद भी ! वहीं सामने प्रत्यक्ष होगा जो कभी न कभी आपने स्वंय ही बोया था ! केवल कदंमूल पर ही निर्भर रहने में अपना निश्चित कल्याण मत समझियेगा । कहीं आप सोचें कि आप केवल माँस-शराब से

परहेज करके ही इस जेलखाने से छूट जाओगे तो आप बहुत बड़े भ्रम में सदा के लिये अवश्य डूब चुके हो केवल ! बेशक कुछ जुर्माने से आप अवश्य बच गये हो । लेकिन जब आप किसी दूसरी आत्मा को तड़पाते हो अनजाने में भी अथवा उसके "अधिकार" को दबा अथवा रोक लेते हो और शुद्ध "शाक" में मिलाकर के जब आप अपने कुल-परिवार तथा सम्बन्धियों सहित फाइव स्टार होटलों अथवा डाईनिंग टेबलों पर जुगाली करते हो तो निश्चित रूप से आप केवल इन्सान के खून अथवा माँस का ही केवल भोग लगाते हो । बकरी पाती (शाक) खा कर के यदि आपके न्याय में अपनी खाल उतरवाने पर मजबूर कर दी जाती है, तो बकरी के इस सवाल का आप के पास क्या जवाब है, कि यदि तेरे दरबार में मेरे लिये केवल यह प्रतिफल है सृष्टि के इस हनन का, तो जो तू अपनी ही श्रेणी के अर्थात मानव का ही माँस खा तथा खून पीकर के तू कैसे अपने को उस "एक" की अदालत में निरपराध साबित कर पाने में समर्थ हो सकेगा । अर्थात ऐसा तू सुपने में भी न कर पायेगा ! जिसका तूने अधिकार हजम किया है । उस साधन से वो दूसरा अपने घर "राशन" (भोजन सामग्री) ले करके जाता और सभी परिवार जन उसका भोग लगाते । जिससे उन का जीवन स्थिर होता अर्थात उन सभी परिवार जनों का उस खाये गये भोजन से खून तथा माँस ही बनता । पर वो बेचारा ऐसा कर ही न सका क्योंकि उसके ऐसा करने से बहुत

पहले ही तूने अपने स्वार्थ अथवा लोभ में डूबी छुरी उसके अरमानों से भरी प्यारी सी गर्दन (अथवा गुप्त जेब) पर चला दी और संसार में अपने को श्रेष्ठ साबित कर बहुत "मोटी तथा भारी" विशेष आसमानी ताकतों (केवल शैतानी ताकतों) से भारी लबालब गद्दी पर आसीन हो गया उसे सुशोभित करते हुऐ दुनिया की आँखों में मिट्टी डालने लगा। भूलता है कि तुझे "विद ईन्ट्रेस्ट" ये सब दूसरे के "अधिकार" जिन का "वर्क" लगा कर के तू इन गद्दों को रोशन कर रहा है अवश्य अनन्त "कल्पों" के बाद भी तुझे निश्चित रूप से उनके ये तेरे द्वारा हजम किये हुऐ अधिकार देनें ही पड़ेगें निश्चित रूप से। दुनिया के इतिहास में "इतना बड़ा हाजमा" आज तक किसी ताकत में प्रत्यक्ष नहीं हो सका, कि वो किसी का तो क्या कहना है मिट्टी का एक छुद्र सा कण भी शैतानी ताकतों के इन तीनों मुल्कों की समस्त ताकतें विशेष रूप से तेरी हस्ती सहित कभी भी किसी भी काल में तेरे सहित विशेष रूप से अनन्त प्रयत्नों के भी बावजूद कभी भी सुपने में भी हजम करने में समर्थ न हो सकेंगे, ऐसा तू निश्चित रूप से जान ले। क्योंकि उस छुद्र से मिट्टी के कण में भी केवल उसकी सत्ता अथवा नूर भरपूर अर्थात लबालब भरा है निरन्तर। उस "एक" के सिवाय इस सृष्टि में और कुछ भी कभी भी कल्पना में भी सम्भव ही नहीं है। अतः निश्चित रूप से जान ले कि तेरा इतना बड़ा हाजमा कभी सुपने में भी न हो सकेगा कि तू किसी के अधिकार को दबा अथवा हजम करने

में समर्थ हो सके । तू जितना जिसका अधिकार दबायेगा उतना ही उसकी सत्ता को खोता चला जायेगा अथवा दूर कर दिया जायेगा । उसकी विरासत में मिली दया का कितना "घोर जुर्माना" तू अपने हाथ से अपने खाते में लिख चुका है, इसका तुझे सुपने में भी भान ही नहीं है । केवल दया से मिली सत्ता अथवा हस्ती का निरन्तर केवल अपने लोभ अथवा स्वार्थ की पूर्ति के हेतू किया गया "दुरूपयोग" ही इसका मुख्य कारण है । इस मृत लोक में कभी भी किसी भी काल में कुछ भी स्थिर ही नहीं है सुपने में भी । और तू अपनी सत्ता को कायम रखना चाहता है वो भी दूसरे दुर्लभ मानुख शरीरों को कुचल करके । ये तेरा सुपना केवल "रेत का महल" ही साबित होगा । जो किसी को तो क्या तुझे भी कभी भी सुपने में भी सुरक्षित रखने में सदा के लिये असमर्थ ही साबित होगा । इन बेचारे तेरे अनुयाईयों का क्या होगा ? ऐसे "अधूरे इन्चार्ज" अर्थात मत-धर्म-मुल्कों के ठेकेदार "तुझे" अपने अनुयाईयों सहित इन "घोर पापों" में अवश्य गले मिल कर तेरा स्वागत करने को बेताबी से इंतजार कर रहे हैं । केवल यही नतीजा निश्चित रूप से निकलता है इन्सानी खून अथवा माँस पर जुगाली करने का ! "जे रत लगे कपड़े जामा होई पलीत । जो रत पीवे माणसा तिन को निरमल चीत । नानक नाम खुदाई का दिल हच्छे मुख लेह । अवर दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेह ।" तेरे समस्त दावे अपने आप ही झूठे साबित हो जायेगें उन "शैतानी ताकतों"

के दरबार में ये इन्सान का माँस तथा खून जिसे तू हजम किये खामोश बैठा है, रंगरलियाँ मनाने में व्यस्त है अवश्य तेरी समस्त कारस्तानियों को ब्यान करने में अवश्य निश्चित रूप से साधन साबित होगा । तब तुझे अपने हाजमें पर केवल शक ही नहीं होगा तुझे विद इंटरेस्ट समस्त अधिकार उगलने पर अवश्य ही मजबूर कर दिया जायेगा इसे तू निश्चित रूप से "प्रभु का न्याय" समझ ले । भुगतने के लिये केवल अब तुझे तैयार रहना ही चाहिये । जिस तरह से खून इत्यादि वस्त्रों पर लग जाने से पहनावा मैला हो जाता है न उसी तरह से आत्मा को मिला ये "दुर्लभ मानुख जन्म रूपी" पहनावा भी किसी भी प्राणी को मिले अधिकार को दबाने अथवा हज्म करने से ये कीमती जन्म अथवा पहनावा भी अवश्य मैला हो ही जाता है । किसी भी छुद्र से छुद्र प्राणी को मिले अधिकार में केवल दखल मात्र से ही तू इस कीमती पहनावे को ही केवल सदा के लिये खो ही न बैठेगा उल्टा इन घोर पापों की सैर करने के लिये अथवा एड़ियाँ रगड़ने के लिये अवश्य ही मजबूर कर ही दिया जायेगा । तू उसके "न्याय की लाठी" को नहीं देख पाता वो सदा सभी सिरों पर निरन्तर भूत की तरह "शैतानी ताकतों" के रूप में निरन्तर झूलती हुई तुझे केवल किसी की विशेष दया से मिली हुई हस्ती को निरन्तर हज्म करती ही चली जाती है । पता तुझे उस वक्त चलेगा जब तू सब कुछ सदा के लिये खो चुकेगा । "कूक पुकार को न सुने ओथे पकड़ा ओह

ढोईआ ।" तेरा रोना पीटना देखने सुनने वाला कोई भी तुझे सुपने में भी उस वक्त न मिल सकेगा । तू होगा और तेरी ये उत्कृष्ट कमाई होगी जो तुझे अवश्य विद इंटरेस्ट हज्म करनी ही पड़ेगी !

इतिहास में एक मिसाल आती है "अजे सु रोवे भिखिया खाई ऐसी दरगह मिले सजाई ।" राजा अज भगवान रामचन्द्र जी के पिता के भी पिता अर्थात बाबा यानी के दादा जी थे । उनका नियम था कि सूर्य के सिर तक पहुँचने अर्थात सुबह सूर्य उदय से लेकर दोपहर तक वे दरबार में इस तरह से विराजमान होते थे कि जो कोई भी कुछ भी माँगे वे दान कर देते थे । यहाँ तक कि अगर कोई भी उनसे उनका ताज-तखत अर्थात पूर्ण राज भी माँगे तो वे पूरा रोज दान कर देने के लिये हर वक्त तैयार ही रहते थे । एक बार राज दरबार से इस क्रिया अर्थात दान देने से निवृत हो कर के वे सीधे घुड़साल पहुँचे और वहाँ का प्रबन्ध मुआयना करने लगे । वो समय यातायात के साधन केवल जानवरों पर ही निर्भर रहने का दौर चल रहा था । ऋषि श्रेणी की ही केवल आत्मायें अपनी कमाई के बल पर आकाश मार्ग से गमन किया करती थीं । तप करने वालों को राज दरबार में आवागमन की पूरी इजाजत रहा करती थी । अभी वे देखभाल में ही व्यस्त थे कि एक ऋषि आये और "अलख" की आवाज बुलन्द की । राजन ने अगले रोज राज दरबार में आने का निमंत्रण दिया । ऐसा बार-2 दोहराने पर

ऋषि कहने लगे कि राजन हम तो साल में केवल एक ही बार आते हैं हमें केवल दो वस्त्र मात्र चाहिये, फिर हम दुबारा कभी इस कामनाओं के अथाह समुद्र में डूब रहे संसार में प्रवेश ही नहीं करते अर्थात केवल उस "एक" के ही ध्यान में केवल मग्न रहते हैं । राजन कहने लगे, कि हे ऋषि मेरा भी नियम है कि सूर्य उदय से सूर्य के सिर तक पहुँचने तक ही केवल मैं दान देता हूँ मुँह माँगा । कल आना अगर राज भी माँगोगे तो निश्चित रूप से जान लो कि मैं अवश्य ऐसा दान कर दूँगा । क्योंकि मैं ऐसा दान करने में इस समय समर्थ हूँ । ऋषि अपने नियम पर अड़े थे तो राजन अपने नियम पर । आखिर ऋषि कहने लगे कि राजन जो इच्छा हो वही दान कर दो । हम दुबारा आज के बाद असमर्थ हैं । शैतानी ताकतों ने बड़े सूक्ष्म रूप में अपना कार्य सिद्ध कर ही लिया । एक सूक्ष्म क्रोध की लहर राजन के अन्तर में उठी और राजन ने पास ही पड़ी "घोड़ों की लिद" हाथ में भरकर कमण्डल में डाल दी । ऋषि "काम" को जीत चुके सिद्ध पूर्ण ज्ञानी महात्मा श्रेणी की एक दुर्लभ आत्मा थी । वे जवाब में केवल मुस्कराये तथास्तु कहकर के कि राजन तेरा दान खूब फले । वहाँ से अपने निवास स्थान घोर जंगल को लौट गये जहाँ वे निरन्तर तप किया करते थे । इस "कीमती दान" को ऋषि ने रास्ते जंगल में ही उड़ेल दिया और अपने "कीमती कार्य" केवल उस एक के ध्यान में ही व्यस्त हो गये । राजन भी अपने "कीमती कार्य राज पालन" में

ही इतने व्यस्त हो गये कि उन्हें इस घटना का बिल्कुल भी ज्ञान न रहा कि ये मैं कैसा दान कर बैठा हूँ । उनकी नज़र में ये केवल एक मज़ाक जैसी ही घटना थी जिसे वे अपने व्यस्त रहने के कारण शीघ्र ही भुला बैठे । कुछ समय बाद वे एक बार अपने अभ्यास के हेतू जंगल में शिकार को गये । अब आप कहोगे कि क्या इस जीव हत्या का उन्हें कुछ भी फल नहीं भुगतना पड़ता, तो उसे भी ध्यान से विचारो । राजा का कार्य प्रजा की पालना अर्थात उन्हें सुरक्षा प्रदान करना है । जब दूसरा कोई उनके राज को खंडित करना चाहता है तो वो जानवर नहीं केवल मनुष्य ही होता है । अब मनुष्य नाम के शत्रु से अपनी प्रजा अथवा राज को सुरिक्षत रखने हेतू वो शस्त्र चलाने का अभ्यास किस पर करें । क्या अपनी ही प्रजा अथवा मनुष्यों पर कि घोर जंगलों में छिपे मानव जाति का हनन करने वाले खूंखार माँसाहारी जंगली जानवरों पर । आप स्वंय विचार कर फैसला करें, कि कौन सा कार्य श्रेयकर है ? ये कार्य "शिकार नाम" का केवल अपनी प्रजा अथवा मानव जाति की केवल सुरक्षा के लिये ही किया जाता था । तथा युद्ध में जो केवल अपनी अथवा दूसरे मानव की "सुरक्षा" में ही अपने प्राणों की आहुति देता है उसके इस प्रकार के समस्त अपराध माफ कर दिये जाते हैं और ऐसी आत्मा को जब आप की अदालत केवल शहीद का सरोपा देती है तो क्या प्रभु के न्याय में

भी कुछ कमी हो सकती है? सुपने में भी नहीं ! अर्थात ऐसी शहीद होने वाली आत्मा को स्वर्गों में बहुत लम्बी उम्र विशेष दिव्य साधनों सहित आवश्यक रूप में प्राप्त होती है निश्चित रूप से जान लो । और आप भी जो सब से बड़ा मैडल (उपाधि) देते हो वो युद्ध में शहीद होने वाली केवल एक ऐसी ही आत्मा होती है जिसने अधिक से अधिक शत्रुओं का हनन किया होता है अर्थात अधिक से अधिक बड़ी बेरहमी से केवल मानव शरीरों की ही हत्या की होती है । यहाँ तो आप उस शहीद की केवल सराहना ही करते हो । लेकिन जब कोई आत्मा केवल अपने निजी स्वार्थ हेतु किसी भी दूसरे प्राणी अथवा मानव का ही हनन अथवा हत्या करती है तो आप की ही कायम की हुई "अदालत" उस "हत्यारे" को फांसी तक की सजा अथवा उम्र भर की कैद यानी के काल कोठरी में सड़ने के लिये अवश्य विवश कर ही देती है अपनी मानव जाति की ही केवल सुरक्षा के हेतू । तो फिर इसी तरह से प्रभु की बनायी हुई इस सृष्टि का हनन करने के बदले में, जो केवल उसने अपनी जुबान के ही स्वाद की खातिर किया है, प्रभु के न्याय में कभी भी किसी भी काल में सुपने में भी कैसे हो सकती है । अर्थात उसके न्याय अनुसार अवश्य उस की बनाई हुई इस सृष्टि का हनन करने के एवज़ में आप को "घोर पार्कों" अथवा नरकों की सैर करने के लिये अवश्य आवश्यक रूप से विवश होना ही पड़ेगा ! क्योंकि प्रभु को भी ऐसा "संगीन हत्यारा" कभी भी कैसे पसंद हो

सकता है, जो उस की इस रचना का बेरहमी से हनन करे । अतः उन्हें अवश्य एक बार फिर से सोच लेना चाहिये, जो जानवर तो क्या मानव शरीरों को भी "बलि" देने से नहीं चूकते केवल अपने निजी लोभों को पूरा करने के लिये । जो सिवाय एक झूठे भ्रम के और कुछ भी नहीं है "शैतानी ताकतों" का । ऐसे निकृष्ट कर्म करवाती भी ये सूक्ष्म शैतानी ताकतें ही हैं और फिर हिसाब भी यही लेती हैं, कैद करके ताकी उनका ये "मृतलोक" तरह-2 के रंगीन मुर्दो (शरीरों) से अवश्य रोशन होता रहे । ताज्जुब है कि ये सब उस प्रभु परमात्मा के ही नाम पर किया जाता है । मिसाल के तौर पर केवल एक "बकरीद" को ही ले लो । पूरा साल उस बेचारे गरीब जानवर को जरूरत से ज्यादा खिलाया जाता है । लोभी तथा बुद्धि हीन प्राणी केवल जुबान के ही स्वाद हेतू दिन-रात चरता रहता है कुछ न कुछ जो कुछ भी उसे सामने प्राप्त हो जाता है । हालत यहाँ तक बिगड़ जाती है कि उसका चलना फिरना तक बंद हो जाता है । इतनी चर्बी उस पर चढ़ जाती है वह कहीं आना जाना तो दूर वहीं पड़े-2 हगता रहता है । उसे केवल उठाकर के ही आगे पीछे किया जा सकता है । उस बेचारे को क्या मालूम कि कुछ ही दिनों बाद उस पर कौन सी कयामत बरसने वाली है अर्थात शीघ्र ही वो मुश्किल की घड़ी उसके सिर पर आ ही खड़ी होती है । वो क्या जाने कि उसे क्यों नहलाया धुलाया अथवा सुगन्धियों से सजाया जा रहा है । शीघ्र ही उसका

ये अज्ञान अवश्य ही दूर कर दिया जाता है । आज जिस छुरी से काट-2 कर भोजन उसके आगे परोसा जाता था, उसी से उस बेचारे की गर्दन ही छील दी जाती है वो बेचारा कुछ समझ ही नहीं पाता कि आखिर आज उससे कौन सा अपराध साबित हो गया कि जिसके एवज (बदले) में उसे घोर यंत्रणा भुगतनी पड़ रही है । उसके तड़पने की तरफ आज किसी का कुछ ध्यान ही नहीं है, उल्टा सब सजने में ही लगे हुऐ हैं । आज धीरे-2 जैसे-2 उसके प्राण सिमटने लगते हैं उसे आज तक की उस पर की जाने वाली विशेष दया का अर्थ समझ में आने लगता है, और शरीर छोड़ने से पहले वो आत्मा केवल इसी संकल्प को दृढ़ रखकर ही उस शरीर से अलग होती है कि वो अपने इस भयानक दर्द (पीड़ा) का बदला अवश्य ही लेगी । और फिर से ये सिलसिला शुरू हो ही जाता है जैसा बकरे ने स्वंय ब्यान दिया है सदना नाम के कसाई को । और ये दुर्लभ कार्य करने वाली "दुर्लभ मानव" नाच-कूद कर ढोल पीटता है कि खुदा ने उसकी ये "कुर्बानी" कबूल कर ली । और "बकरीद" नाम का "हत्याओं" का दिन निरीह गरीब प्राणियों का बड़ी प्रसन्नता से "ईद" के रूप में मनाया जाता है । खुदा कैसे इन गरीब निरीह प्राणियों की कुर्बानी को नजर अन्दाज कर सकता है अर्थात कदापि सुपने में भी नहीं । इसी "घोर विद्रुता" का केवल एक ही नतीजा है केवल घोर निकृष्ट पार्को (नर्को) की सैर जो "प्रभु" का एक निश्चित अटल आवश्यक रूप

से प्रत्यक्ष होने वाला न्याय मात्र ही है । इसलिये राग-रंग केवल "विशेष-धर्म" में क्षत्रिय के लिये ही निश्चित है क्योंकि वो हर समय अपनी जान केवल दूसरे मानव को सुरक्षित रखने के लिये ही न्यौछावर करने के लिये हर काल में प्रस्तुत रहता ही है । इसी कुर्बानी के एवज में वो जीवित रहता है तो धरातल पर राज करता है और यदि धर्म-युद्ध में शहीद होता है तो स्वर्गो को प्राप्त करता है । ये धर्म युद्ध केवल अपनी अथवा दूसरे की जन्म सुरक्षा ही है । निजी स्वार्थो अथवा लोभों को पूरा करने के लिये किया गया इस सृष्टि का सूक्ष्म रूप से भी हनन आप को अवश्य नर्को की सैर करने पर विवश कर ही देगा । फिर मानव हत्या का विचार ही केवल आप को कौन-2 से दुख अथवा यंत्रणाएं भुगतने पर विवश कर देगा इसे यहाँ लफजों में ब्यान करने में भला कौन समर्थ हो सकता है ।

राजन जब घोर जंगल में पहुँचे तो लिदों के बड़े-2 ढेर अथवा पहाड़ देख कर के बहुत परेशान हुऐ, सोचने लगे कि जरूर किसी बड़े शत्रु राजा ने बहुत तैयारी से यहाँ कहीं नजदीक ही डेरा डाल रखा है वर्ना इतनी लिद जानवरों की कहाँ से आ सकती है । काफी खोज करने के बाद भी जब कुछ नहीं मिला तो उस गुफा तक पहुँचे जहाँ वही ऋषि ध्यान मग्न थे । राजन तो सब कुछ भूल ही चुके थे । ध्यान से उठने पर उन्होंनें राजन का स्वागत किया

और आने का कारण पूछा । राजन ने अपनी समस्या प्रस्तुत की कि जरूर शत्रु सिर पर आ पहुँचा है वर्ना इतनी लिद कहाँ से आयी । तब ऋषि मुस्कुराये और कहने लगे, हे राजन ये तो किसी दानी का किया हुआ "महान दान" ही है, केवल जो उस "प्रभु की दया" से फल रहा है अर्थात बढ़ रहा है । धीरे-2 ऋषि वचनों से राजन को सब कुछ याद आ गया । अब राजन की हालत ऐसी कि काटो तो खून न निकले । राजन धर्म-कर्म का ज्ञाता होने के कारण समझ गये कि "शैतानी ताकतें" काम कर गई हैं । ये विशेष दान अब उन्हें कैसे हज्म हो सकेगा जो कभी केवल हँसी का ही विषय रहा था, अब केवल रोने-पीटने का ही विषय बन गया । राजन ऋषि चरणों में लोटने लगे । ऋषि को दया आ गई, आखिर है तो प्रजा पालक ही । ऐसी दीन हालत "मुँह माँगा दान" देने वाले राजन की देख ऋषि के हृदय में दया सागर उमड़ ही पड़ा और छूटने के उपाय क्या बताये, केवल अपनी निंदा करवा लो । इस से बचने का राजन अब और कोई उपाय सुपने में भी नहीं है । अब मुँह माँगा वरदान देने वाले राजन अपनी निन्दा कैसे करवायें । चारों तरफ दूर-2 तक राजन के यश अर्थात केवल दान की ही चर्चा निहित थी हर मनुष्य की जुबान पर । इसीलिये मान को जहर तथा अपमान (निंदा) को अमृत की संज्ञा दी गई है । अब राजन ऋषि उपायों अनुसार अपनी निंदा करवाने पर निरन्तर ध्यान रखने लगे । नाचने गाने वालियों के झूठे संग अर्थात राग

रंग का झूठा प्रदर्शन किया जाने लगा । कई तरह के अपवाद इत्यादि राज में प्रत्यक्ष कर दिये गये । चारों ओर दूर-2 तक के राज्यों में भी राजन की भर्त्सना होने लगी । धीरे-2 वो लिद के अम्बार घटने लगे । इसीलिये कहा है कि "निदंक हमरे कपरे धोई ।" और फिर निन्दा की नाव पर चढ़ कर निन्दा करवाने वाला इस वचन को सार्थक बना ही लेता है कि "निदंक डूबा हम उतरे पार ।" लेकिन सावधान विशेष रूप से ये निंदा भली नहीं होनी चाहिये अर्थात जो अवगुण भूले से भी आप में नहीं हैं केवल उसे ही प्रचारित करवा दिया जाये । यदि आप में अवगुण हैं और फिर उसका प्रचार होता है तो उससे आप को कुछ भी लाभ सुपने में भी प्राप्त होना असम्भव ही है । उल्टा उस अवगुण के कारण आप को अवश्य जुर्माना भुगतने पर विवश होना ही पड़ेगा निश्चित रूप से । लाभ तो इससे केवल निन्दक को ही मिलेगा क्योंकि वो तो दूसरे को केवल सावधान ही कर रहा है कि कहीं आप को उस अवगुण से उसे अथवा दूसरे किसी को कुछ नुकसान न हो जाये । लेकिन बिना अवगुण के ही केवल आप में अवगुण हैं ब्यान करने वाला निंदक अवश्य आप के अनन्त जन्मों के इकट्ठे किये गये पापों के भण्डार ढोने में आवश्यक रूप से मदद करने पर जरूर मजबूर कर ही दिया जाता है निश्चित रूप से जान लो । तो भाई हमारी पोटली (निजी पापों के भण्डार की) इतनी हल्की थोड़ी ही है कि आप (झट) चट से उठा भी लोगे और तैर कर पार

भी हो जाओगे । भाई साहब एक बार केवल सिर्फ एक बार कुछ पल के वास्ते ही आप इस प्यारी रस से भरी पोटली को अपने नर्म-2 प्यारे-2 कर कमलों से अपने सिर पर रखने की कृपालता कर लो अवश्य फकीर का ये वाक्य निश्चित रूप से सार्थक सिद्ध होता दिखाई देगा जल्दी ही अर्थात "निंदक डूबा हम उतरे पार ।" राजन का काम बन गया और वो सारा का सारा दान का इंटरेस्ट अर्थात लिद के पहाड़ गधे के सींग की तरह गायब हो गये । यानी के इसी झूठी निंदा से निंदकों के खातों में तकसीम कर दिये गये । इसीलिये बहुत सोच विचार कर के इस प्यारी सी रस से भरी निन्दा में न शामिल होना ही केवल श्रेयस्कर साबित होगा । अब बचा केवल वही "मुठ" भर लिद का भण्डार जो राजन ने अपने हाथ से ऋषि के कमण्डल में डाला था । बहुत रोने पर उसका भी उपाय ऋषि ने बताया, कि राजन ये तेरा मूल है जो तूने अपने हाथ से बीजा था । शैतानी ताकतों ने बड़ी चालाकी से तेरे से ये ऐसा निकृष्ट बीज अथवा दान बीजवा लिया जिसे तेरे सिवा और कौन खायेगा ? कोई पूर्ण महात्मा यदि भूले से भी अगर तेरी निन्दा कर देवे, तो ये मूल भी तेरा केवल वही हज्म कर सकने में समर्थ हो सकता है । ये जान उसने सोचा जिसने ये सब ज्ञान दिया है उससे बढ़ कर पूर्ण महात्मा और कौन हो सकता है, तो फिर इन्हीं ऋषि समक्ष राजन उल्टी-सीधी हरकतें करने लगे । उसके ये भाव जान ऋषि हँसने लगे और उन्होंने डण्डा उठा लिया

और कहने लगे, कि हे राजन अब ये लिद तुम हमें ही खिलाना चाहते हो, शीघ्र ही उसे उठाओ और तुरन्त यहाँ से चले जाओ । इसे अब केवल तुझे ही खाना पड़ेगा निश्चित रूप से । तब राजन ने अपने वस्त्र में उस अपने "प्यारे से दान" यानी के लिद को एकत्र किया और अपने राज में लौटे । फिर वैद्यों को बुला कर के उन्होंनें उस अपने "मीठे दान" को दिया और स्वादिष्ट गोलियों के रूप में उसे तबदील करवाया । फिर जब सुबह शाम को इस अपने प्यारे से रस भरे दान को खाते थे तो बहुत रोते थे । ऐसा हाल था मुँह माँगे दान देने वाले धरती के श्रेष्ठ राजा भगवान रामचन्द्र जी के पिता जी के भी पिता जी राजा अज का । जिसे प्रभु प्रेरणा में आत्मा को कुछ भी करने से पहले सावधान किया गया है कि "अजै सु रोवे भिखिआ खाई । ऐसी दरगह मिले सजाई ।" अर्थात तुझे बीजने से पहले ही केवल छूट है, बीजने के बाद तो केवल बीजे का प्रतिफल मात्र ही है जो पहले से ही निश्चित है जिसे तू कभी सुपने में भी बदलने में समर्थ न हो सकेगा इसे तूं निश्चित रूप से समझ ले । इसी लिये कहा है कि "लेखा मेट न सकिये जो धुर लिखिआ करतार" इस प्रभु वचन का केवल इतना ही भाव है कि तेरे किये का प्रतिफल अर्थात "लेखा" जिसे ले करके तू इस जन्म में प्रत्यक्ष हुआ है उसे तू कभी भी बदलने में समर्थ न हो सकेगा कभी सुपने में भी, इसे तू निश्चित जान । ऐसा नहीं है कि एक को प्रभु नरक तथा दूसरे को स्वर्ग-प्रभु केवल

अपनी मर्जी से ही दे देते हैं । ये केवल तेरी अपनी निजी कमाई हुई संपत्ति मात्र ही है । "प्रभु" नियम प्रत्यक्ष करके केवल हर एक पर कड़ी निगरानी रखते हैं । तू व्यर्थ डेरे इत्यादि बड़े-2 स्थापित तीर्थों में धक्के खाता हुआ लाईनों में लगा है केवल "शैतानी ताकतों" के मीठे भ्रम में । यहाँ कोई "परमात्मा" नाम की महामारी कैद नहीं कर रखी है तो तेरी करतूतों को "हवा" कर देने में समर्थ हो सके । तू केवल अपनी "दुर्लभ मानुख जन्म" रूपी हस्ती इन "शैतानी ताकतों" के चुंगल में व्यर्थ निरन्तर मिटाता चला जा रहा है । जब तक तू उस अकाल पुरख परमात्मा को केवल निरमल पाक हृदय तथा जुबान से याद नहीं करेगा, तेरा ये व्यर्थ का झूठा रोना-पीटना, देखने वाला कभी कोई भी सुपने में भी तुझे न मिल सकेगा निश्चित रूप से तूं समझ ले । अंतर में लोभ और स्वार्थ तथा बाहर दुनिया की आँखों में मिट्टी झोंकने के लिये बड़ी-2 ड्यूटियां अर्थात जिम्मेदारियाँ निभाने का पाखण्ड प्रदर्शित करता है । इन बड़ी-2 "शैतानी ताकतों" के मीठे रस से भरे गद्दों को सुशोभित करना तथा दूसरों के मानुख जन्म के भ्रमों में मिटाना अथवा डुबाना इतना आसान नहीं है जितना कि तूने प्रचारित कर रखा है । अब यहाँ ये प्यारे-2 कारस्तानियों के पुलिंदे अर्थात अनुयायी जन सुशोभित होंगे, वहीं गद्दों के ठेकेदार भी अपने आप ही खिंचे चले जायेगें । पलड़ा तो केवल वही झुकेगा

जो केवल भारी होगा । जब अमल ही सबके झूठे हैं तो फल उनका "केवल सच्चा" कैसे सुपने में भी होना संभव हो सकता है ।

"रोजा धरेह मानवे अल्लाह - सुआदत जीउ संघारे । आपा देख अवर नहीं देखे - काहे कउ झख मारे ।" प्रभु की प्रेरणा आत्मिक कल्याण हेतू, कि जीव परमात्मा की प्रसन्नता के लिये रोजा यानी के दिन भर उपवास रखता है, यहाँ तक कि थूक भी गले से नीचे नहीं उतारता पानी पीना तो दूर रहा फिर भोजन की क्या बात करनी है । लेकिन केवल जुबान के स्वाद हेतू दूसरों की गर्दन पर आँखें बंद करके झट से छुरी फेरनी शुरू कर देता है । केवल अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिये फट से जुआखाना तक खोलने में भी तुझे कोई शर्म सुपने में भी अनुभव नहीं होती । फिर ये तुझे कैसे विचार में भी बोध हो सकेगा कि केवल तेरे इस निकृष्ट कर्म से ही न जाने कितने घर अवश्य नष्ट होने निश्चित हो ही जायेंगे । "ऐसा जग देखया जुआरी - सब सुख मांगे नाम विसारी ।" जीव की हालत बिल्कुल एक जुआ खेलने वाले जुआरी जैसी ही है । वह केवल अपनी हवस को पूरा करने के लिये निरन्तर तरह-2 के स्वाद अथवा साधनों की माँग करता ही रहता है निरन्तर पर जिस से उसे सदा का न खत्म होने वाला सुख अथवा आनन्द प्राप्त हो सकता है, अर्थात नाम (प्रकाश) उससे वह निरन्तर दूर रहना ही केवल पसन्द करता है । जब भी

उसे यह "दुर्लभ मानव जन्म" प्राप्त होता है । "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" उसे ठीक उसी तरह से घेर कर बैठ जाती हैं और जुआ खेलने के लिये निरन्तर प्रेरित करती रहती हैं । जैसे कि आप स्वंय जब किसी दूसरे जीव की गर्दन नहीं जेब पर छुरी फेरना चाहते हैं, केवल इस लोभ में कि उसके पास कुछ अधिक साधन अथवा समर्था है । आप से कुछ अधिक जो केवल एक भ्रम मात्र भी तो हो ही सकता है । पर आप की वासना उससे उसके कमाये हुए पदार्थो को छीन लेना चाहती है । तो उसे आप भी अपनी चण्डाल चौकड़ी सहित निरन्तर जुआ खेलने को प्रेरित करते ही रहते हैं । जब तक कि आप उस के कमाये हुए समस्त पदार्थ अपने स्वंय के नाम पर केवल ट्रांसफर नहीं कर लेते भूत की तरह से उसके सिर पर मंडराते ही रहते हो । भूल जाते हो कि आज तुम भूत बनकर उसके पदार्थ हज्म कर रहे हो निश्चित रूप से कल को वह केवल महाभूत बनकर के आप के समस्त कुल परिवार तथा सम्बन्धियों सहित आपके अपने ही कमाये हुए प्रत्यक्ष साधनों सहित सभी को ऐसे हज्म कर जायेगा कि आप को सुपने में भी इसका भान तक न हो सकेगा । फिर "डकार" भी लेगा भाई इस शक की गुंजाइश तो हर काल में बनी ही रहेगी । मिसाल आप का अपना ही इतिहास साक्षी है। "महाभारत संग्राम ।" केवल दुर्योधन अपने ही भाईयों को तरक्की करते देख उनकी उपलब्धियों को हज्म न कर सका । इनके कमाये हुए पदार्थ कैसे

अपने नाम ट्रांसफर (तबदील) करे केवल इसी चिंता में दिन रात सूखने लगा । आखिर सहारा मिला तो "केवल छल" का बिना छल के तो अपना भी खो देने का डर हमेशा बना ही रहता है । एक तो जुआ और फिर छल का सहारा । अगले की समस्त कमाई स्त्री सहित अपने नाम ट्रांसफर (तबदील) करवा कर सभी "शैतानी ताकतें" नाचने लगीं, अपनी कुल मर्यादा इत्यादि समस्त शिष्टाचार ताक (एक तरफ) पर रख दिये गये यहाँ तक कि अपनी ही बहू को भरे दरबार में ही निर्वस्त्र करने पर उतारू हो गये । केवल पदार्थ ही नहीं छीने बारह बरस बन (जंगलों) में ठोकरें खाने को मजबूर कर दिये गये । फिर एक बरस घोर नर्कों की यातनाओं जैसा "गुप्त वास" करने पर भी मजबूर कर ही दिया गया । कहाँ धरती का "श्रेष्ठ राज" और कहाँ दूसरे की रसोई में मुँह काला करवाना अपनी आबरू सहित जोखिम में डालकर दूसरे की चाकरी अथवा जी-हजूरी करना । दूसरे को ऐसी भयानक यंत्रणाएं भुगतने पर मजबूर कर देने के बाद आप अपने भाग्य में सुख की तलाश कैसे सम्पन्न करने में भी समर्थ हो सकोगे कभी सुपने में भी । अर्थात आपने स्वंय केवल आप ने ही अपने ही हाथों अपने समस्त सम्बन्धों सहित सभी के भाग्य में "आग" लगा ली । और इस आप की अपनी ही लगायी हुई आग में आप का अपना कमाया हुआ समस्त साधनों सहित कुल-वंश भी जल कर के राख हो ही गया । बचा तो केवल खून और घृणा का अथाह सागर

जिन की थाह आज तक कोई न प्राप्त कर सका । जब दुर्योधन चलता था तो चालीस योजन "छतर" चला करता था । ऐसी शान से चलने वाले के मुँह पर आज कोई थूकना भी पसन्द नहीं करता ! शैतानी ताकतों ने बड़ी चालाकी से अपना मकसद सिद्ध कर लिया था । दुर्योधन की अपनी लिखित साक्षी है । धर्म क्या है मैं खूब जानता हूँ । अधर्म क्या है उसे भी मैं भूला नहीं हूँ । पर इस भूत का मैं क्या करूँ, जो निरन्तर मेरे अन्तर में समाया हुआ है । ये भूत जो चाहता है मेरे से जबदस्ती करवा लेता है, मैं चाह कर के भी अपनी मर्जी से कुछ भी करने में असमर्थ ही हूँ । और वह समाया हुआ भूत सिवाय इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के और कुछ भी नहीं है । जिन्हें आप न तो देख ही सकते हैं फिर लड़ोगे कैसे, कहाँ से लाओगे वो "दिव्य ताकत" जो इनका नाश करने में समर्थ हो सके ? फिर ये शुभ कार्य आप क्या अनन्त पापों के ढेर पर बैठकर के कौन से कमाये हुए जादू-मन्तर से कब कहीं सुपने में भी करने में कैसे समर्थ हो सकोगे । ये दुर्योधन (ईर्ष्या) नाम का "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी कीड़ा" बड़ी चालाकी से आप को बड़े-2 मत-धर्म इत्यादि चलाने वाले समाज के बिना ताज के बादशाहों अथवा ठेकेदारों के सफेद-2 उज्जवल पहनावों में बड़ी सफाई से छुपा हुआ मिलेगा ! जब तक आपको इस "सूक्ष्म अदृश्य कीड़े" का पता चले इससे पहले ही आप अपनी समस्त सत्ता अवश्य खो बैठेगें अवश्य निश्चित रूप से । केवल इनको पता

चलना चाहिये कि आप के पास कुछ विशेष पदार्थ है उनके मतलब का । इनके गुप्त सेवादार सूक्ष्म रूप से आने वालों पर बड़ी सफाई से कड़ी निगरानी रखते हैं । आप सुपने में भी न सोच सकोगे की आप से संभाषण करने वाला कौन हो सकता है ? स्त्रियों पर इन की विशेष दया दृष्टि रहती ही है ये भी कोई कहने की बात है क्योंकि इनके ज्यादातर कार्य इसी "स्त्री नामी की आग" से ही सम्पन्न होते हैं इसे आप निश्चित रूप से जान लेवें । कहीं भी लाईन में लगने से पहले इस जोखिम को आप उठाकर के अपने सिर पर पहले ही से रख लेवें तो काफी बेहतर रहेगा । कहीं भी आपको केवल अपनी ही कमाई को लुटाने के सिवाय कुछ भी सुपने में भी प्राप्त होगा सम्भव ही नहीं है । कभी भी जिस भी काल में आप को कुछ भी प्राप्त होगा तो केवल इस दुर्लभ मानव शरीर के अन्दर ही प्राप्त होगा । पर जीते जी जीव मानता ही नहीं । "मन मुख मुगध बूझे नाही बाहर भालण जाई" अपने साथ हर समय समस्त सुखों के भण्डार को लिये फिरता है । पर जहाँ सुख अथवा आनन्द का भण्डार हर समय प्रत्यक्ष है वहाँ उसको अनुभव ही नहीं करना चाहता और जहाँ केवल दुख ही दुख है, वहाँ उसकी तलाश अथवा प्राप्ति के लिये समस्त उपाय करता फिरता है । साधारण सी बात है कि एक वस्तु की उपस्थिति केवल "ए" स्थान में ही प्रत्यक्ष है और आप उसकी तलाश कर रहे हो "बी" नाम के स्थान पर । तो विद्वानों (उच्च श्रेणी के) जरा

सोचो कि ये दुर्लभ तलाश आप की इस "सुख नाम की महामारी" की कब और कौन से युग काल में सम्पन्न हो सकेगी ? अर्थात ये "सुख नाम की महामारी" आप को कभी भी बाहर न मिल सकेगी सुपने में भी । बल्कि इसके एवज में और कई तरह की घोर अथवा भयानक "महामारियाँ" अवश्य निश्चित रूप से इनट्रेस्ट के रूप में प्राप्त बिना माँगे हो ही जायेंगी । यही "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" चाहती हैं कि जीव इस सुख के सागर अथवा भण्डार तक कभी भी किसी भी काल में भी पहुँच ही न सके । अतः उसे वहाँ तक पहुँचने से रोकने के लिये ही वे निरन्तर जीव को बाहर रखने के लिये ही केवल नए-2 रूपों का मायावी जाल बुनती ही रहती हैं । "रूप" जीव को रोकने का सब से उत्तम तथा आसान उपाय है । रूप देखते ही जीव उसकी तरफ खिंचता है फिर उसे बार-2 देखने का ख्याल एक घोर निकृष्ट वासना के रूप में बदल ही जाता है । फिर जीव इन अपनी ही पैदा की हुई इस सुन्दर तथा मीठी वासना को केवल स्थिर अथवा कायम रखने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहता है, हर सम्भव जायज अथवा नाजायज तरीकों को प्रयोग में लाते हुऐ । भूल जाता है कि रूप की सत्ता कभी सुपने में भी स्थिर होनी संभव ही नहीं है । जो स्थिर हो नहीं सकती उसे वह निरन्तर स्थिर रखने सुपना संजोये फिरता है । इसी सुपने को पूरा करने के लिये ही वो निरन्तर पाप भी कमाने लगता है । यही "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" का गुप्त मकसद

है । इसी उधेड़ बुन में वो अपनी निजी अविनाशी हस्ती को भूलने लगता है । भूल जाता है कि तू अविनाशी सत्ता का अंश केवल स्थिर रहने वाली हस्ती के सिवा और हो ही क्या सकता है । फिर तुझे सुख केवल अपने "दुर्लभ मूल" जिस का कि तू अंश है के सिवा ओर मिल ही कहाँ सकता है ? अर्थात और कहीं भी ये दुर्लभ सुख तुझे प्राप्त होना सुपने में भी संभव ही नहीं है ।

"सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" अनजाने में ही जीव से ऐसी-2 क्रियाऐं करवा लेती हैं, कि उसके एवज में केवल इस को किसी की विशेष दया से मिला हुआ दुर्लभ मानव जन्म ही व्यर्थ नहीं चला जाता बल्कि अगले कई जन्म भी निकृष्ट योनियों के ये अपने ही हाथ से अवश्य निश्चित रूप से लिख ही लेता है । इसकी एक मिसाल इतिहास में दर्ज है राजा दशरथ की । एक बार युद्ध से लौट कर वे प्राप्त "उपलब्धियों के मद" में मस्त आखेट को निकले । कोई शिकार हाथ न आ सकने के एवज में विचलित होने लगे । धीरे-2 सूर्य ढलने लगा शाम को खाली हाथ लौटना ऐसे "महारथी" के लिये उन्हें ठीक न लगा । उन की परेशानी बढ़ने ही लगी । आखिर उन्हें पानी के गुड़गुड़ाने की आवाज़ सुनाई देने लगी । अंधेरे के कारण वहाँ तक पहुँच जाने में स्वंय को असमर्थ जान तथा कहीं जब तक वे वहाँ पहुँचे उससे पहले ही कहीं शिकार हाथ से न निकल जाये । उन्होंने अपने "तप" से प्राप्त "शब्द-

भेदी बाण" बिना ज्ञान निश्चित किये "मद" में डूब कर चला ही दिया । उन्होंनें समझा कि कोई बिनोला हाथी पानी पी रहा है । वे समस्त आखेट तथा युद्ध की कुछ क्षणों के लिये "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" द्वारा भुला अथवा दूर कर दिये गये । अर्थात हाथी का वध केवल युद्ध में ही मर्यादा अनुकूल है । युद्ध से बाहर हाथी का वध वर्जित है । इसे बड़ी चालाकी से किसी ने भुला दिया । इसी तरह से शब्द भेदी बाण भी, बिना लक्ष्य निर्धारित किये चलाना मर्यादा के प्रतिकूल है । अर्थात आप को मालूम होना चाहिये निश्चित रूप से कि आप ये ताकत का प्रयोग किस पर कर रहे हो ! बिना इस ज्ञान के निर्धारण के किया गया इस ताकत का प्रदर्शन केवल मर्यादा से बाहर होना ही है । ये कार्य किसी ने बहुत चालाकी से करवा ही लिया । "मद" में मस्त जब वे अपने शिकार को प्राप्त करने के लिये आवाज की दिशा में वहाँ तक पहुँचे तो उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ । सामने एक दुर्लभ सा मानव शरीर आखिरी सांसे गिनता हुआ दम तोड़ रहा था तड़पता हुआ । गर्म-2 खून से उसका सारा शरीर नहा चुका था । राजन की बाँहों में ही वह आत्मा दुर्लभ मानव जन्म खो बैठी । उसके अन्धें माता-पिता इस सदमें को बर्दाश्त न कर सके और पुत्र की चिता में ही अपने को उन्होंने जिन्दा ही जला डाला क्योंकि पुत्र वियोग में वे अन्धे प्राणी अपना जीवन सुपने में भी स्थिर रखने में स्वंय को असमर्थ समझते थे । चिता की आग में

भस्म होते हुए वे राजन को एक "कीमती दान" दे गये । कि हे राजन जिस तरह से पुत्र-वियोग में हम जिन्दा ही तड़प-2 कर मर रहे हैं न, इसी तरह से तूं भी पुत्र-वियोग में तड़प-2 कर ही अपने प्राण त्यागेगा ! राजन के तो कोई पुत्र ही न था उस समय, तथा शीघ्र ही राज कार्य में व्यस्त रहने के कारण वे इस घटना तक को भूल ही गये । जब वे साठ हजार साल की आयु को प्राप्त हुए तब उन्हें राज कार्य चलाने के लिये पुत्र की आवश्यकता अनुभव हुई । अतः कुल गुरू ऋषि विशिष्ट जी की उपस्थिति में यज्ञ कार्य सम्पन्न हुआ और उन्हें ये समर्था केवल अपने पिछले कमाये हुऐ "तपों" के एवज में ही प्राप्त हुई । प्रत्यक्ष घटना कुछ भी रही हो । यही गुप्त भेद सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों की भयानक मार करने वाली गहरी चाल है । इस समर्था को प्राप्त करने पर उन्हें इस के खो जाने का डर अन्तर में निरन्तर बना ही रहता था । और जब उन्होंने स्वंय ही "राम" जैसे पुत्र को चौदह वर्ष का बनवास सुना दिया, तो फिर वे उसके वियोग को ममता के कारण बर्दाश्त ही न कर सके । और लगे तड़पने उसे फिर से प्राप्त करने के लिये । उन्हें वे दोनों अन्धे प्राणी तड़प-2 कर दम तोड़ते हुए निरन्तर प्रत्यक्ष दिखने लगे, जिन्हें केवल उनके ही कारण पुत्र-वियोग में तड़प-2 कर दम तोड़ने पर विवश होना पड़ा था । इन "भूतों" (बीत गयों) को वे आखिरी दम तक अपनी आँखों से दूर करने में असमर्थ ही रहे । और केवल दो ही दिन में

इस दुर्लभ मानव जन्म को सदा के लिये पुत्र-वियोग में ही खो बैठे । ध्यान से विचार करिये कि राजन से कार्य भी "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" नें ही करवा लिया था चालाकी से और फिर भूत की तरह से तड़पा-2 कर के हिसाब भी वसूल कर ही लिया था "दुर्लभ मानुख जन्म" को वापस ले कर के । कारण राम का वो रूप जो कभी भी किसी भी काल में स्थिर रहने में असमर्थ ही साबित हुआ, बेशक शैतानी ताकतों का ये प्यारा सा भ्रम इसी रूप में दस हजार साल से भी अधिक समय तक इसी धरती पर छत्र चलाता ही रहा । "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" कभी सुपने में भी कर्म की गति से बाहर पैर भी नहीं रख सकतीं, कोई बड़ी कड़ाई से इन पर भरपूर नज़र रखे हुए हैं निश्चित रूप से । और उस नज़र रखने वाले के सिवा कोई भी आपको अपने ही कमाये हुए "दुर्लभ कारनामों" से अलग अथवा मुक्त कराने में कभी भी समर्थ होना असंभव ही है निश्चित रूप से ये जान लो अभी से ! कर्म की गति कभी सुपने में भी नहीं बदलती आप व्यर्थ अपनी हस्ती इन बड़े-2 धर्म के ठेकेदारों के समक्ष निरन्तर खोते चले जा रहे हो । जो किसी से रोशन है और स्वंय को परमात्मा स्थापित करने में लगा हुआ है आप उन्हें गुरू-अथवा परमात्मा मानने में अपने जन्म को व्यर्थ गँवाने में ही अपनी बड़ाई अथवा श्रेष्ठता स्थापित करते हो कायदे से तो ऐसी आत्माओं को तो मनुष्य श्रेणी में भी गिनना केवल उस "एक परमात्मा" की तौहीन अथवा निरादार करना ही

सबित होता है । जब सारी सृष्टि "कर्म" नाम के भयानक महाभूत के भयावले शिकंजे में कैद आखिरी सांसे गिन रही है तो फिर उससे अलग कौन हो सकता है ? "सगलया भौ लिखिआ सिर लेख नानक निरभउ निरंकार सच एक ।" केवल एक उस "अकाल पुरख परमात्मा" के सिवा और कौन हो सकता है सुपने में भी जो इस लेख नाम के महाभूत से अलग है । उस निरंकार के सिवा कोई तेरी मदद करने में कभी भी किसी भी काल में सुपने में भी समर्थ नहीं हो सकता इसे तूं निश्चित रूप से अभी से गाँठ बाँध ले । सभी इस भयानक लेखा नाम के चक्र में फँसे हुए हैं । तू आगे का लिखना बंद नहीं करता फिर कौन तेरा पिछला निपटवा देगा ? अर्थात कोई भी नहीं । अगले नें तुझे दुर्लभ मौका (अवसर) कुछ करने से पहले ही तुझे दे दिया है, अब तो तेरी बारी है तुझे भी कुछ अवश्य करना ही होगा । तभी कोई और भी अवश्य कुछ कर ही देगा । और फिर तेरी बात कुछ न कुछ अवश्य बन ही जायेगी । यदि हाथ पर हाथ धरे ही बैठा रहा तो ये लाभ केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के सिवा और किसी को भी होना संभव न हो सकेगा । अगर सचमुच इस भयावले जेलखाने से छूटना ही चाहता है तो "पवित्र" रहकर के व्यवहारिक रूप से निरन्तर पुकार उस एक परमात्मा को । अपना प्रेम साबित कर उस "चातक" की तरह से जो प्रेम वश अंगारे तक हज्म कर जाता है बेशक जान ही क्यों न देनी पड़ जाये एवज में । पर वो तो

अंगारे अर्थात चमक का दीवाना है केवल उसे ही अपना प्रेमी समझता है, तू भी अपनी दीवानगी साबित कर उस मूल अंगारे की "जउ तउ (तू) प्रेम खेलण का चाउ - सिर धर तली गली मोरी आओ । इत मारग पैर धरीजै - सिर दीजै "काण" न कीजै ।" बिना दावे का सिर उसके आग अपर्ण कर । काण कहते हैं दावे को । सिर देने के बाद भी तेरा ये दावा कतई नहीं होना चाहिये कि तुझे अभी तक केवल तेरा प्रेमी क्यों नहीं मिला । यहाँ चलते हैं तो पहले एक प्यासी सी लिस्ट अपनी "विशेष-2 माँगों" की चुपके से छुपा कर के अन्दर की जेब में धर लेते हैं । बेचारे परमात्मा जी को "शॉर्टहैंड" सीख कर डिक्टेशन लेनी ही पड़ती है अपने विशेष-2 प्यारों की अलग-2 विशेष-2 समय दे कर के । जो "माँगे विशेष" बाद में याद आ जाती हैं उन्हें लिख करके "गद्धे विशेषों में "पकने" के लिये दबा कर के रख दिया जाता है आज के उत्कृष्ट कोटि के प्यारों द्वारा । हजूर-पातशाह बने बैठे बड़े भारी-2 परमात्मा उच्च कोटि के जो "परमात्मा के भी बाप" अपने को साबित करते हैं क्योंकि इन से मुहर लगवाये बिना इन का दावा है कि आप से कभी भी "परमात्मा असल" सुपने में भी बात ही नहीं करेगा ! ये ऐसे ही अनन्त झूठा दावा पेश करने वाले नकली परमात्मा केवल अपने शरीर की व्यर्थ दुर्गन्ध से भरी गर्मी से ही आप की माँगों को "पका" कर के मीठे रस से भर कर आपके घरों में भेज देते हैं । कमाल है इनके केवल भारी-2 शरीरों

के बैठने वाले भारों में ही इतनी समर्था है तो विचारणीय बात है कि फिर आखिरी समय ये जादू इनका कहाँ हवा हो जाता है कि इनके स्वंय के भार मुर्दो को ढोने के लिये चार नहीं बल्कि आठ तगड़े-2 मुसटंडो की अवश्य आवश्यकता होती ही है । साधारण मनुष्य के बस की तो ये बात सुपने में भी नहीं कि इन भारों को उठा सकें । अर्थात आप को निश्चित रूप से सावधान करते हैं कि आप स्वंय जब तक इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" से लड़ना पसन्द नहीं करोगे "वो कोई" कभी भी किसी भी काल में आप की मदद करने को प्रत्यक्ष नहीं होगा । और केवल उस एक की मदद के बिना आप कभी भी सुपने में भी इस कठिन कार्य को करने में समर्थ न हो सकोगे इसे आप निश्चित रूप से जान लो । डेरे इत्यादि स्थानों में आप जिन के पीछे भाग रहे हो, जिन्हें पकड़ कर बैठे हो आप सोच भी नहीं सकते कभी सुपने में भी कि इन्हीं के अन्दर वो "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" बड़ी चालाकी से छुपी हुई बैठी हैं । और निरन्तर आप सभी के कीमती दुर्लभ मनुष्य जन्म को हज्म करती ही चली जा रही हैं । ये बड़े-2 परमात्मा बने बैठे खुद स्वंय भी नहीं जानते कि ये सब क्या हो रहा है । जिसे ये परमात्मा की बात समझते हैं, असल में ये केवल इन "अदृश्य सूक्ष्म शैतानी ताकतों" के ही सदेश अथवा प्रेरणायें हैं । इस कर्म की गति अथवा जेलखाने से कोई भी कभी भी सुपने में भी आप को मुक्त कराने में समर्थ हो ही नहीं सकता । इसे आप

निश्चित रूप से अभी से गाँठ बाँध लो । बीच-2 में ये "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" बड़ी चालाकी से बहुत बढ़िया-2 कार्य बाहरी रूप से सम्पन्न करती रहती हैं, जिससे दूसरी आत्माओं को बहुत बड़ा धोखा होता है । लेकिन अन्दरूनी तौर पर एक ही मकसद है आपके इस "कीमती दुर्लभ मानुख जन्म" को व्यर्थ के धन्धों पर खर्च करवा देना और फिर डण्डा लेकर हिसाब वसूल करना अर्थात अपने ही इस जेल खाने को रोशन करने के लिये आप को एक लम्बी सी कैद में रखना । जहाँ पर आप को एड़ियाँ रगड़ने पर अवश्य मजबूर कर ही दिया जायेगा निश्चित रूप से । मिसाल प्रत्यक्ष ही है यदि आप इस दुर्लभ मानुख जन्म को व्यर्थ करने के कोई भी साधन प्रत्यक्ष करते हैं तो अवश्य आप को धर्म-मत अथवा मुल्कों आदि का "इन्चार्ज" विशेष रूप से साधनों सहित अवश्य बना ही दिया जायेगा, इसे आप निश्चित रूप से जान लो । चल रहे दौर में लंगर की प्रथा को ही ले लो । जो ज्यादा से ज्यादा आत्माओं को इस धन्धें में उलझाने में अपनी हस्ती सहित मिटाता है, उसके नाम के "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" अवश्य झंडे लगवा ही देती हैं । गुप्त रूप से और वह इस मद में मस्त अपनी तथा दूसरी बहुत सी आत्माओं की हस्ती अवश्य मिटाने में ही अपनी श्रेष्ठता स्थापित करता चला जाता है । दूसरी तरफ समस्त इन्तजाम आपके हर कुछ महीनों में ही छोटे ही पड़ते जाते हैं । पर ये कार्य केवल "शैतान की आंत" की तरह से निरन्तर

बढ़ता ही चला जाता है (ये सृष्टि कर्म पर आधारित है आप कभी भी किसी भी काल में दुनिया की भूख को मिटाने में सुपने में भी समर्थ न हो सकोगे इसे निश्चित ही जानो) और इस आंत को भरने के लिये जो कभी सुपने में भी भरना सम्भव ही नहीं है बड़े-2 हजूर पातशाह परमात्मा बने बैठे महाराज "सज-धज कर सेवा" नाम के धरती के सब से बड़े उत्कृष्ट महान कार्य को बड़े-2 सिंहासनों पर केवल विराज अथवा बैठ कर के ही सम्पन्न कर देते हैं । ये दुर्लभ सेवा करने के लिये ही केवल इन महान परमात्माओं का इस मृत लोक में अवतार प्रत्यक्ष होता है । साधारण सी बात है कि पहले कीचड़ में हाथ-मुँह-शरीर लपेट लो और फिर बिना " "लिक्विड" सोप के मल-2 कर नहाते फिरो ! या न कीचड़ में लिपटो, न नहाने की जरूरत ही पड़े । फिर सोप की आवश्यकता क्यों कर कहाँ-कब और कैसे हो ही सकेगी । भाई अपनी-2 उत्कृष्ट विचारधारा है । यदि आप को इस उत्कृष्ट विचारधारा के एवज में बार-2 उत्तम उच्च कोटि के विशेष-2 "पार्कों" में नहाना ही केवल अपना निजी व्यवसाय अथवा शौक़ जान पड़ता है, तो मुबारक हो आप को आप का ये उत्तम उच्च कोटि का "उत्कृष्ट स्नान घर ।" प्रभु आपके इस "शौक़" को अवश्य बनाये रखें आप के दुर्लभ-2 विशेष-2 "ज्ञान अथवा पदार्थों" का भण्डार रखने वाले अनुयाईयों सहित अनन्त काल तक । मानव जन्म दुर्लभ है इसमें जरा सी भी फिसलन आप को कहाँ से कहाँ ले जायेगी,

आप सुपने में भी इस की गणना करने में कभी किसी भी काल में समर्थ न हो सकोगे । केवल स्वादों के लिये भुगतने वाले जुर्मानों की आप कभी कल्पना भी नहीं कर सकते । स्वाद भी क्या है कभी आप ने विचार किया है ? इस शरीर में सिवाय माँस-खून-चर्बी अथवा हड्डियों के सिवा और क्या है ! जो निरन्तर घिसता ही चला जा रहा है । आप के रोम-2 में से केवल दुर्गन्ध अथवा गंद के सिवा और कुछ भी निकलना सम्भव ही नहीं है । आप नहाते धोते हो सुगंधिया पोखते हो फिर इस विसटा के पात्र को सजाते हो लेकिन इन सब का क्या नतीजा निकलता है मुश्किल कुछ ही घड़ियों में ये फिर से दुर्गन्ध में ही डूब जाता है अथवा मैला हो जाता है केवल आपका मुँह चिढ़ाने के लिये । इसे रोकने अथवा इस महामारी से बचने का आपके पास कोई भी निश्चित इलाज सुपने में भी नहीं है । इसीलिये कहा है कि "अन्न देवता - पाणी देवता - बेसन्तर देवता - लूण पंजवा पाइआ घिरत । ता होआ पाक पवित । पापी सिउ तन गडिआ थुका पईआ तित । जित मुख नाम न ऊचरह बिन नावे रस खाह । नानक एवे जाणीऐ तित मुख थुका पाह ।" अर्थात इस तन की क्या बड़ाई है इस वचन से प्रत्यक्ष है । अन्न-पानी-आग-नमक तथा घी ये पाँचों पदार्थ अमृत जैसे पवित्र हैं और इन्हें मिला कर के जो भोजन तैयार किया जाता है वो भी केवल अमृत जैसा पवित्र ही होता है । लेकिन ये आप का खूबसूरत शरीर केवल "पापों के ढेर" के

सिवा और कुछ भी नहीं है । (बिना पापों के भुगतान के बदले ये कब्र-जेल खाना-मुर्दो-बिसटा का पात्र इत्यादि कभी भी किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकता निश्चित रूप से जान लो) यदि ऐसा ना होता तो फिर केवल जुबान पर रखने मात्र से ही आपकी सारी मेहनत व्यर्थ कैसे चली जाती है ? ज़रा सोचो । अर्थात ये अमृत सा भोजन केवल इस शरीर के स्पर्श मात्र से ही थूक अथवा गन्द में बदल दिया जाता है, केवल यही इस उत्कृष्ट महान निरन्तर उठने वालो दुर्गन्ध से भरे बिसटा के पात्र अथवा मानव शरीर की । अब इस मानव शरीर का मकसद ब्यान किया है प्रभु जी ने, कि यदि तू अपने स्वादों अथवा इन भौतिक झूठे रसों से अपने को ऊपर उठाये अर्थात उस एक अकाल पुरख परमात्मा की शरण में अपने को कुर्बान कर देवे तो इस तन को प्राप्त करने का तुझे ऐसा दुर्लभ लाभ प्राप्त होगा कि फिर से तुझे कभी भी किसी भी काल में इन जेलखानों को रोशन करने के लिये मजबूर होना ही नहीं पड़ेगा । केवल उसे भूलने का ही जुर्माना तू अनन्त काल से भुगतता चला आ रहा है । जब भी ये "दुर्लभ मानुख जन्म" रूपी मौका तुझे किसी की दया से प्राप्त होता है, ये "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" तुझे "जुआ" खेलने पर निरन्तर केवल "झूठे स्वादों" का लोभ प्रस्तुत कर के मजबूर कर ही देती हैं । और फिर तेरा "दांव" भी इन "झूठे मीठे रस से भरे" नौ इसी शरीर के स्वादों पर ही लगवा ही देती है अर्थात मनुष्य जन्म में मिली प्राण शक्ति

का इन स्वादों को पूरा करने पर ही खर्च करके अपने दुर्लभ मानव जन्म को सदा के लिये गंवा बैठना । क्योंकि ये दांव जिन नौ नम्बरों पर तू इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" की जिस सलाहकार समिति को तू अपना निजी मित्र जानकर के-केवल इनकी मीठी रस भरी-चालाकी नाम के खोल में लिपटी "सलाह" को ही केवल अपना, निजी भला मान करके ये "दांव" लगाता है । निश्चित रूप से ये दांव तेरे इन शैतानी नम्बरों पर लगाये गये अवश्य खाली चले ही जाते हैं एक-2 करके । और तू लुटे जुआरी की तरह से केवल पल्ला झाड़ करके ही रोता-पीटता घसीट करके शेष भुगतान को वसूल करने के लिये इन्हीं "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" द्वारा निकृष्ट भोगी पिंजरों को रोशन करने के लिये कैद कर ही लिया जाता है । जिस दसवें नम्बर पर दांव लगाने से तुझे लाभ मिल सकता है अर्थात तू सदा के लिये इस कैदखाने से मुक्त हो सकता है उस पर ये "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" दांव लगाने ही नहीं देतीं अर्थात ये प्राण शक्ति इस कार्य पर कभी सुपने में भी खर्च करने ही नहीं देतीं । इस नम्बर को ये हमेशा छुपा कर ही रखती हैं बड़ी चालाकी से । यकीन न हो तो अभी करके देख ले । तू हृदय चक्र में प्रत्यक्ष है । आज्ञा चक्र पर जो दोनों आँखों के बीच में अति सूक्ष्म अथवा गुप्त है । इसे ही दसवां नम्बर कहा गया है । अपने को शेष नौ नम्बरों अथवा शरीर के द्वारों में से निकाल कर के यहाँ दसवें पर एकत्र करने के कार्य को गल्ती से

भी करके तो देख ! इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" की "माँ" अभी मरने लगेगी । और अपनी "माँ" को जिन्दा रखने के लिये ये सभी "अदृश्य शैतानी ताकतें" तुझे केवल यही कार्य न करने देने के लिये तेरे ही कमाये हुए पापों का सहारा लिये निरन्तर विघ्न उपस्थित करती ही रहेंगी तेरी आखिरी घड़ी तक, कि तूं केवल इसी कार्य से सदा के लिये निवृत हो जाये अथवा इस कार्य को तूं कभी सुपने में भी न करे । जब कि "केवल इसी कार्य" के लिये ही तुझे किसी की विशेष कृपा से ये "दुर्लभ मानव जन्म" प्राप्त हुआ है । और तूं इन चालाकियों से अनजान किन नम्बरों पर अपनी कीमती लेकिन गिनती की निश्चित पूँजी इस्तेमाल अथवा खर्च कर रहा है जरा सोच तो सही । मिसाल के तौर पर केवल एक नम्बर पर ही तू विचार कर ले । "काम" रूपी नम्बर पर तू अपना कितना "मोटा दांव" अर्थात पूँजी खर्च करता है । एक बार नहीं जिन्दगी भर तूं इस पर अपनी गाड़ी कमाई की बहुत मोटी रकम खर्च करने पर इन्हीं "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" द्वारा निरन्तर प्रेरित अथवा मजबूर कर ही दिया जाता है । जरा सोच तो सही कि ये तेरा कीमती दांव जिन नम्बरों पर कोई चालाकी से लगवा रहा है ये केवल "गन्द-मूत्र" की थैलियों के सिवा कुछ और भी है क्या, जो तू दिन रात इन्हें चाटने में ही केवल अपने दुर्लभ मानव जन्म को निरन्तर खोता चला जा रहा है । बाहर तो तूने खुद ही बोर्ड लगा रखा है लिखकर "आश्रम" लेकिन अन्दर

का धन्धा तो भाई तेरे सिवा और कौन जान सकता है सुपने में भी ? गुप्त कार्य जो ठहरा ! इसीलिये शायद रात तो क्या दिन में भी कुण्डी चढ़ी ही मिलती है । किसी भी नम्बर को ले ले सब का हाल किसी भी निकृष्ट से निकृष्ट "वेश्या" से भी बढ़कर के निचले स्तर का ही मिलेगा । हर दो घंटे में नया स्वाद चाहिये प्रत्येक नम्बर को नहीं दो तो देने वाले को ही थाली केवल अपने मुँह पर ही स्थापित करने पर मजबूर होना ही पड़ेगा निश्चित रूप से । आँख रूपी नम्बर को निरन्तर नये से नया पहले से बढ़ कर के रूप चाहिये है दो इंच की, पर जब सड़क पर चलती है तो कम से कम चार इंच की अवश्य बन ही जाती है तथा रडार की तरह घूमने भी लगती है । ये विशेष खूबी इसमें अपने आप ही प्रत्यक्ष हो ही जाती है स्वाभाविक रूप से "ऑटोमेटिक" जो ठहरी । यही हाल कान रूपी नम्बर का भी है, केवल इन्हीं रागों को निरन्तर बदलने के लिये अनन्त मनुष्य अपनी हस्ती दिन रात इसी में बर्बाद करते ही रहते हैं । और शेष नम्बरों का तो इन से भी बुरा हाल है । सड़कों पर ही नाचते-कूदते आपको पूरी दुनिया में ही अवश्य दिखाई देंगें । दूर से देखोगे तो ऐसा लगेगा कि सचमुच ये केवल एक पागल खाने से अधिक कुछ भी नहीं है । सब तेजी से सब (चारों) ओर भागते-दौड़ते नाचते कूदते ही केवल दिखाई देगें बस । और इस पागलखाने का अंश सृष्टि का सिरमोर अपने को स्थापित करने वाला "दुर्लभ प्राणी" जब अपने घर के बाहर

जहाँ वह रहने की कीमती कृपा अथवा दया करता या बरसाता है, लिखता है "आश्रम" तो आप को कैसा लगता है ? एक वेश्या के तथा जहाँ पर वेश्या रहती है उन वेश्यालयों के भी कुछ नियम अथवा मर्यादा अवश्य होते ही हैं । पर इस "दुर्लभ आश्रम" तथा इन आश्रमों में रहने वाले सृष्टि के सिरमोर "दुर्लभ मानवों" के पास कोई भी नियम अथवा रहत मर्यादा आपको ढूँढने से भी कभी सुपने में भी प्राप्त होना असंभव ही है ये आप निश्चित जानो । अगर आश्रम की जगह वेश्यालय लिख दिया जाये तो यकीनी तौर पर ये शब्द भी "अन्दरूनी कारस्तानियों" को ध्यान में रखते हुए बहुत छोटा ही साबित होगा । क्योंकि इस "विशेष-2 स्थानों" में रहने वाले "दुर्लभ प्राणी" बहुत उच्च श्रेणी के हजूर-दाता-महाराज-पातशाह-इत्यादि कैसे इन छोटे-2 लफजों से ब्यान भी किये ही जा सकते हैं । इसीलिये प्रभु जी ने ब्यान किया है कि जो आत्मा बिना अपने इस विशेष दुर्लभ अर्थ को प्राप्त करने के लिये-अपनी "हस्ती" निकृष्ट झूठे स्वादों पर ही केवल खर्च करने में व्यर्थ खो देती है, उस दुर्लभ मानव शरीर का मुख केवल थूकने योग्य ही है केवल । "जित मुख नाम ना उचैर - विन नावे रस खाइ । नानक ऐवे जाणिये तित मुख थुका पाह ।" अब विचार करो ये "थूक" कैसी है ? निश्चित रूप से ऐसी कदापि नहीं है जैसी कि आप समझ रहे हो इस मुँह के अन्दर की "झाग" फिर कैसी है ? इसे थोड़ा ध्यान से विचार करो कि फिर किस और प्रभु प्रेरणा है

। सोचो आप कौन हो ? आप शरीर नहीं केवल एक "आत्मा" ही हो "अविनाशी" प्रभु को प्रकाश अर्थात नाम की संज्ञा दी गई है । फिर नाम (प्रकाश) का अंश नाम (प्रकाश) के सिवा और हो ही क्या सकता है । लेकिन आप तो अपने को केवल एक शरीर अथवा मुर्दा ही समझे बैठे हो । समस्त स्वाद अथवा आनन्द केवल आप स्वंय ही हो । जब आप इस मुर्दे से अलग कर दिये जाते हो तो फिर क्यों ये मुर्दा स्वाद बताने अथवा लगाने में असमर्थ साबित हो ही जाता है । इन्द्रियाँ तो प्रत्यक्ष ही होती हैं । अर्थात यह एक मृत अथवा जड़-चमड़े के सिवा और कुछ भी नहीं है । जो भी स्वाद आप को मिलता है अथवा अनुभव में आता है वो केवल आप के अपने निजी भण्डार आनन्द के "रिफ्लेक्शन" के सिवा और कुछ भी नहीं है सुपने में भी । जिस दिन आप अपने को देख लोगे अथवा अनुभव कर लोगे यकीनी तौर पर आप इन समस्त झूठे स्वादों को तो अवश्य ही भूल जाओगे । आनन्द रूपी समुद्र की बूँद सिवाय आनन्द के और हो ही क्या सकती है ? अब ये तो इसकी ही अपनी निजी उत्कृष्ट बुद्धि ही है कि ये अपने आनन्द को भूल कर इस मुर्दे को ही मीठा मानती है तभी तो इसे मीठा बनाने के लिये ही केवल अपना पूरा जीवन ये इतनी व्यस्त रहती हैं कि इसे सिर उठाने की भी फुर्सत कभी भूले से भी नहीं प्राप्त होती । प्रभु आपकी इस प्यारी दिन-रात की अकथ मेहनत को "चार चाँद" अवश्य ही लगा दे ताकी आप इस कीमती मुर्दे को

कभी मीठा अथवा स्वादिष्ट बनाने में सफल हो सको । कब्र बोलने लगे ऐसा दुर्लभ कार्य आप कौन से युग काल में सम्भव कर सकोगे । कब्र भी कभी बोली है जो आप उन को रोशन करने में लगे हो, उन्हें मत्थे टेकते हो, उन पर चिराग जलाते हो मन्नतें माँगते हो । आप की इसी अज्ञानता का कोई बहुत चालाकी से फायदा उठाता चला आ रहा है अनन्त काल से । खाती-देखती-सुनती-चलती-फिरती इत्यादि समस्त कार्य केवल आत्मा ही करती है । लेकिन भ्रम से आप ने मान रखा है कि मुर्दे से ये सब कार्य कब कभी सुपने में भी होने सम्भव हो सकते हैं क्या ? अर्थात कदापि हरगिज़ नहीं ! फिर भी अनन्त काल से आप निरन्तर केवल बुद्धिहीनता का ये दुर्लभ कार्य करते ही चले आ रहे हो । यदि आप अपने इस निजी ज़िन्दगी भर के अनन्त जन्मों के "होम वर्क" को सम्पन्न कर लो अर्थात आप अपने को प्रत्यक्ष अनुभव कर लो तो अवश्य आप अपने मुँह पर पड़ने वाली इस "थूक" से निश्चित रूप से बच सकते हो । जिसे आप दिन-रात चूमने-चाटने तथा सजाने इत्यादि में ही लगे रहते हो, वो केवल एक चौदह इन्द्रियों की स्वाद वाली कीमती थूक के सिवा और कुछ भी नहीं है । ऐसी अनन्त थूकें इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" ने अपने इस मुल्क अथवा कैदखाने में प्रत्यक्ष कर रखी हैं । इन रंग-बिरंगी थूकों से बचना चाहते हो तो केवल अपने को इन रस से भरे झूठे स्वादों से ऊपर उठाओ । केवल डेढ़ फुट की

दूरी ही तो दूरी है जो आप आज तक अनन्त काल बीत गया तय ही नहीं कर सके । "बोहड़े दी खोती जित्थों चली उस कोलों भी पिछे खलोती" अर्थात तुझे तो आगे बढ़ना था ऊपर उठना था, कि इन स्वादों के चक्कर में अपने इस दुर्लभ जन्म को ही व्यर्थ खो देना था । इसी का जुर्माना भुगतने के लिये तुझे निकृष्ट योनियों में धक्के खाने पड़ते हैं । इसी को कहा है कि जहाँ से चली थी तूं अपने को वहाँ पर भी केवल स्थिर न रख सकी केवल इन स्वादों के चक्कर में !

"पहिलां मांसह निमिआ मासै अन्दर वास । जीउ पाई मांस मुह मिलिआ हड चम तन मास । मासह बाहर कढिआ मंमा मास गिरास ।" मुंह मासै का जीभ मासै की मासै अंदर मास । वडा होआ वीआहिआ घर लै आईआ मास । मासह ही मास उपजै मासह सभो साक । सतिगुर मिलिअै हुकम बुझीअै तां को आवै रास । आप छुटे नह छुटीअै नानक बचन बिणास । मास मास कर मूरख झगड़े गिआन धिआन नहीं जाणे । कउण मास कउण साग कहावै किस मह पाप समाणे । गैंडा मार होम जग कीये देवतिआ की बाणे । मास छोड बैस नक पकड़ह राती माणस खाणे । फड़ कर लोकां नो दिखलावह गिआन धिआन नहीं सूझै । नानक अंधे सिउ किआ कहीअै कहे न कहिआ बूझै । अंधा सोई जि अंध कमावै तिस रिदै सि लोचन नाही । मात पिता की रक्त निपंने मच्छी मांस न खांही । स्त्री पुरखै जा निसि मेला ओथै मंध कमाही

। मासह निंमे मासह जमै हम मासै के भांडे ।" इस वचन से इस सृष्टि में आने पर जीव के कार्य करने के साधन अर्थात शरीर की रचना को ब्यान कर, प्रभु जीव के भ्रम को दूर करते हैं । कि जरा सोच तो सही कि तूं इस मृत लोक अर्थात मुर्दो के देश में प्रत्यक्ष कैसे हुआ है विचारणीय विषय है । जब उस अकाल पुरख परमात्मा की विशेष दया, जिस जीव पर उतरती है तो उसे प्रभु तक पहुँच जाने का साधन ये उत्तम मनुष्य शरीर प्राप्त होता है । अब इस श्रेष्ठ घोंसले अथवा शरीर को जीव कैसे प्रत्यक्ष करता है तथा उसका आधार क्या है प्रभु जी ने स्पष्ट किया है । जब पुरुष का "वीर्य" जो केवल माँस अथवा खून के और कुछ भी नहीं है, उत्पन्न होता है । इसका आधार भी अन्न ही है । सौ कोर अन्न के खाने पर केवल एक तोला खून प्रत्यक्ष होता है । फिर सौ तोले खून जब "बलि के बकरे" बनते हैं तो केवल एक तोला वीर्य प्रत्यक्ष होता है इसे आप निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो। केवल एक बूँद वीर्य में ही लाखों आत्मायें सूक्ष्म अदृश्य शरीरों में कैद होती हैं । इसे कहाँ और कितना खर्च करना है इसे आप इसकी "कीमत" समझ करके ही ठीक फैसला कर सकते हैं । केवल स्वाद के चक्कर में आप इसे अगर अधिक खर्च कर देगें तो आप को इसकी कीमत अपने प्राणों तक की आहुति दे कर के भी चुकानी पड़ सकती है । इतिहास साक्षी है । कौरवों के पित्तर राजा शांतनु

के दोनों पुत्र केवल सीमा से अधिक इस "काम के व्यवहार" को अपनाने के कारण ही यक्षमा (चाँद रोग) रोग से पीड़ित हो कर के इस संसार को छोड़ने पर "मजबूर" हो गये । यह रोग केवल वीर्य के अधिक मात्रा में नष्ट अथवा व्यर्थ हो जाने पर ही उत्पन्न होता है । ये दोनों भाई दिन-रात अपनी सुन्दर स्त्रियों के "हरम" में ही अपने इस "श्रेष्ठ कार्य" को करने में ही व्यस्त रहते थे । जिसका नतीजा प्राणों की आहुति के रूप में प्रत्यक्ष हुआ । अब राज कौन चलाये ? भीष्म तो ब्राह्मव्रत में थे तथा सभी कार्यो से अलग केवल तप में ही व्यस्त रहते थे । तब कुल गुरू "व्यास मुनि" के सम्बन्ध से पुत्र उत्पन्न किये गये तथा राज कार्य प्रत्यक्ष हुआ । ऐसी ही एक मिसाल महात्मा बुद्ध के इतिहास में भी प्रत्यक्ष है । "अन्धों" के मार्ग-दर्शन हेतू । शिष्य का महाप्रभु से इसी काम के मुतलक प्रश्न । कि मैं इसके बिना नहीं रह सकता । मुझे कितनी बार करना चाहिये । तब प्रभु कहने लगे कि सन्यासी को तो इसकी बिल्कुल भी इजाजत "मानसिक रूप" में भी नहीं है । फिर गृहस्थी को केवल प्रजा उत्पन्न करने के लिये । ऋतू स्नाना समागम ही गृहस्थ का ब्रह्मचार्य है, गृहस्थ के बाद वनप्रस्थ तथा सन्यास में तो इसकी भी इजाजत सुपने में भी नहीं है । शिष्य-अगर फिर भी न रहा जाये तो ? प्रभु महीने में दो बार । शिष्य-फिर भी न रहा जाये तो ? प्रभु -हफते में एक बार । शिष्य-यदि फिर भी न रहा जाये तो । प्रभु कहने लगे कि फिर ऐसे प्राणी को

इस कार्य में रत होने से पहले बाजार जाना चाहिये तथा अपने लिये उत्तम श्रेणी के "दो कफन" अवश्य खरीद कर के रख लेने चाहिये ताकि उस विशेष घड़ी में बाज़ार न दौड़ना पड़े, हो सकता है उस समय बाजार बंद हो । इन मिसालों से इस वीर्य की महत्ता पर प्रकाश पड़ ही सकता है । योग श्रेणी की आत्मायें "ऊर्ध्वमुखी" हुआ करती हैं । इसलिये अभ्यास से वे अपने अन्दर उत्पन्न होने वाले वीर्य के "तेज" (प्रकाश रूपी ताकत) में बदलने में समर्थ हो जाती हैं । इसीलिये उन के शरीर में से निरन्तर इस तेज रूपी प्रकाश की किरणें निरन्तर प्रत्यक्ष होती ही रहती हैं तथा उनके आस-पास चारों तरफ के वातावरण को भी, ये उनके शरीर से निकलने वाला "दिव्य तेज" रूपी प्रकाशित किरणें निरन्तर प्रभावित करती ही रहती हैं । आस-पास के अणु-परमाणुओं के प्रभावित होते रहने के कारण ही जब भी कोई दूसरा प्राणी कैसी भी वृति का हो उनके सम्पर्क में अथवा नजदीक आता है तो इस पर भी इस "तेज" रूपी प्रकाश से प्रभावित परमाणुओं का प्रभाव पड़ता ही है तथा जैसी शान्तमय वृति उस दिव्य योगी महात्मा की होती है, वैसा ही शान्ति का अनुभव सम्पर्क में आने वाला प्राणी भी अनुभव करता ही है विलक्षण रूप से । इसी नियम के कारण यदि आप "कामी जनों" के सम्पर्क में आओगे तो आप को अवश्य उतेजना का ही अनुभव होगा । ऐसी एक मिसाल इतिहास में दर्ज है । आजादी के समय एक हिन्दू समाज को प्रचारित

करने वाले ऐडिटर को अंग्रेजों ने जेल में नजर बंद कर दिया । वहाँ उस कोठरी में जिसमें कि उसे कैद किया गया था जब भी कुछ विचार कर लिखना चाहे, तो कुछ लिखना तो दूर "कत्ल" इत्यादि करने के ही ख्याल उत्पन्न हुआ करें । बहुत सोचने पर भी जब समस्या हल न हुई तो उसने अपने भाई को आश्रम में पत्र भेजा जो सन्यासी हो चुका था और अपनी समस्या उसे ब्यान किया । तब सन्यासी भाई ने उत्तर दिया कि भाई मैं पहले जगह देखूँगा, फिर ब्यान करूँगा कि इसका क्या कारण हो सकता है । फिर जब सन्यासी भाई जेल में पहुँच कर उसकी कोठरी में उससे मिला तो उसने समस्या का हल "जगह बदलने" को बताया । बाद में जांच करने पर पता चला कि इस कोठरी में एक संगीन अपराधी उम्र कैद की सजा भुगतने वाला काफी लम्बे समय तक कैद रखा गया था । जिस पर बीस से अधिक मनुष्यों के "कत्ल" करने का अपराध साबित हो चुका था । निरन्तर हत्या का विचार ही ध्यान में रखने वाले प्राणी के सम्पर्क के कारण ही वहाँ का वातावरण दूषित हो चुका था तथा जो भी उस दायरे में आता था उस दूषित वातावरण का प्रभाव उस के सम्पर्क में आने वाले प्राणी पर भी पड़ता ही था । तथा वह भी उसी तरह के विचार "हत्या" इत्यादि करने पर मजबूर हो ही जाता था । फिर जैसे ही ऐडिटर ने जगह को तबदील करवाया उस की समस्या अपने आप ही हल हो ही गई । इसीलिये कहा जाता है कि "परमार्थी" को तो "सच्चे

परमार्थी" का संग ही केवल कल्याणकारी हो सकता है । मुखौटे वाले परमार्थी तो बकरी की खाल में छुपा "खूनी लोभी भेड़िया" ही सबित होगा ! ये खून तथा माँस का लोभी भेड़िया कब आप की इस सुन्दर चमड़ी अथवा खून पर जुगाली करने लगेगा अथवा "हाथ साफ" कर जायेगा, आप सुपने में भी ऐसे सफेदपोश गद्दों पर सुशोभित होने वाले मीठे-2 रस से भरे दुनिया को मुरब्बे बांटने वाले अन्दर से काले तथा काने प्यारे-2 भेड़ की खाल में छुपे हुए भेड़ियों को जानने में कभी भी समर्थ हो ही न सकोगे । चाँद रोग (यक्षमा) भी इसी समस्या को प्रत्यक्ष करता है । चाँद देवता अपनी सालियों के चक्कर में दिन रात इसी श्रेष्ठ व्यवहार में उलझे रहे तथा क्षीण होकर के जब प्राण ही त्यागने पर उतारू होने लगे, तब समय पर पता लग जाने के कारण समस्या विचार कर उन्हें इस श्रेष्ठ धन्धे से उपरति किया गया तब कहीं जा करके उनके प्राण बचे । नहीं तो सालियों से "आँख-मटक्का" तो बेचारे जीजे के प्राण ही वसूल करने पर उतारू हो गया था । इसीलिये इस रोग को आयुर्वेद में इसी के नाम "चाँद" पर ही प्रचारित कर दिया गया । नैपोलियन भी उसी दिन हार को प्राप्त हुआ जिस दिन वो "वीर्य दान" करके मैदान में उतरा था ।

भीष्म ग्यारह दिन अकेले सेनापति रहे अठारह दिन के युद्ध में तो इसी ताकत के बल पर और गिरे भी तो केवल अपने

नियम की ही खातिर ! इसी तरह से अनन्त मिसालें आप के अपने ही इतिहास में पत्थर की लकीर की तरह प्रत्यक्ष होंगी । जिस दुर्लभ संस्कृति अथवा विरासत में मिले ज्ञान को जो मुनियों की मानव जाति को एक महान उत्कृष्ट देन है जीव के कल्याण हेतू- आप ने इन विद्वानों (केवल मूर्ख श्रेणी के) गद्देधारी बने निकृष्ट नकली परमात्माओं के पीछे लग कर के ठुकराने का अपराध किया है । इसी अपराध की बहुत बड़ी कीमत आपको केवल अज्ञानता के अन्धकार रूपी अंधे कुँऐं में डूब करके चुकाने पर मजबूर होना पड़ रहा है । विदेशियों को सभ्य अथवा सभ्यता लफज से जोड़ना ही संस्कृति नाम के लफज की ही तौहीन है । इन लोभ तथा काम (कामनाओं) के अथाह समुद्र में डूबी आत्माओं का संग अथवा अनुसरण आप का कैसे कभी भी किस काल में कल्याण करने में समर्थ हो सकता है ? इनसे तो पेड़ों पर रहने वाले जंगली मनुष्य ही बेहतर हैं । जो स्वयं ही केवल डूबता है दूसरों के डूबने हेतू समुद्र (वासनाओं) दलदल का, वो तैयार करके डूबने के हेतू तो प्रस्तुत नहीं करता । इनमें भी कुछ निरमल आत्मायें अवश्य हैं ! पर तूं अंधा बहरा कैसे उन्हें पहचान ही सकता है । इसलिये इनकी प्रत्येक "चीज" को तूं आँख बंद करके प्रयोग में मत लाना शुरू कर दे । तुझे बुद्धि दी है प्रभु ने, खूब सोच विचार करके प्रत्येक छोटी से छोटी चीज को भी अपना । जब अपने घर में ही तेरी अपनी ही खाल में भेड़िये खूनी-माँस के लोभी

छुपे बैठे हैं तो बाहर से तुझे मीठे-2 फल वो भी "शाही आम" के मिलने कैसे संभव हो सकते हैं । जरा सोच तो सही । इसका मुख्य कारण विरासत में मिले अपने कीमती ज्ञान को ठुकरा देना अथवा भुला देना । कौन सी बाणियों के चक्कर में तू अपनी हस्ती को मिटाने में लगा हुआ है । प्रभु अकाल पुरख परमात्मा की उत्कृष्ट देन अथवा अपनी आत्मिक प्रेरणा-आत्मा के कल्याण के हेतू केवल इशारे के रूप में लिख करके "श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी" के रूप में तेरे सामने प्रत्यक्ष कर दी है । इसे भुला कर तू इन "लोभी खूनी भेड़ियों" के चक्कर में अपनी हस्ती क्यों निरन्तर डुबाता चला जा रहा है । इसे पढ़ने का तेरे पास समय नहीं इस किताब को खरीदने के लिये तेरे कुल को पिछली सात पुश्तों से "अकाल" की भयानक स्थिति का सामना करना पड़ रहा है । फिर "भेड़िया विशेष" तेरी इस कंगाली का दुर्लभ अवसर कैसे निकल जाने देगा ? गल्ती तेरी अपनी ही कमाई हुई है । गर्भ-निरोध के समस्त साधन-व्यवहार काम, अथवा कामनाओं के तेरी छोटी सी "दुर्लभ झोपड़ी" में भी अवश्य कितने विशाल अथवा कीमती होने के बावजूद तेरी इस दुर्लभ झोपड़ी रूपी आश्रम में आखिर समा ही जाते हैं । "रस सुइना-रस रूपा-कामण रस पारमल की वास । रस घोड़े-रस सेजा मंदर-रस मीठा-रस मास । ऐते रस सरीर के के घट नाम (केवल प्रकाश) निवास ।" प्रभु के इस वचन से स्थिति स्पष्ट हो ही जाती है कि ये कंगाली तेरी

पुश्तैनी केवल उस परमात्मा से जुड़ने के लिये साधनों को उपलब्ध करने के हेतू ही केवल है । बचना चाहता है तो केवल इस किताब में प्रभु प्रेरणा अनुसार अपना व्यवहारिक जीवन जीने का ही केवल दृढ़ निश्चय प्रत्यक्ष करता चल । तभी तू इन लोभी धर्म के ठेकेदारों के पंजे से मुक्त होने का "दुर्लभ सुपना" साकार का सकेगा जब तू स्वंय इस किताब के अनुसार अभ्यास करेगा निरन्तर । केवल पढ़ने अथवा सुनने से तेरा कल्याण कभी सुपने में भी सम्भव ही नहीं है । फिर तूं तो पढ़ने-सुनने से भी दूर ही रहना पसंद करता है । अगर करता भी है तो केवल मत्था टेक देता है तथा अपना खोटा जहर अर्पण कर गोल-2 घूम कर ही केवल अपने को मुक्त समझे बैठा है । फिर इनका क्या होगा जो केवल सड़क पर चलते हुऐ ही गर्दन कुछ इस तरह से टेड़ी करते हैं कि कहीं इस बेचारी सुन्दर नागिन में बल ही न पड़ जाये और बदले में पूर्ण मुक्ति गाँठ बाँध करके ले जाते हैं । यदि तेरे इन धन्धों से कुछ अर्थ निकलता तो फिर इस प्रेरणा को प्रत्यक्ष करने का प्रभु जी को विचार किस लिये आया "पड़ीअह जेते बरस-बरस-पड़ीअह जेते मास-पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअह जेते सास-नानक लेखे "इक गल" ? होर हउमै (शैतानी ताकतें) झखणा झाख ।" वो इक गल कौन सी है ? विचार कर । केवल मनुष्य जन्म का कल्याण ! किस में हैं ? केवल उस प्रभु (प्रकाश केवल) को प्रत्यक्ष अनुभव कर लेना अपनी आखिरी मौत की घड़ी से पहले ! यदि तेरा ये दुर्लभ अनन्त

जन्मों का होम वर्क तेरे इन धन्धों से आसान होता है अथवा छोटा हो जाता है तो दिन-रात इसी में लगा रह अवश्य । और यदि यह नहीं हुआ तो फिर सोच ले इसका जुर्माना केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के समझ तुझे ऐड़ियाँ रगड़ने अथवा तड़पने पर अवश्य मजबूर कर ही दिया जायेगा । निश्चित रूप से केवल यही नतीजा निकल चुका है तेरी इस समस्त व्यर्थ की कारस्तानियों का । केवल प्रत्यक्ष होना बाकी है और वह भी जैसे-2 समय बीतता जायेगा, सब कुछ प्रत्यक्ष अपने आप होता ही जायेगा । जब तूं "ऑटोमैटिक यंत्र" प्रत्यक्ष कर सकता है तो तेरे जैसे अनन्त-2 यंत्रों को प्रत्यक्ष करने वाले के लिये ये सब कुछ क्या अर्थ रखता है जरा सोच तो सही अनन्त काल तक की लिखित हो चुकी है । कब किस युग काल अथवा समय में किस प्राणी के हृदय में कौन सी लहर उठेगी, उसे भी वो पहले से ही जानता है और उसका इलाज करके लिखकर रख दिया है ! केवल समय बीतता जायेगा और ये सब प्रत्यक्ष होता जायेगा इसे तूं निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । फिर क्यों तू इन "खूनी लोभी भेड़ियों" अथवा मोटे-2 गद्दो पर आसीन होने वाले झूठे तथा नकली महात्माओं के चक्कर में अपने को मिटाने में ही तुला हुआ है । लुटता वही है जो सोया अथवा मोहित रहता है । फिर जो जागना चाहता है अवश्य जगा दिया जाता है । जो बचना चाहता है उसे अवश्य "कोई" बचा ही देता है । जो अपनी चौकीदारी करता है

अवश्य निश्चित रूप से कोई और भी उसकी सुरक्षा करता ही है । और ये सब कार्य एक ही समय में सब के साथ करने वाला उस अकाल पुरख परमात्मा के सिवाय और कौन कभी भी किसी भी काल में सुपने में भी समर्थ हो सकता है ? अर्थात और कोई भी ताकत इस कार्य को करने में कभी सुपने में भी समर्थ हो ही नहीं सकती । इस पर विचार करना ही केवल उसकी तौहीन करना मात्र ही है । जो इस "जंग पलंगे" को केवल प्रत्यक्ष ही नहीं करता केवल निरन्तर इसे धारण भी करता ही है । और तूं दौड़ रहा है मत-धर्म को चलाने वाले अधूरे खूनी लोभी भेड़ियों के पीछे । जब तेरा दुर्लभ हिसाब "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" करने लगेगीं, हो सकता है कि तेरी प्यारी-2 शक्लें जिनका तूं ध्यान किये बैठा है "टायलेट विशेष" में कुछ जरूरी कार्य निपटा रही हों । जब तक ये शक्लें अपने इन जरूरी-2 धन्धों से निपटेंगी उतनी देर में तो तेरा "दुर्लभ आत्मिक प्रकाश" किसी दुर्लभ "पार्क विशेष" को रोशन करने के लिये अवश्य मजबूर कर ही दिया जायेगा । इसे तूं निश्चित रूप से अवश्य ही गाँठ बाँध ले । कोई भी आत्मा एक समय में व्यापक होने में सदा ही असमर्थ है । इसीलिये इसे अधूरी तथा अल्पज्ञ लफजों से ब्यान किया जाता है । समर्थ तथा व्यापक केवल शब्द (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) अथवा अकाल पुरख परमात्मा ही है । तू उसे ही भूला बैठा है और केवल मुर्दा

अथवा प्रेतों (बीत गयों) का ही ध्यान करने में अपने को श्रेष्ठ स्थापित करने में लगा हुआ है । फिर कौन तुझे बचायेगा ज़रा सोच तो सही ? कहाँ ढूँढेगा इन प्रेतों (बीत गये) को ! जीते जियों से तो तू इन शक्लों को नजदीक से देखने में भी कई "सच्ची-झूठी भयानक खाइओं" को लांघने पर मजबूर होता है फिर इन मुर्दों (शरीरों) को अथवा कब्रों को देख लेने से ही तुम्हें कैसे उस परम चेतन सत्ता के दर्शन सुलभ हो जाते हैं ? कब्रों को देखने से केवल आत्मा का कल्याण असम्भव ही बना रहता है प्रत्येक काल में । "सतगुर (गद्धीधारी रूपी बने बैठे नकली परमात्मा) नो सभ को वेखदां जेता जगत संसार ।" "डिठया" मुकत न होवई जिंचर सबद (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) न करे विचार (केवल प्रत्यक्ष कर लेना उस परम चेतन सत्ता को) ।" आप इन निकृष्ट लोभी खूनी भेड़ियों के चंगुल में फंसोगे इसीलिये सैकड़ों साल पहले ही प्रभु ने तुझे सावधान कर दिया था । पर तूं फिर भी नकली चमक (सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें) को "हीरा" समझ कर धोखा खा ही गया । यही होता है लिखित प्रभु प्रेरणा अनुसार व्यवहारिक जीवन न जीने का निश्चित नतीजा, घोर सूक्ष्म लोकों के उत्कृष्ट यातनाओं से भरे हुए पार्क अथवा नरक । अर्थात जब तक कोई बड़ी ताकत तुझे बचायेगी नहीं सहारा नहीं देगी तो कैसे तूं इस जेलखाने से अपने को मुक्त करवा सकेगा ? और मदद तब मिलेगी केवल जब व्यवहारिक जीवन जियेगा ! जैसे वीर्य एक

कीमती पदार्थ है इस शरीर का, उसी तरह से "रज" भी एक कीमती पदार्थ है स्त्री के शरीर का, जो केवल एक माँस तथा खून के टुकड़े के सिवा और कुछ भी नहीं है । जब इन दोनों का संयोग होता है तो इसे जाइगोट अथवा "भ्रूण" कहा जाता है । जो केवल माँस का खून में डूबा हुआ एक टुकड़ा मात्र ही है । इस रज में केवल एक ही आत्मा प्रवेश कर पाती है, वीर्य में कैद करोड़ों सूक्ष्म शरीरों को सुशोभित करने वाली आत्माओं में से । और वो आत्मा केवल वही होती है जिसका आप से जन्मों-2 का सम्बन्ध होता है । अर्थात कुछ हिसाब लेना अथवा देना ही केवल इस क्रिया यानी के ममता रूपी शक्ल का मुख्य मकसद मात्र है । कोई यदि आप से कुछ याचना करे कितनी भी दीन हालत में तो आप के यहाँ "पुश्तैनी अकाल" चल रहा है अर्थात निश्चित रूप से आप कंगाल हो ऐसा आप तुरन्त साबित कर ही दोगे ? परन्तु जब ये तोतली जुबान वाली नर्म-2 शक्ल यदि जरा सी भी ज्यादा गर्म हो जायेगी तो आप तुरन्त अन्न-जल का त्याग कर के सारी रात उल्लुओं की तरह से जाग कर के केवल सिरहाने बैठकर के ही काट दोगे । और "कसाईओं विशेष" के लिये आप के गुप्त खजानों के मुँह अवश्य ही खुले ही रखे जायेंगें भला ये भी कोई कहने वाली बात है । कारण एक ही है, ममतामयी प्यारी-2 शक्ल । यदि इस शक्ल रूपी आवरण को भूले से भी यदि हटा दिया जाये तो आपको हम यकीन से कहते हैं कि जिसे आप ने अभी-2 अपना रक्त दान

किया है न, इस कीमती दुर्लभ दान को तो सुपने में भी करना पसन्द ही न करोगे । बल्कि उल्टा केवल इस प्यारी सी शक्ल में निहित शेष बचे हुऐ खून से ही अपनी प्यास बुझाना श्रेयस्कर समझोगे इसे आप निश्चित रूप से जान लो । यदि एक से अधिक आत्मायें रज में प्रवेश करती हैं तो वो भी केवल इसी भुगतान की श्रेणी की आत्मायें ही हुआ करती हैं । अगर यदि प्रयत्नों के बावजूद संयोग नहीं होता तो इसका परमार्थ में केवल एक ही अर्थ होता है कि आप के ज्यादातर हिसाब-पिछले जन्मों में आप भुगत चुके हो । आप शेष दूसरे भुगतान करने वाली आत्माओं से ऊपर की श्रेणी में पहुँच चुके हो और अब आप को आगे का रास्ता तय करने के लिये निश्चित रूप से दृढ़ता के साथ चलते रहना चाहिये । प्रभु की विशेष कृपा से आप को बहुत सी जिम्मदारियों के भुगतान रूपी आवश्यक विघ्नों से बचा दिया गया है । यह न विचार कर आप उल्टा अपने को अधूरा अर्थात भाग्यहीन समझते हो तथा फिर से जिम्मेदारियों का बोझा ढोने के लिये आप "जादू-मन्तर" आदि का धन्धा करने वाली "खूनी लोभी भेड़ियों" के चक्कर में अपनी दुर्लभ हस्ती उपलब्ध पदार्थों सहित खोने में ही केवल अपनी शान समझते हो । जिस का आप से कुछ भी लेन-देन बाकी नहीं है सोचो कैसे वो आप के पेट के अन्दर प्रवेश करने में किसी भी उपाय से कभी भी किसी भी काल में समर्थ हो सकती है सुपने में भी । क्योंकि कोई जड़ चेतन में निरन्तर

समाया हुआ हर सूक्ष्म से भी सूक्ष्म क्रिया पर बड़ी कड़ाई से नज़र रखता है । केवल उसकी रजा के बिना कोई भी क्रिया कैसे होनी संभव है सुपने में भी । क्योंकि जड़ चेतन केवल उस एक के सिवा और कुछ भी नहीं है निश्चित रूप से जान लो । आप केवल प्रयोग कर सकते हैं आत्मा कहाँ से लाओगे विचारो ? थोड़े में अधिक विचारो शेष सब कमाई से अनुभव आने लगता है । शेष सारा उल्टा प्रचार भाग्य हीनता का केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" का एक भयानक जाल मात्र है जिसमें से चालाक से भी चालाक तथा सूक्ष्म मछली रूपी आत्मा कभी सुपने में भी नहीं निकल सकती । संसार में जो कुछ भी प्रचलित है वो केवल असल से ठीक उल्टा ही है । इसी "प्रभु वाक्य" अथवा प्रेरणा को आप सभी क्रियाओं में तबदील कर के समझ लो । आप रूप रहित अति सूक्ष्म हो केवल पर इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" ने आप को रूप तथा स्थूल स्थापित कर रखा है बड़ी दृढ़ता से । आखिरी घड़ी में जब सच सामने आता है तो आप रोते-पीटते हो पर कर कुछ भी नहीं सकते । इसीलिये फकीर (भिखारी केवल) सच से जुड़ता है तो संसार में उसे "पागल" करार करवा दिया जाता है सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों द्वारा । क्योंकि फकीर की नजर में संसार उल्टा । अब फैसला केवल आत्मा को स्वंय ही करना होता है कि ऐसी भाग्यहीनता किस "दुर्लभ" के भाग्य में लिखी है । और

इन दुर्लभ भाग्यहीन आत्माओं में से कौन अपनी मंजिल की ओर बढ़ने पर अपने "निजी दृढ़ निश्चय" को प्रत्यक्ष करने में समर्थ हो सकेंगी । उल्टा ऐसी दुर्लभ आत्मायें संसारियों (सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों के प्रत्यक्ष व्यवहारिक रूप) के "निकृष्ट संग" के कारण अपना "दुर्लभ कीमती मानुख जन्म" जो प्रभु जी की विशेष कृपा से विघ्न रहित बनाया गया था केवल रोने-पीटने अथवा स्वंय को भाग्यहीन समझ भुगतान रूपी सामान को ही एकत्र करने अर्थात ऐसा "निकृष्ट भाग्यवान" बनाने में ही स्वंय को इस परमात्मा से मिले "दुर्लभ अवसर" से सदा के लिये खो बैठना ही बुद्धिमानी समझती है । जब कोई बहुत प्यारी शक्ल आपको मोहित किये रहती है तो इसका केवल एक ही अर्थ अथवा भाव रहता है कि उस आत्मा का कोई विशेष बड़ा भुगतान आप के साथ लेने अथवा देने का है । और यदि बीच में ही छोड़ जाती है तो उसका एक ही भाव रहता है कि भुगतान चुक गया अब प्रत्यक्ष रहने का उस आत्मा का क्या कार्य ? इतिहास में एक बार एक सन्यासी भिक्षा को निकले तो एक जगह सेठ अपने महल की बनवायी का प्रबन्ध कर रहे थे और कारीगर से कह रहे थे कि चित्रों पर ऐसा गाड़ा रंग भरे कि सात पुश्तों तक दृढ़ रहे । सन्यासी इस वचन पर केवल मुस्कराये और आगे बढ़ गये । सेठ जब घर पहुँचे तो बातचीत करते पत्नी से बच्चा लेकर के गोद में उठा लिया

और खाने बैठ गये । इतने में बच्चे ने पेशाब कर दिया । कुछ छीटें थाली में भी पड़े ही अन्जाने में पर इस मोहिनी सूरत के मोह में डूबे सेठ को इस ओर कोई ध्यान ही नहीं हुआ और बाहर "अलख" की आवाज हुई । वही सन्यासी खड़े थे और इस क्रिया को देख मुस्कुरा रहे थे । सेठ कुछ समझ न सका कि इस मुस्कुराने का क्या भेद हो सकता है । फिर सेठ दुकान पर पहुँचे, प्रबन्ध देख ही रहे थे कि एक बकरा उन की दुकान के बाहर रखे अन्न पर जुगाली करने लगा । सेवक के बार-2 हटाने पर भी वो इस क्रिया से अलग नहीं हुआ । तो सेठ ने उसके सिर पर डण्डा बजा दिया, पर वो फिर भी न माना और बड़ी दयनीय हालत में तरसता हुआ सेठ के मुँह को ही निहारता रहा । इतने में कसाई दौड़ता हुआ आया और इसे बाँध कर घसीट कर ले जाने लगा । बकरा बड़ी दयनीय हालत में सेठ की नजरों से नजरें मिलाने लगा और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, पता नहीं सेठ को क्या सूझा कि उसे बकरे पर दया आ गई उसने कसाई से बकरा छोड़ने को कहा तो उसने सेठ से छोड़ने की कीमत दो पैसे माँगी । सेठ ने सोचा कि ये मेरे किस काम आयेगा, ये तो आज घाटे का सौदा हो गया तब अपना नुकसान बचाने के लिये सेठ ने एक पैसा कीमत देनी चाही । क्योंकि छोड़ने की जुबाने देने पर पीछे हटना सेठ को अपनी जुबान से ठीक नहीं लगा । धर्म-कर्म का जमाना था लोग केवल सच पर यकीन अथवा आधारित रहा करते थे ।

एक पैसे का घाटा भला कसाई को कैसे हज्म हो सकता था, कहने लगा मैं शाम तक इसके ढाई पैसे तो अवश्य बना ही लूँगा । मैनें तो पहले ही आधा पैसा कीमत कम ही माँगी है, अपनी मेहनत काटने-बेचने की छोड़ करके । पर सेठ नहीं माना असल में तो सेठ चाहता ही यही था कि सौदा बिगड़ जाये ताकी घाटा न उठाना पड़े । आखिर कसाई ने बकरे को बाँधा और डंडे बरसाता हुआ घसीट कर के वहाँ से ले ही गया । बकरा बेचारा रोता-पीटता चिल्लाता ही रहा और बार-2 सेठ का मुँह दयनीय हालत में देखता ही रहा आँसू बहाता हुआ । पर सेठ मुँह फेर लेता था, उसकी दयनीय नजरों का सामना करने का उसका साहस ही नहीं पड़ता था । इतने में उसने देखा कि दूर खड़ा वही सन्यासी धीरे-2 मुस्कुरा रहा है । हालत उसकी पहले से ही खराब थी इस मुस्कुराने से वो और परेशान हो गया । उसने सन्यासी को पास बुला कर उसका स्वागत किया और आखिर उसके मुस्कुराने का "राज" पूछा । पहले तो सन्यासी ने कुछ नहीं बताया फिर उसकी दयनीय हालत देखकर के सन्यासी को पता नहीं क्यों दया आ ही गई । फिर उसने अपने ठिकाने का पता बता करके उसे वहाँ पहुँचने को कहा । कुछ देर बाद फेरी लगाकर जब सन्यासी डेरे पर पहुँचा, तो सेठ बड़ी दयनीय हालत में वहाँ पर पहले से ही बैठा था । शीघ्र ही मतलब की बात पर पहुँच कर सेठ ने सन्यासी से उसके इस मुस्कुराने का भेद जानना चाहा । तब सन्यासी ने ब्यान दिया कि

जब तूने कारीगर से यह कहा कि सात पुश्तों तक रंग रहना चाहिये तो मुझे इसलिये हँसी आ गई कि तेरी जिन्दगी के कुल सात दिन बाकी हैं । तूं इन रंगों को कभी देख भी नहीं सकेगा, फिर पुश्तों का क्या सवाल ? ये वाक्य सुनते ही सेठ खड़ा हो गया उसका हल्क सूखने लगा, वो समझ ही नहीं पाया कि क्या करे मुँह से झाग निकलने लगी-पसीने छूटने लगे-आकाश घूमता दिखाई देने लगा । ऐसी दयनीय हालत देख सन्यासी ने सेठ को सहारा दिया बैठाया फिर से और पानी पिला कर पंखा झलने लगा । कुछ देर बाद जब सेठ की हालत कुछ स्थिर हुई तो सेठ ने घर पर मुस्कुराने का कारण पूछा । सन्यासी ने कहा कि तूं हजम नहीं कर सकेगा, मत पूछ तो बेहतर है । तब सेठ ने कहा कि अब बचा ही क्या है जो लोभ रखूँ । आप बता ही दो । जब सेठ ने जिद की तब सन्यासी ब्यान देने लगा कि सेठ तेरी गोद में जो तेरा प्यारा सा बालक खेल रहा था न, जिसके पेशाब के छींटे तेरी खाने की थाली में भी पड़े थे, पर तूने उसका कोई बुरा नहीं माना था और इस उच्छिष्ट खाने को तूने बड़े प्यार से खा भी लिया था । ये बच्चा पिछले जन्म में तेरी इसी पत्नी का "जार प्रेमी" था "कुल की मर्यादा" का ख्याल रखते हुऐ तूने पत्नी को समझाया था पर वो नहीं मानी । इस "जार प्रेमी" को भी तूने बहुत रोका-पर वो तो रूप का दीवाना था फिर उसे ये तेरी पत्नी छुपके-छुपके माल भी खूब देती थी । ताकी उसे कुछ भी करने की जरूरत ही

नहीं पड़े । और दोनों इसी धन्धे में ही लगे रहे । (याद रखिये "काम" केवल "पुरुष" ही देखता है । मान-मर्यादा-धन-साधन-रूप इत्यादि से इसका दूर-2 तक कोई भी सम्बन्ध ही नहीं है । जब हालात बहुत बिगड़ गये चारों तरफ बदनामी होने लगी तब तुझे समझ ही नहीं आया, कि कैसे इस समस्या से बचा जाये ? आखिर तेरे एक जानकार की सलाह पर तूने इस समस्या से सदा के लिये बचने हेतू धन दे कर के उस "जार प्रेमी" का कत्ल ही करवा दिया । वो समस्या तो तूने खूब धन खर्च करके उस समय हल कर ही ली । पर भूल गया "अज्ञानता" के कारण कि ये तूने हल नहीं किया समस्या को उल्टा और लम्बा ही कर लिया है । वही जार प्रेमी अब अपना हिसाब लेने अपनी प्रेमिका के पेट को चीर कर तेरी गोद में प्रत्यक्ष हुआ है तेरी बहुत मन्नते माँगने के बाद विशेष रूप से । तेरे सामने ही ये स्तनों से मुँह लगाता दूध पीता है अपनी बची हुई पिछले जन्म की "शेष वासना" को पूरा करने के हेतू । अब ये बड़ा हो करके अकथ मेहनत से कमाई हुई तेरी कमाई को केवल जुए-शराब तथा काम में बहुत थोड़े ही दिनों में नष्ट कर देगा । और तेरी शीघ्र ही विधवा होने वाली पत्नी को तड़प-2 कर मरने पर मजबूर कर देगा । जिस चिन्ता की "विशेष आग" में तुझे इस पत्नी ने जलाया था ना पिछले जन्म में अब उसी विशेष आग में केवल इनट्रेस्ट और जोड़ करके ये तेरी सुन्दर पत्नी स्वंय ही जलने को मजबूर कर दी जायेगी । जिस "सांप" के

डसने से तुझे मृत्यु प्राप्त होने वाली है । वह और कोई नहीं वही पुरुष आत्मा है इस सांप योनी में, जिसे धन दे कर के तूनें उससे इस "जार प्रेमी" की हत्या करवाई थी । इन्हीं कुकर्मो के कारण उसे ये निकृष्ट भोगी जून प्राप्त हुई है । ये सब सुनकर तो सेठ बेहोश ही हो गया । काफी देर बाद उपचार करने के बाद जब सेठ होश में आया तो उसे बार-2 दौरे पड़ने लगे । बहुत देर बाद बड़ी मुश्किल से बोला कि फिर तुम दुकान पर क्यों हँसे थे । जब सन्यासी ने टाल-मटोल की तो रोने लगा दहाड़े मार-2 कर कि अब बचा ही क्या है जो छुपा रहे हो । तब सन्यासी ने बड़े संक्षेप में ब्यान दिया कि जानना ही चाहते हो तो सुनों-तुम्हारा बाप एक बहुत ईमानदार तथा गरीब श्रेणी का प्राणी था । मजदूरी से जो बचता था उसे बचा कर रखता था । फिर धीरे-2 उसने उस बचाये हुए धन से फेरी का धन्धा शुरू किया माल एक जगह से खरीद कर दूसरी जरूरत की जगहों पर ले जा कर के बेचने का । फिर धीरे-2 बचत बढ़ाता गया और आढ़त शुरू की उसी के फलस्वरूप आज ये बड़ा सा व्यापार उसका बन सका है । औलाद नहीं थी तो बड़ी मन्नतें माँग-2 कर के तेरा जन्म हुआ था । जिस घाटे को बचाने के लिये तूने "बकरा" कसाई के हवाले कर दिया था न ये तेरे हाथों से अपने सिर पर डण्डे खाने वाला "बकरा" जो बार-बार मार खाने के बावजूद तेरी ओर बड़ी दयनीय दृष्टि से देखता था अपने छुटकारे के लिये कसाई के हाथों । जिस "भण्डार" में

से केवल पेट की भूख मिटाने के लिये, जिस को तूने एक दाना भी नहीं खाने दिया था और केवल आधा पैसे के आटे को बचाने के लिये तूने जिस "बकरे" को कसाई के हाथों सौंप दिया न वो बकरा और कोई नहीं ये जिन्दगी भर की गई इस सारी कमाई का तेरे सहित-तेरा इकलौता मालिक ये तेरा-इकलौता बाप ही था । सेठ कहने लगा फिर उसे बचाओ तो सन्यासी ने कहा कि अब तक तो वो कईयों के पेट में ही पहुँच करके आराम फरमा रहा होगा तथा चमड़ा ढोल वाले ले गये होंगे । इस "गहरे गुप्त आराम" से जिस युग काल में ये "कीमती बकरा" जागेगा ना फिर इन्हीं हज्म करने वाले पेटों को चीर कर के इसी मृत लोक अर्थात मुर्दो के देश में प्रत्यक्ष होगा, इसे कौन "दुर्लभ प्राणी" सुपने में भी ब्यान करने में समर्थ हो सकता है । और ये कसाई वो है जिस का कुछ हिसाब अपने "रसूख" के कारण तेरे बाप ने गल्ती से दबा लिया था । उस वक्त ये कसाई एक गरीब किसान था तथा गरीबी के कारण कुछ कह ही नहीं सका था पर इससे उसे बहुत दुख अर्थात अभाव उठाना पड़ा था । अब वो सारा "दबाया हुआ हिसाब" तेरे बाप से ही अर्थात दबाने वाले की खाल उतार करके वसूल करेगा। और दबाने वाला अपनी चमड़ी "विद इनट्रेस्ट" उतरवाने पर मजबूर कर दिया जायेगा निश्चित रूप से । इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के आगे किसी की कुछ नहीं चलती । इसे तू उस अकाल पुरूख परमात्मा का निश्चित न्याय ही

समझ, फिर तू कैसे भ्रम में इन मोटे-2 गद्धों पर सुशोभित है, इस भ्रम में कि तेरे पास बहुत से साधन अथवा आसमानी ताकतों का संग है । तूने बहुत बड़ी-2 महान-2 ड्यूटियां दे रखी हैं कई पीढ़ियों से । कोई शक्ल (मुर्दा) आयेगी और तुझे सीधा घर पहुँचा देगी तेरे समस्त साधनों (वासनाओं) सहित । तू बहुत बड़े धोखे में ही है कारनामें तो तू गुप्त बीज ही चुका है भाई आखिर फल लगने में तो समय लगता ही है । अखरोट का फल बीस साल बाद प्रत्यक्ष होता है तो तेरे बीज क्या इतने गये बीते हैं कि तुरन्त फल देवें ? चिंता मत कर सहज पके सो मीठा होवै । ये बुजुर्गो का ब्यान अवश्य सच्चा साबित होगा ही । बहुत बड़े-2 मीठे-2 फल तेरी इन दुर्लभ महान-2 कारस्तानियों के, किसी विशेष-2 पार्को में तैयार किये जा रहे हैं बड़ी हिफाजत से । चिन्ता की कोई बात ही नहीं हैं बड़ा सख्त इन्तजाम है तेरी इस "गुप्त महान-2 उपलब्धियों" की सुरक्षा का विशेष रूप से । केवल तेरे आने का ही केवल इन्तजार किया जा रहा है आखिर तू व्यस्त जो ठहरा । चिन्ता मत कर जैसे ही तू अपने इस "दुर्लभ मानव जन्म" से फारिग होगा अथवा हाथ धो बैठेगा न ये समस्त महान-2 उपलब्धियाँ तेरी अपनी निजी कमाई की अवश्य "विद इनट्रेस्ट" तेरे समक्ष प्रस्तुत कर ही दी जायेंगी । तथा ये अभ्यास भी अच्छी तरह से दृढ़ करवा ही दिया जायेगा कि तू जब भी फिर इन गद्धों को सुशोभित करे तो फिर पहले जो कमियाँ रह गई थीं न तेरे इन

उत्कृष्ट श्रेणी के महान-2 कारनामों में भाई इस बार फिर वो कभी भूले से भी प्रत्यक्ष न हो सकेंगी । भाई पब्लिक डीलिंग जो ठहरी आखिर कस्टमर को सैटिस्फाइड तो करना ही पड़ता है न ! आज कल तो कम्पटीशन का जमाना जो ठहरा कोई और "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी गद्धा" अथवा महान सेवक (शैतान का रूप) भूले से भी प्रत्यक्ष हो गया तो भाई अपनी विरासत में लिखी "महान गद्धियों" का तो दिवाला ही पिट जायेगा निश्चित रूप से । पिछली सात पुश्तों से चली आ रही इन खानदानी मेहनतों अर्थात ड्यूटियों की कमाई पर तो मानो समुद्र ही फिर जायेगा अथवा बेचारी इन कमाई करने वाली आत्माओं की छातियों पर तो सांप ही ("कोबरा") श्रेणी के अवश्य "तांडव" ही करने लगेंगे ।

"भ्रूण" में आयी आत्मा धीरे-2 जाग्रत होने लगती है और फिर अपने को इस उपलब्ध वातावरण में सुरक्षित रखने के लिये ही केवल प्रबन्ध करती है अर्थात अपने रहने मात्र के घोंसले को ही तैयार करती है । इस घोंसले को बनाने का मुख्य साधन केवल उपलब्ध प्रकृति अर्थात पाँच महाभूत मात्र ही हैं । अग्नि-जल-पृथ्वी-वायु तथा आकाश । इन्हें मिलाकर जोड़ने का साधन केवल शब्द (केवल रागमई आवाज जिस में से निरन्तर प्रकाश निकलता रहता है जिसे नाम (प्रकाश) ही कहा जाता है) ही होता है ये केवल "गोंद" का ही कार्य करता है इस अवस्था में । क्योंकि

पाँचो महाभूत केवल एक दूसरे के "घोर विरोधी" हैं । कभी सुपने में भी केवल इस गोंद के सिवाय आप इन्हें इकट्ठा करने में कभी भी किसी भी काल में समर्थ हो ही नहीं सकोगे इसे आप निश्चित रूप से जान लो । इन पाँच महाभूतों के पाँच तन्मात्र होते हैं-अग्नि का रूप-जल का रस-पृथ्वी की गन्ध-वायु का स्पर्श और आकाश की केवल आवाज़ । इन तन्मान्त्रों को लेकर के ही ये महाभूत प्रत्यक्ष रहते हैं जिसे महत अथवा प्रकृति कहा जाता है । इसका अति सूक्ष्म रूप भी केवल उस परम चेतन सत्ता के और कुछ भी नहीं है । "पवन अरंभ सतिगुरू मति वेला" इसी भाव को संजोये है कि सृष्टि केवल गति से ही प्रत्यक्ष होती है । वेला कहते हैं समय को । जब उस अकाल पुरख परमात्मा की रजा होती है सृष्टि को प्रत्यक्ष करने की तब वो अपने को अपने एक गुण शब्द (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) के जरिये प्रत्यक्ष करता है । सृष्टि में ये शब्द (रागमई प्रकाशित आवाज़) अति सूक्ष्म रूप से अपने को इस ढंग से प्रस्तुत करता है कि बाहर से यह केवल जड़ ही दिखता है । लेकिन इस का सूक्ष्म स्वरूप आप को निरन्तर गतिशील ही प्रत्यक्ष होगा । जैसा कि आप देखते हैं कि अणु-परमाणु सभी निरन्तर भूत की तरह से घूमते ही रहते हैं । आप कभी सुपने में भी इस की "थाह" को पाना तो दूर रहा केवल विचार करने में भी असमर्थ ही साबित होओगे । ये दिखने वाले अनन्त ब्राह्ममण्डों का आधार केवल ये शब्द (रागमई प्रकाशित

आवाज) ही है । ये ब्राह्ममण्ड सब बड़ी भयानक तेजी से दौड़ रहे हैं अथवा गतिशील हैं, जैसे कोई बड़ा सा भूत केवल इन्हें हज्म ही कर देना चाहता है । इनकी संख्या तथा आकार को किन्हीं भी गणना अथवा लफजों से ब्यान ही नहीं किया जा सकता । जो पदार्थ आप के इस धरातल से लाखों-करोड़ों गुना बड़ा हो और हजारों योजन दूरी केवल पलक झपकने जैसे समय में ही तय कर ले । तो सोचो उसे उस अवस्था को कैसे प्रत्यक्ष कर के ब्यान किया जा सकता है । इसीलिये कहा है कि "केते इन्द-चन्द-सूर-केते-केते मण्डल देस ।" जब आप उसके केवल एक इसी गुण जिसे "गोंद" कहा गया है तक पहुँचोगे तो केवल खामोश हो जाओगे । इसी को कहा है "ऊंच अपार बेअंत सुआमी कौण जाणै गुण तेरे ।" इससे आगे कोई एक अक्षर भी ब्यान नहीं कर सकता । "सतिगुर मत वेला" यानी के (सत-गुर) गुरू जो केवल सत है । अर्थात इस सृष्टि का आधार शब्द (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) ही केवल "सत" नाम के लफज को सार्थक करता है । जब कुछ भी नहीं होता तब भी केवल ये प्रकाशित रागमई आवाज ही प्रत्यक्ष रहती है सूक्ष्म रूप से । यही अपने को विभिन्न रूपों में प्रत्यक्ष करती है । यही जब सिमट जाती है तो केवल घुप अंधकार बचता है, लेकिन ये परम चेतन सत्ता अवश्य हर काल में प्रत्यक्ष रहती ही है । फिर यही जब इसकी रजा होती है तो अपने को प्रत्यक्ष प्रस्तुत करती है । केवल प्रत्यक्ष ही नहीं करती बल्कि

निरन्तर उसे धारण भी करती है क्योंकि प्रत्यक्ष करने से उसे धारण करने की समस्या अधिक बड़ी है । फिर यही सिमट कर इसे मिटा देती है और फिर जब रजा होती है इसे प्रत्यक्ष कर देती है। अर्थात तीनों कालों में केवल एक ही अर्थ है "परम चेतन सत्ता ।" इस हर काल में प्रत्यक्ष विद्यमान रहने के कारण ही केवल इसे "सत" लफज से ब्यान किया जाता है । (विशेष सावधानी:- गद्धीधारियों ने जो इस लफज सतिगुर का अर्थ अपने ऊपर घटा करके पूरी मनुष्य जाति को अंधे कुँऐं में ढकेल दिया है, इससे आप विशेष रूप से सावधान रहिये । ऐसा कोई भी भाव इस बाजी में सुपने में भी नहीं है । केवल परमात्मा लफज की जगह सतिगुरू लफज का प्रयोग किया गया है।) इस गद्दारी का क्या अन्जाम होगा इन गद्दीधारी परमात्माओं का, उनकी फिक्र छोड़ कर आप केवल अपनी फिक्र करिये । इनके लिये प्रभु ने विशेष-2 प्रबन्ध आवश्यक रूप से पहले ही से कर रखे हैं सावधान । आप खुद ही विचार कर सकते हैं कि इन निकृष्ट परमात्माओं ने कौन सी सृष्टि कब कैसे प्रत्यक्ष की और कैसे धारण कर रखी हैं । ये आप इनसे पूछ सकते हैं जानकारी के लिये, हमारे पास तो ऐसी निचली श्रेणी की आत्माओं का संग भी न करने के सिवा और कुछ भी नहीं है जो आप को बतायें ! सतिगुरू अर्थात प्रभु अकाल पुरख परमात्मा की जब रजा होती है तभी वह हिलता है अर्थात शब्द (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) के जरिये अपने को प्रत्यक्ष

करता है । हिलता का भाव पवन लफ़्ज़ है। ये हर काल में निश्चित रूप से जान लो कि वो "परम चेतन सत्ता" सदा स्थिर अथवा निश्चित है अपनी जगह अविनाशी मुल्कों (वतन) में । वो कभी भी आती जाती नहीं विचार में भी । केवल उसका यह एक तुच्छ सा गुण शब्द (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) ही सब कुछ करने में हर काल में "केवल समर्थ" है । पवन अर्थात गति से ही केवल घर्षण प्रत्यक्ष होता है । इसी गति तथा घर्षण से ही जल प्रत्यक्ष होता है । इसी जल में घर्षण से ही अग्नि प्रत्यक्ष गुप्त रूप से विद्यमान रहती है । इसी अग्नि में से ही घर्षण द्वारा पृथ्वी तत्व प्रत्यक्ष होता है और इसी घर्षण का आधार आवाज के सिवा और कुछ भी नहीं है । इसी गुप्त लेकिन आवाज से ही जो आकाश तत्व प्रत्यक्ष होता है उससे ही केवल आप की उत्कृष्ट बुद्धि प्रत्यक्ष होती है ऐसा आप निश्चित रूप से जान लो ! इसी बुद्धि से आप अपने समस्त कार्य निपटा लेते हो । और "बुद्धि का विवेक" केवल पुरुषार्थ अथवा कमाई से ही प्राप्त करने का एक मात्र दुर्लभ निश्चित साधन है । और आप केवल इसे ही करना पसन्द नहीं करते फिर भला आप की बात कौन से युग काल में भी बननी संभव हो सकती है सुपने में भी ? अर्थात कदापि हरगिज बन ही नहीं सकती । ये भ्रूण अब बढ़ने लगता है धीरे-2 । जैसे पंछी तिनके इकट्ठे करता है अपना घर अथवा घोंसला बनाने के वास्ते उसी तरह से आत्मा नाम का पंछी भी माँ के उदर से उपलब्ध खून

में से अपने ये "विशेष पदार्थ" अर्थात ये प्रकृति के पाँचों महाभूत जो अति सूक्ष्म अवस्था में गुप्त रूप से निहित रहते ही हैं एकत्र करता है । इन्हें एकत्र करता हुआ अपने निजी विशेष घर अथवा शरीर का निर्माण करने में ही व्यस्त रहता है । इस दुर्लभ घोंसले को बनाने के लिये इसे भरपूर समर्था उसी प्रभु से मिलती ही रहती है, बिना कुछ "मजदूरी" चुकाये निरन्तर रूप से । ये जीव ही उसे भूलने का विशेष अपराध निरन्तर कमाता है । इस "गद्दारी" के बावजूद वो इसे कभी भी किसी भी हाल में भूलने का विचार भी नहीं रखता । आखिर यह उसका अपना निजी अंश जो है । प्रकाश (नाम) का अंश अथवा किरण प्रकाश (नाम) के सिवाय और हो ही क्या सकता है ? फिर भी जीव इस प्रकाश की तलाश में अपनी "दुर्लभ हस्ती" समुंद्रो-पहाड़ों-किताबों-मूर्तियों इत्यादि तथा "विशेष-2 घोंसलों" में करने में ही अपनी श्रेष्ठता को स्थापित करता ही रहता है । ऐसे निकृष्ट स्थानों पर तलाश इस दुर्लभ "पंछी" की भला कैसे किसी भी काल में कभी भी पूर्ण हो ही सकती है । अर्थात ये दुर्लभ तलाश कभी भी संभव नहीं होगी । माँ के उदर से अपने "विशेष तिनके" एकत्र करने की समर्था केवल उस "विशेष गोंद" में ही निहित रहती है । और ये "गोंद विशेष" उस अकाल पुरख परमात्मा के सिवाय और क्या हो सकती है ? अर्थात केवल वही अपने को विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत कर रहा है । धीरे-2 घोंसला बढ़ने लगता है अर्थात दुर्लभ शरीर

के अंग प्रत्यक्ष होने लगते हैं । इन्हीं में कुछ तिनके विशेष पृथ्वी तत्व की अधिकता के कारण कुछ "कोश" सूखने लगते हैं । जिन्हें आप "हड्डियों" की संज्ञा देते हो । जैसे तम्बू को खड़ा अथवा स्थिर रखने के लिये "लठ" अथवा बांसों की जरूरत होती है तथा उन्हें स्थिर रखने के लिये आप रस्सियों को उपलब्ध करते हैं । ठीक इसी तरह से ये दुर्लभ पंछी इन विशेष कोशो को सुखा कर के फिर पकाने का भी कार्य करता ही है । जैसे कच्चे बांस पर भार अथवा तम्बू का स्थिर रहना असंभव है, आप उन्हें धूप इत्यादि में रख कर सुखाते हो, ता कि जिस से मजबूत बन सके और आप का वंछित कार्य सिद्ध करने में समर्थ हो सके, वैसे ही इस दुर्लभ पंछी को भी इन कोशों को तपश में पकाना ही पड़ता है । "सोलह सौ" के करीब इन विशेष कोशों (हड्डियों) की गिनती को विशेष "जठर अग्नि" में पकाई करने के लिये जीव को अकथ मेहनत करनी पड़ती है तथा इस भयानक तपश को जो "घोर नरक" के सिवा और कुछ भी नहीं है अवश्य केवल अपने को सुरक्षित रखने के ही लिये भुगतने पर मजबूर होना ही पड़ता है । अब कहने की आवश्यकता ही नहीं है कि ये "जठर अग्नि" वाली तपश केवल उस अकाल पुरख परमात्मा के सिवा और कुछ कैसे सुपने में भी सम्भव हो सकती है । इस तपश को ऐसे ही समझो जैसे किसी जीव को तंदूर में तपाया जाता है । आत्मा पर किसी अभाव का

जमा अथवा घटा किसी भी काल अथवा उपाय से असम्भव ही है ऐसा निश्चित समझो । लेकिन ये हर अभाव को अति सूक्ष्म रूप से भी अवश्य अनुभव करती है । और फिर अपने को उपलब्ध साधनों से ही केवल प्रत्यक्ष भी करती ही है । जैसे आप अभी एक नुकीली पिन को ही अपने शरीर से स्पर्श करो तो ये तुरन्त उस चुभने वाले अनुभव को जिस से उसे दर्द महसूस हुआ, तुरन्त उपलब्ध साधनों द्वारा चिल्ला कर के व्यस्त करने पर मजबूर हो ही जाती है । इसीलिये ये ऐसा अभाव कभी सुपने में भी पसन्द ही नहीं करती जिससे इसे दुख अथवा दर्द सहना पड़े । इसीलिये ये निरन्तर सुख की तलाश में लगातार चारों ओर उपलब्ध साधनों अथवा वातावरण में भटकती ही रहती है । इस घोर भयानक तपश रूपी अभाव से बचने के लिये दसवें द्वार पर घबराई सी सिमटी ही रहती है । जैसे कहीं आग लगने पर आप तपश से बचने के लिये अपने को समेट कर अलग हो करके सिमट जाते हैं । वैसी ही अवस्था इस वक्त इस "दुर्लभ पंछी" की भी होती है । इस अवस्था से इसे बचाने वाला सिवाय उस अकाल पुरख परमात्मा के और कौन हो सकता है कभी सुपने में भी समर्थ ? अर्थात सोच ले खूब विचार कर ले सिवाय उस के तेरी मदद करने वाले कोई भी नहीं है कभी भी किसी भी काल में सुपने में ही संभव ही नहीं है । और तू केवल उसे ही भूला बैठा है (विद्वान महामूर्ख श्रेणी के) प्रभु प्रेरणा:- "निमाने कउ जो देतो मान-सगल भूखे कउ करता

दान-गरभ घोर मह राखनहार-तिस ठाकुर कउ "सदा नमस्कार ।" निमाणा केवल इस दुर्लभ पंछी के सिवा और कौन हो सकता है । (इस भयावली कैद के कारण केवल) "मान" का भाव है "सुरक्षा" जो इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के जाल में दुर्लभ ही है। ये पंछी जन्म-जन्मांतरों से अपने "मूल" (परम चेतन सत्ता) से दूर होने के कारण भूखा प्यासा तड़प रहा है । अपनी भूख अथवा प्यास मिटाने के लिये ही ये चारों दिशाओं में भटक रहा है । जैसे पंछी शिकारी के जाल को नहीं देख पाता दाने अथवा भोजन के लोभ में तथा कैद कर लिया जाता है पिंजरे में । फिर वो आप के घर की शोभा बनाने के लिये पिंजरे में बंद कर के टांग दिया जाता है, बाहर बरामदे में । इसी तरह से "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" शिकारी के रूप में नये-2 रूपों अथवा स्वादों का लोभ प्रस्तुत रख कर के इस "दुर्लभ पंछी" रूपी आत्मा को इस की मजबूरी "भूख अथवा प्यास" का लाभ उठा कर के अपने न दिखने वाले "जाल विशेष" (केवल भुगतान) में अवश्य आवश्यक रूप से फँसा ही लेती है । और यह बेचारा दुर्लभ पंछी धोखा खा कर के अपनी जन्मों-जन्मों की भूख-प्यास मिटाने के चक्कर में अपने को सदा के लिये इन विशेष सुन्दर-2 पिंजरों में कैद हो अथवा उन्हें रोशन करने के लिये मजबूर कर ही दिया जाता है । तथा इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के घरों अथवा मुल्कों को सुन्दर तथा पायदार बनाने के लिये तरह-2 के रंग-

बिरंगे वस्त्र पहन कर के विभिन्न प्रकार की बोलियाँ बोलने पर मजबूर कर ही दिया जाता है । जो कोई भी इसे इसकी होने वाली इस दीन-हीन हालत से सावधान करने का "अपराध विशेष" कमाता है । ये इन्हीं "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" का रूप बन कर के उसे ही जिन्दा जलाने अथवा दबाने पर समर्थ होने लगती हैं । इतिहास साक्षी है-अर्जुन देव-तेग बहादुर-गोबिंद सिंह इत्यादि जैसी कितनी ही आत्मायें-इन प्रभु प्रेरित वाक्यों की मिसालों से आप का अपना ही इतिहास ठूंस -2 कर के भरा पड़ा है । फिर भी जब भी कोई भी आत्मा इस दुर्लभ कार्य को करने के लिये परमात्मा द्वारा प्रस्तुत की जाती है तो आप केवल अपनी विरासत में लिखे इतिहास को ही दोहराने का दुर्लभ कार्य विशेष सम्पन्न करने को समर्थ होने लग ही जाते हैं । केवल इन्हीं "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" की प्रसन्नता को प्राप्त करने के ही लिये अपनी हस्ती को मिटाने लगते हो निरन्तर ! जैसे पंछी बिना "मालिक" की मर्जी अथवा रजा के पिंजरे से लाख चाहनें अथवा कोशिशों के बावजूद अपने को मुक्त करवाने में असमर्थ रहता ही है प्रत्येक काल में । इसी तरह से यह दुर्लभ कैद किया गया पंछी भी केवल उस अकाल पुरख परमात्मा की मर्जी अथवा रजा के बिना कभी भी किसी भी काल में मुक्त अथवा अपने को आजाद करवाने में सुपने में भी समर्थ होना केवल असंभव ही है । इसीलिये केवल इस रजा अथवा प्रसन्नता को प्राप्त करने के ही लिये केवल इसे

अपने निजी अमल अथवा व्यवहार को हर काल में उपलब्ध साधनों अथवा समर्थानुसार सुधार करना आवश्यक रूप से निश्चित उपाय ही है । इस "दुर्लभ पंछी" की आजादी के लिये आवश्यक साधन प्रभु की "रजा" जो उस का अपना निज स्वरूप प्रकाश (नाम) केवल जो निरन्तर एक दुर्लभ विशेष रागमई आवाज (शब्द) में से प्रत्यक्ष होता है को देने में कोई और दूसरी ताकत अथवा प्राणी कभी कैसे किसी भी काल में समर्थ हाने की कल्पना भी कर सकता है सुपने में भी । अर्थात ये "दुर्लभ दान" इस दुर्लभ पंछी को केवल अकाल पुरख परमात्मा से ही प्राप्त होना सम्भव है प्रत्येक काल में भरपूर अवस्था में । इसके अभाव में इसका यह आजादी का सुपना कभी भी चरितार्थ होना असंभव ही है इसे आप निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो अभी से ! अब ये जो झूठे नकली परमात्मा बने बैठे हैं न मत-धर्म चलाने वाले, ये अपने आप ही खूनी लोभी भेड़िये साबित हो ही जाते हैं । जो कोई भी इस दुर्लभ पंछी को धोखा देवे, यहीं कैद रखने में "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" की मदद करे । उसके लिये "खूनी लोभी भेड़िया" लफज भी अपने आप छोटा पड़ ही जाता है। इन में और "शिकारी विशेष" में फिर फर्क ही क्या रह गया ? अपने आप ही स्पष्ट हो जाता है कि इस "दुर्लभ दान" को देने का दावा करने वाला केवल झूठा ही है हर काल में । जिस तरह से ये दुर्लभ दान कोई दूसरा कभी सुपने में भी देने में समर्थ नहीं हो सकता उसी तरह से इसे "धारण"

करने में भी कोई तो क्या अनन्त ब्राह्मण्डों की समस्त शैतानी ताकतें तेरे निज अथवा झूठे नकली स्थापित किये हुऐ परमात्माओं सहित कभी सुपने में भी इस प्रकाश (नाम) की सब से छोटी सी किरण के सबसे छोटे छुद्र से कण को भी उठाने में कभी सुपने में भी समर्थ होना असंभव ही है ऐसा तू निश्चित रूप से "गाँठ बाँध" ले अगर इन लोभी खूनी भेड़ियों के झूठे लेकिन मीठे रस से भरे नकली धोखे से बचना चाहता है तो अर्थात साधारण लफजों में कि इस "दुर्लभ दान" को न तो कोई देने में ही समर्थ है और न ही धारण करने में ही। ये परम चेतन सत्ता (प्रकाश अथवा नाम) केवल स्वंय ही अपनी रजा को प्रत्यक्ष करती है और स्वंय ही स्वंय को धारण भी करती है निरन्तर और फिर स्वंय ही सिमट कर के सब कुछ मिटा करके खामोश अपने आप में केवल मग्न रहती है निरन्तर ! "गरभ घोर" का भाव है कि जीव को इस शरीर अथवा घोंसले को प्रत्यक्ष करने में विभिन्न प्रकार के जठर अग्नि की तपश जैसे "भयानक नर्कों" को अथवा अभाव भरी स्थिति का सामना करने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है । उस वक्त ये केवल अपने "मूल" को ही रक्षा के लिये निरन्तर पुकारता रहता है । ये जानता है कि इस घोर भयानक अवस्था में इसकी रक्षा करने वाला दूसरा और कोई भी नहीं है । उस वक्त नियमानुसार इसे पीछे की गई इसकी समस्त दुर्लभ कारस्तानियों की याद अवश्य करवा ही दी जाती है । अपनी दुर्लभ कार

गुजारियों का लेखा देख-सुन करके ये अपने आप पर ही अवश्य शर्मिंदा होता ही है । और फिर से इनको न करने का अपना इरादा दृढ़ करता ही रहता है । साथ ही इस भयावले जेलखाने से अपने को मुक्त करवाने के लिये उस अकाल पुरख परमात्मा के आगे निरन्तर प्रार्थनायें भी करता ही रहता है क्योंकि इस "घोर" अवस्था में केवल उस एक अकाल पुरख परमात्मा के सिवाय उनकी सुनने वाला और कौन समर्थ हो सकता है कभी सुपने में भी ! सोचो उस वक्त किसने तुम्हारी मदद की किसने तुम्हें इस घोर भयानक अवस्था से मुक्त करवाया ! आज तुम जिन "पातशाहों विशेषों" के पीछे दौड़ने में अपनी हस्ती मिटा रहे हो, उस वक्त ये कहाँ दुम टांगों मे दबा कर के छुपे हुऐ बैठे थे ? क्यों नहीं उस वक्त इन्होंने तुम्हारी मदद की ? स्पष्ट है कि ठगने वाला चाहिये केवल । हम जैसे अवश्य ठगवाने को इकट्ठे हो कर के इन्हें केवल इनके निजी स्वार्थों अथवा वासनाओं की पूर्ति हेतू मिल ही जाते हैं । इसीलिये प्रभु प्रेरणा है कि "तिस ठाकुर" अर्थात केवल अकाल पुरख परमात्मा को ही "सदा नमस्कार" कर । यानी के "सदा" लफ्ज केवल निरन्तर तथा एक रूप-एक रस निश्चित रूप से रहने वाली "परम चेतन सत्ता" के लिये ही प्रयोग में लाया जाता है केवल। हे दुर्लभ प्राणी अथवा पंछी तूं केवल उसे ही नमस्कार कर अर्थात केवल उस "एक परमात्मा" की ही शरण को निश्चित रूप से ग्रहण कर । न तेरा कोई रूप है न उस तेरे को

बनाने वाले का ही कोई रूप है, तो फिर तूं उसे कैसे नमस्कार करेगा ? अर्थात केवल उस ठाकुर की "शरण" के तेरा किसी भी तरह से कभी भी काल में सुपने में भी कल्याण होना निश्चित रूप से असम्भव ही है । ये तू अभी से विचार करके गाँठ बाँध ले । अब ये जो नकली ठाकुर बने बैठे हैं इन से तू सदा के लिये पल्ला छुड़ाने की फिक्र कर, तेरी कई पीढ़ियाँ इन्हें ठाकुर समझती तथा पूजती हुई अपने को इस "भयावले अन्धे कुँऐं" में अवश्य ये दफन कर चुकी हैं ऐसा तू निश्चित रूप से जान ले । तुझे बहुत बड़ा धोखा हो चुका है इन नकली ठाकुरों से । अपनी इस समस्त दुर्लभ यादों को ले कर के जब यह "दुर्लभ पंछी" अपने घोंसले अथवा शरीर के जरिये अपने आप को इस निकृष्ट मृत लोक अथवा "मौत के शहर" में प्रत्यक्ष करता है तो ज्यादातर यह अपने आप में ही मग्न रहता है अर्थात ये केवल अपने मूल के ध्यान में ही अर्ध जाग्रत अवस्था में मस्त पड़ा रहता है । तब इसकी ये "समस्त विशेष जानकारी" जो प्रभु कृपा से गर्भ में उसे प्राप्त हुई थी वह निश्चित रूप से बनी ही रहती है । तथा कभी-2 बीच-2 में यह अपनी कमियों अथवा गल्तियों को विचार कर के तड़पता भी है अथवा दुखी होता है। अपने इसी दुख को व्यक्त करने में असमर्थ होने के कारण ही यह केवल रो अथवा चिल्ला करके ही अपने भावों को व्यक्त करता है । और आप उसके इस दुख को न तो जान ही सकते हैं फिर मदद ही क्या कर सकोगे । पर ममता वश

आप उसे और कड़वी दवा इत्यादि पिला कर के उसके दुखों को और बढ़ाने में ही केवल मददगार साबित होते हो । "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" गर्भ के इस बनाये जाने वाले घोंसले को नष्ट करने की भरपूर कोशिशें निरंतर करती ही रहती हैं । क्योंकि केवल इसी घोंसलें में ही इस पंछी को वह दुर्लभ अवसर प्राप्त होता है अपने को सदा के लिये इन पिंजरों से भरे कैदखाने से मुक्त करवाने का । इसीलिये ताकीद की जाती है कि जीव के गर्भ में आने से पहले ही प्राणी को जो गर्भ धारण करते हैं रक्षा के लिये अपनी तथा इस आने वाले प्राणी की सुरक्षा के वास्ते उस अकाल पुरख परमात्मा की शरण में आओ, उसे निरन्तर निर्मल हृदय से पुकारो । तभी कोई तुम्हें इस जेलखाने से मुक्त करवाने का विचार करेगा । और आप का धंधा क्या है इस "दुर्लभ अवसर" को पैदा होने से पहले ही रंग-तमाशे अथवा नाचने-कूदने में ही व्यर्थ गंवा बैठना । "स्त्री" का केवल एक ही मुख्य धर्म है कि जो दुर्लभ आत्मा उसके गर्भ में आयी है वो फिर दुबारा इस "घोर नर्क" रूपी गर्भ का मुँह सुपने में भी न देखे ऐसा प्रयत्न उसे जिन्दगी भर निरन्तर करना ही चाहिये । यही उसका केवल विशेष धर्म है जिसके लिये उसे विशेष ताकत इस अवस्था का समर्थ बनाने की अकाल पुरख परमात्मा से निरन्तर मिलती रहती है विशेष दया के रूप में । स्त्री जब प्रसूति गृह से यदि जीवित बाहर निकलती है । तो समझ लो कि वह एक घोर नर्क से किसी

विशेष ताकत द्वारा जिन्दा बचा कर के ही केवल प्रस्तुत की गई है । लेकिन ताज्जुब है कि वो फिर उसी घोर नर्क में डूबने के लिये बहुत थोड़े समय में ही केवल हाथ जोड़ कर के तैयार खड़ी मिलती है । ये विशेष ताकत उस अकाल पुरख परमात्मा की "हे पागल स्त्री" तुझे केवल नंगा होने के लिये (बाजार में वो भी) नहीं मिली है । अपनी कीमत को पहचान तूं एक ऋषि को जन्म नाम का "दुर्लभ दान" देने वाली "दुर्लभ माँ" है केवल ! जिसे संसार परमात्मा मान करके पूजता है । उस परमात्मा को इस मृत लोक में प्रत्यक्ष करने में केवल तूं ही समर्थ है । अर्थात यह दुर्लभ दान केवल तू ही दे सकती है । ये समर्थता तुझे केवल इसी "विशेष कार्य" को अच्छी तरह से समर्थ ही कर प्रत्यक्ष करने के लिये ही विशेष रूप से अकाल पुरख परमात्मा से प्राप्त हुई है । सोच तो सही जरा तू इसे खर्च किस "काम" नाम के निकृष्ट कीड़े पर कर रही है । ऐसा व्यर्थ खर्च कर के कैसे तू अपने को उस प्रभु के दरबार में निरपराध साबित कर सकेगी ? ये दया तुझे फिर बार-2 प्राप्त होनी दुर्लभ ही है इसे तू अभी निश्चित रूप से जान ले । एक ही मिसाल से ये दया साबित हो जाती है कि एक रोते हुऐ बच्चे को चुप करवाने की समर्था तीनों लोकों में दुर्लभ ही है लेकिन केवल तेरी "दुर्लभ गोद" में ही उसे त्रिलोकी के सारे सुख कैसे प्रत्यक्ष हो जाते हैं ? कभी सोचा है तूने ! ये सब कैसे सम्भव हो जाता है ! क्योंकि वो प्रभु स्वंय चुपके से तेरी गोद में छुप

कर के बैठ जाता है । आत्मा केवल अपने "मूल के सम्पर्क" में ही सुख अथवा शांति का अनुभव कर सकती है । और ये दुर्लभ सम्पर्क उस "दुर्लभ पंछी" को केवल तेरी इस "दुर्लभ गोद" में ही प्राप्त होना सम्भव होता है । केवल इसी मिली दया के आधार पर ही तूं उस गंद-मूत्र को साफ ही नहीं करती बिस्तर में उसे सूखे स्थान पर और स्वंय गीले स्थान पर स्वंय को प्रस्तुत कर देने में हर काल में समर्थ ही होती है । जिसकी दुर्गन्ध भी कोई दूसरा देखना-सूंघना पसन्द ही नहीं करता ! अपना सब कुछ इस बच्चे पर न्यौछावर करने का तेरा ये ज़ज़बा केवल उस प्रभु की "विशेष दया" ही है । अपने उस "विशेष धर्म" को भूल कर के तूं बहुत-बहुत बड़ा जुर्माना देने पर मजबूर कर दी जायेगी अवश्य निश्चित रूप से । ये "काम" का व्यवहार सारा केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" की बहुत गहरी दूर तक मार कर देनी वाली निकृष्ट चाल ही है । अपने आप को सम्भाल केवल यदि तूं ही अपने को सुधार लेवे तो अवश्य सुधार निश्चित ही है । तेरी ओर नजर तक उठा करके देखने का होंसला त्रिलोकी में किसी को भी नहीं है । केवल तेरी अपनी ही कमियों के कारण ये "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" दूसरे रूपों का सहारा लिये तुझे कुचलने का अपना निकृष्ट होंसला बुलन्द करती है । तू जननी है अपनी हस्ती को पहचान । तूं भोग का विषय कभी सुपने में भी नहीं हो सकती । क्यों तूं

अपनी इस "दुर्लभ ताकत" को इन "निकृष्ट कामनाओं" के अथाह समुंद्र में डुबोती चली जा रही है। अपने "धर्म विशेष" की पहचान कर, उस एक प्रभु की शरण में अपनी मिली उस दुर्लभ हस्ती अथवा ताकत को कुर्बान कर निश्चित रूप से । तभी तूं अपने समस्त केवल अपने ही कमाये हुऐ दुखों अथवा गल्तियों से सदा के लिये छुटकारा प्राप्त कर पाने में समर्थ हो सकेगी ।

लेडी समालका का इतिहास इसी स्त्री के विशेष धर्म को स्थापित करने में हर काल में समर्थ है । जिस पुरुष राजा से इस दुर्लभ स्त्री का विवाह सम्पन्न हुआ, उसे उसने पहले ही ताकीद कर दी ब्राह्मव्रत में रह कर के केवल तप करने की । राजा ने भी उसकी ये दुर्लभ शर्त स्वीकार कर ली और धर्म-कर्म में ही केवल अपने राजकार्यों में व्यस्त रहने लगा । आखिर राज संचालन की आवश्यकता जान उसने अपने धर्म का पालन करने के लिये समालका से पुत्र की याचना की । समालका केवल इस शर्त पर राजी हुई कि पुत्र की परवरिश वह स्वंय करेगी, राजा का उसमें कोई दखल ही न रहेगा । राजा को तो केवल धर्म का ज्ञाता राज संचालन करने वाला चाहिये था, भला उसे कैसे एतराज हो सकता था । उसने सहर्ष शर्त स्वीकार कर ली । शीघ्र ही पुत्र उत्पन्न हुआ और लेडी समालका की देख रेख में उस बालक की परवरिश होने लगी । माँ के तपस्वी होने का बालक को दुर्लभ "शुद्ध रूहानी

ज्ञान" प्राप्त हुआ । जैसे-2 उसकी इन्द्रियाँ सबल होने लगीं, निरन्तर इस "दुर्लभ तपस्वी माँ" के संग से इस संसार की निस्सारता का प्रत्यक्ष अनुभव होने लगा । शीघ्र ही इस जेलखाने से छूटने की उस की इच्छा इतनी बलवती हो गई कि उसने शेष जीवन केवल तप करने में ही अपना निजी कल्याण जान "एकान्त वास" के लिये वनप्रस्थ होने की माँग अपने पिता राजा के आगे प्रस्तुत कर ही दी । राजा के लाख कोशिशों अथवा प्रयत्नों के बावजूद बालक न माना । समझाने की समस्त क्रियाऐं व्यर्थ साबित हुई । आखिर राजा को ये आज्ञा न चाहते हुऐ भी देनी ही पड़ी । बालक के छोटी अवस्था में ही सन्यासी हो जाने पर उसे स्वंय से अधूरापन अनुभव होने लगा । राज संचालन की जो समस्या बड़ी मुश्किल से हल हुई थी फिर से प्रत्यक्ष हो गई । राजा ने फिर लेडी समालका से इस धर्म पालना की याचना की । कुछ समय उपरान्त समालका ने अपने पति राजा को धर्म के कारण चिन्तित देख अपने पति धर्म को मध्यस्थ रख उसी पहली वाली शर्त पर पुत्र उत्पन्न करना स्वीकर कर ही लिया । शीघ्र ही दूसरा पुत्र उत्पन्न हुआ । फिर से वही क्रिया दोहरायी जाने लगी और इसका भी केवल वही नतीजा निकला, जो पहले निकला था अर्थात दूसरा बालक भी राजा के विभिन्न प्रयत्नों के बावजूद बाल सन्यासी हो ही गया और सदा के लिये उसने गृह को त्याग ही दिया । राज संचालन की समस्या फिर से पहले से भी अधिक

बलवती हो ही गई क्योंकि अब तो राजा का अपना समय वनप्रस्थ होने का नजदीक आता ही जा रहा था । तब राजा ने एक बार फिर से अपनी "तपस्वी स्त्री" समालका से पुत्र याचना की केवल राज संचालन के लिये । पर इस बार उसने समालका की शर्त स्वीकार नहीं की, कि बालक की परवरिश लेडी समालका ही केवल करेगी । लेडी समालका ने केवल पति के राज धर्म को ध्यान में रखते हुऐ राजा पर लगाई हुई अपनी शर्त हटा ली । तथा बालक को उत्पन्न कर परवरिश के लिये राजा के हवाले कर दिया । इस बार राजा ने उसे धर्म अनुकूल समस्त राज धर्म पालन का ज्ञान शास्त्रों अनुसार देना शुरू कर दिया । और जब वह राज संचालन में निपुण हो गया तब राजा ने समस्त राज उसके हवाले किया और अपनी तपस्वी पत्नी को ले करके वन-प्रस्थ हो गया और घोर वन में चला गया । वहाँ घोर वन में लेडी समालका की भेंट अपने पहले सन्यासी हुए पुत्र से हुई । तीनों वहाँ घोर वन में दिन-रात "केवल तप" में ही जुटे रहते थे । काफी लम्बे समय बाद लेडी समालका को अपने तीसरे पुत्र का भी कल्याण करने का ध्यान आया । इसे अपना विशेष धर्म जान कर के अपने धर्म का पालन करने के लिये उसने अपने पहले पुत्र को विशेष हिदायतें दे कर के "शुद्ध रूहानी ज्ञान" देने के लिये अपने तीसरे पुत्र जो राज-संचालन में व्यस्त था उस के पास भेजा । अपने पहले भाई से मिल कर के ये राजा बना तीसरा भाई बहुत प्रसन्न

हुआ और उसने समस्त राज साधनों सहित उस पहले भाई के आगे प्रस्तुत कर दिया । दोनों बड़े मजे से समय काटने लगे । दोनों के लिये ये विपरीत ज्ञान दुर्लभ था, राजा बने पुत्र के लिये "शुद्ध रूहानी ज्ञान" अति दुर्लभ था तो पहले पुत्र के बाल सन्यासी हो जाने के कारण ये उपलब्ध "राज भोग" दुर्लभ थे । दोनों विपरीत उपलब्ध ज्ञान अथवा साधनों का अभ्यास करने लगे । शीघ्र ही नतीजा सामने आ गया । राज करने वाला पुत्र सब राज समर्था पहले भाई को दे कर के सन्यासी हो गया और जो सन्यासी हुआ था वो अपने को राज संचालन में व्यस्त कर मिटाने लगा । शीघ्र ही उसने विवाह भी कर लिया और आगे सन्तानें भी हो गई । राज्य का भी उसने अपने कौशल से बहुत विस्तार कर ही लिया । उधर काफी समय बाद लेडी समालका की अपने दूसरे सन्यासी हुए पुत्र से भेंट हुई । अपनी बिछुड़ी दुर्लभ माँ से मिलकर इस दूसरे पुत्र को बहुत प्रसन्नता प्राप्त हुई और तीनों वहाँ निरन्तर तप में ही जुटे रहने लगे । काफी लम्बे समय बाद जब तीसरे पुत्र से लेडी समालका की घोर वन में भेंट हुई तो उसे सब समाचार प्राप्त हुऐ । उसे वनप्रस्थ देख लेडी समालका को बहुत प्रसन्नता हुई पर पहले पुत्र को फिर से संसारी बना देख चिन्ता रहने लगी, कि कैसे उसका कल्याण हो । माँ को चिन्तित देख दूसरे पुत्र से न रहा गया, उसने इस कार्य को सिद्ध करने के लिये माँ की आज्ञा चाही । उसकी रजा को जान करके माँ को बहुत प्रसन्नता हुई । उसने

उसे विशेष सावधान रहने की ताकीद की और अपने पहले पुत्र जो सन्यासी से फिर संसारी हो गया था-को शुद्ध रूहानी ज्ञान याद कराने के लिये संसार अथवा उसके राज में भेजा । दूसरा भी बाल सन्यासी होने के कारण उसी विपरीत ज्ञान में ही उलझ कर उसी पथ का अनुसरण करने लगा, जिसका कि पहले ने किया था । पहले को तो सब याद आ गया और दूसरा भूलने लगा । शीघ्र ही पहले वाला नतीजा प्रत्यक्ष होने लगा फिर से । पहले ने समस्त राज दूसरे के हवाले किया और फिर वन की राह ली । लेडी समालका पहले को लौटे और फिर दूसरे को फँसे देख दुबारा से चिन्तित रहने लगी, कुछ समय बाद उसकी हालत बिगड़ने लगी इस रहने वाली निरन्तर चिन्ता से । ये सब तीसरे पुत्र से न देखा गया । अपने को ही इस सारी चिन्ता का मूल कारण जान उसने अपने उस दूसरे भाई को फिर से लौटा लाने के लिये माँ से इजाजत माँगी । इससे माँ को प्रसन्न्ता हुई और फिर उसने सहर्ष इस कार्य को करने की आज्ञा अपने तीसरे सन्यासी पुत्र को दे दी । साथ ही विशेष रूप से उसे सावधान रहने की भी ताकीद की । तीसरे पुत्र ने जब राज में जा करके दूसरे भाई को जो सन्यासी से फिर संसारी हो गया था फिर से शुद्ध रूहानी ज्ञान याद करवाया तो फिर से राज कार्य से उपरति हो कर रहने लगा और अपने भूल गये अभ्यास में ही फिर से दिन व्यतीत करने लगा । तीसरा जो बताने के लिये माँ ने भेजा था, उस पर इन राज भोगों का कुछ

भी प्रभाव ही नहीं पड़ा क्योंकि वो तो इन्हें जन्म से ही भोगता रहा था । इनकी निस्सारता तो उसे बाद में ज्ञान करवाई गई थी । अब दूसरे को भी फिर से इस "दुर्लभ पथ" पर चलते देख कर के उसे बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उन्होंने पहले (भाई) के पुत्रों को समस्त राज अधिकार दे कर के, अपने दूसरे भाई को साथ ले कर के वन की राह ली । अपने तीसरे पुत्र के साथ दूसरे पुत्र को भी लौटा देख करके लेडी समालका ने राहत की सांस ली अर्थात बहुत प्रसन्न हुई । क्योंकि उसने अपने को उस "स्त्री धर्म" के "विशेष धर्म" पालन से सदा के लिये मुक्त करवा लिया था । वन में पाँचो घोर तप में जुटे रहे शेष जीवन भर और एक-एक करके निर्वाण को प्राप्त हुऐ । ऐसी ही विशेष मिसालों से आपका इतिहास भरा पड़ा है । सबसे बड़ा धोखा आप ने इन मत-धर्म के ठेकेदारों से ये खाया है कि विरासत में मिले अपने ऋषि मुनियों के ज्ञान को भुलाने अथवा ठुकराने का । आप के पास इन्हें विचारने तक का समय ही नहीं है । आप जिस धरती पर जन्में हो उसके कण-2 में केवल "अकथ आत्माओं" का "केवल तप" भरा पड़ा है । आप किन निकृष्ट जंगली, जो "परमात्मा को भूले" बैठे हैं इनका संग अथवा अनुसरण करने में ही अपने को श्रेष्ठ समझते हो ? इनके तो चमड़े की जूती भी आपके पहनने योग्य कदापि हो ही नहीं सकती ! क्यों आप वासनाओं के अथाह समुंद्र में अपने को निरन्तर डुबोते चले जा रहे हो । वासना का अन्त आज तक किसी

को कभी सुपने में भी नहीं मिला । ये केवल आप का खून पीना ही पसन्द करती है पर इसकी संतुष्टि कभी सुपने में भी होनी असंभव ही है । ये निरन्तर केवल बढ़ती ही जाती है । आप जितना इसे पूरा करने के लिये अपनी हस्ती मिटाते रहते हो, ये घटने के स्थान पर केवल बढ़ती ही जाती है केवल "शैतान की आंत" की तरह । यहाँ तक की आप की हस्ती ही सदा के लिये मिट जाती अथवा खत्म हो जाती है पर ये केवल आप का मुँह चिढ़ाने के लिये ही जिन्दा षैतान की तरह ठहाका लगाती ही दिखाई देती है । आप की समस्त इन्द्रियाँ गल जाती हैं अथवा हाथ खड़े कर देती हैं यानी के जवाब दे देती हैं पर ये "सुन्दर-मीठा-प्यारा सा काम" आपको प्रत्यक्ष वैसे का वैसा ही दिखाई देता है । इन "नर्क नाम" के दुर्गन्ध से भरे "छोटे से छोटे छिद्र" को कोई आज तक भरने में सफल नहीं हो सका अकथ प्रयत्नों के बावजूद । फिर भी तूं लगा है इसे भरने । भरता रह शायद ये "कीमती दुर्लभ आविष्कार" करना परमात्मा ने तेरे ही भाग्य में लिखा हो । उस उत्कृष्ट कार्य को करने के तेरे अनन्त प्रयत्न तुझे अवश्य "घोर पार्कों" की सैर करने पर मजबूर कर ही देंगे । इस तेरे प्यारे से छिद्र का दूसरा सिरा अवश्य निश्चित रूप से इन विशेष-तेरी सुन्दर धरती पर भी दुर्लभ-विशेष पार्कों में ही खुलता है । अब भाई ये तो तेरा केवल अपना निजी व्यवसाय मात्र ही है । भला दूसरा कोई कैसे इसमें दखल देने में भी सफल हो सकता है । "दे अनिक पर्दे में पर दाग

संग फाके । धरमराय (शैतानी ताकतें सूक्ष्म अदृश्य) जब लेखा मागे तो कउन तेरा परदा ढाके ।" यहाँ तो तूने चालाकियाँ कर ली पर यकीनी तौर निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले तेरी एक भी नहीं चलने की इस विशेष दरबार में । तुझे समस्त जुर्माने इंटरेस्ट के साथ अवश्य देने पर मजबूर होना ही पड़ेगा आवश्यक रूप से । "निमख काम स्वाद कारण कोट दिनस दुख पावह । घड़ी-मुहूर्त रस मांडे फिर बहुर-बहुर पछुतावै ।" ये तेरी प्यारी सी चमकीली गोल-2 रंग-बिरंगी झील से भी गहरी आँख जब किसी को देखती है न तो भाई इस के नियमानुसार केवल एक बार झपकने से पहले ये शैतानी ताकतों का अंश तेरा प्यारा सा "गुरू-मित्र-सखा" इत्यादि जो "मन" है न ये अवश्य भोग कर ही लेता है । केवल तेरी इतनी सी ही उत्कृष्ट प्यारी सी कामना अथवा वासना का प्रतिफल केवल "एक करोड़ दिन" तक तुझे इन उत्कृष्ट पार्कों की सैर करने पर अवश्य आवश्यक रूप से मजबूर होना ही पड़ेगा इसे तूं निश्चित रूप से जान ले । वाणी में शक की गुंजाइश कभी भी किसी भी युग काल में संभव ही नहीं है केवल लफज ही बदलते रहते हैं भाव वही निश्चित रूप से प्रत्येक लफज के भीतर समाये ही रहता है । बिना कमाई रूपी सर्जन विशेष की उपाधि प्राप्त किये धुर यानी कि असली सरकार से तूं कभी भी न तो इसका चीड़-फाड़ करने में समर्थ हो सकेगा और फिर अन्दर का माल

तुझे कैसे बिना इस दुर्लभ सर्जरी के प्रत्यक्ष होना संभव ही हो सकेगा । यानी के तुझे उस "दुर्लभ सर्जन" का सहारा लेना ही पड़ेगा । जो खामोशी से सब के अन्दर बैठा इस गुप्त खजाने की रक्षा कर रहा है । ये समस्त अखुट भण्डार केवल तेरी अपनी निजी सम्पति मात्र ही तो हैं । ये केवल तेरे लिये ही सजा कर के रखे गये हैं फिर क्यों तूं अपनी हस्ती इन्हें प्राप्त करने के लिये ही केवल खर्च नहीं करता । क्यों तूं अपना समस्त उपलब्ध साधन केवल फिजूल के व्यर्थ हो जाने वाले रंग-तमाशो पर ही खर्च कर देने में ही केवल अपने को श्रेष्ठ स्थापित करने में ही लगा हुआ है । कोई बड़ी चालाकी से तेरी ये कीमती हस्ती निरन्तर हज्म करता चला जा रहा है । तूं खामोश केवल हाथ पर हाथ धरे बैठा है । ये तेरी खामोशी अथवा बुजदिली तुझे बहुत महंगी साबित होगी । शीघ्र उठ और अपने इस "कीमती दुर्लभ होम वर्क" को तूं तुरन्त खत्म कर ले । कहीं ऐसा न हो कि कोई तेरे से पहले काम कर जाये । कोई बड़ी चालाकी से भूत की तरह तेरे सिर पर सवार बैठा है । उल्टी गिनती गिन रहा है । जीरो होते ही ये तुझे घसीट कर तुझे ये "कीमती दुर्लभ कार्य" करने से अलग कर ही देगा अवश्य । सोच तब तूं क्या करेगा ? एक अक्षर भी अगर लिखना बाकी रह गया न तो तूं निश्चित रूप से जान ले कि तुझे तेरी अपनी इन्हीं प्यारी-2 वासनाओं के कारण जिन की वजह से तूं अपना ये "दुर्लभ कार्य" पूरा करने में असमर्थ रहा तुझे अवश्य फिर से

किसी न किसी पिंजरे को रोशन करना ही पड़ेगा आवश्यक रूप से । प्रभु प्रेरणा स्पष्ट है कि जब ब्याह हुआ तो दोनों प्राणी स्त्री-पुरुष माँस तथा खून के सिवाय और क्या हैं ? फिर दोनों के संजोग से जो क्रिया हुई इन में भी रज तथा वीर्य सिवाय माँस तथा खून के और कुछ भी नहीं । सोच तो सही कि किस ने किस को भोगा ? सिर्फ माँस और खून ने ही माँस तथा खून को ही केवल भोगा । अब जो प्राणी पेट अथवा थैली में आया । वो क्या क्या है केवल एक माँस तथा खून का एक खोल मात्र ही तो है । फिर उस खोल में उसने भोजन किस का किया ? तो भी केवल माँस तथा खून ही निकलेगा, अपने समस्त विशेषज्ञों से इस बारे में तूं ज्ञान प्राप्त कर लेवे तो ज्यादा बेहतर है । फिर जब इस संसार में तूं प्रत्यक्ष हुआ तो केवल एक माँस तथा खून के लोथड़े में ही केवल लिपट कर के । फिर जब सबल हुआ और माँस तथा खून का शोर मचाने से तेरा मसला हल होने वाला हर्गिज सुपने में भी नहीं है । केवल इन्हें छोड़ने से तूं अपने घर जाने का सर्टिफिकेट नहीं प्राप्त कर सकता कभी सुपने में भी (बेशक कुछ जुर्माने से तू अवश्य बच गया केवल) अर्थात इस मुल्क में केवल आत्मा-आत्मा को खा कर के ही अपने को स्थिर रखने में समर्थ हो सकती है केवल । तथा प्रत्येक आत्मा के शरीर का हनन करने का हरजाना तुझे निश्चित रूप से इन मुल्कों के मालिक "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" को आवश्यक रूप से चुकाने पर मजबूर

होना ही पड़ेगा । अब ये तुझे केवल तुझे ही निश्चित करना है कि तुझे कितना हर्जाना देना कबूल है । और इसे चुकाने के लिए तुझे कितनी कमाई की आवश्यकता है और ये कमाई तूं कब और कैसे कर सकने में समर्थ हो सकता है ? निश्चित रूप से जान ले कि सिक्का केवल एक ही चलता है । और उस "कीमती दुर्लभ सिक्के" का केवल एक ही नाम है केवल "परमात्मा" अथवा परम चेतन सत्ता । शेष सब नकली धन है । ये सारा का सारा तो जीते जी ही साथ छोड़ देता है फिर मरने के बाद कौन इसका यकीन करेगा अर्थात केवल मूर्ख श्रेणी का ही विद्वान प्राणी ! जब डॉक्टर सर्टिफिकेट लिख कर के दे देता है तो सब कुछ तेरा अपना ही कमाया हुआ रहता तो तेरे समक्ष ही है पर तूं उन का कर कुछ भी नहीं सकता । न तो साथ ही ले जा सकता है और न छोड़ते ही बनता है । ये समस्त तेरे पदार्थ सम्बन्धियों सहित केवल तेरा मुँह ही चिढ़ाते हैं । बेशक नकली तौर पर आँसू बहाते हैं पर अन्दर से बांटने का ही धन्धा केवल कर रहे होते हैं । सच्चा रोने वाला जो दिखता है वो भी केवल इसीलिये रोता है कि "साधन विशेष" उसे तेरे से प्राप्त होता था वो अब दूर हो जायेगा । अर्थात उसके रोने का भी मुख्य कारण तेरी सूरत नहीं, केवल वो पदार्थ अथवा साधन विशेष ही हैं जो अब तेरे न रहने से अवश्य उससे दूर कर ही दिया जायेगा । फिर सोच कौन तेरी इस मुश्किल की घड़ी में मदद करने में समर्थ हो सकता है ? जिन सम्बन्धों अथवा पदार्थों के

लिये सारी उम्र तूं भागता-दौड़ता रहा अपनी हस्ती मिटाने का ही केवल व्यवसाय अपनाये रहा । ये समस्त आज तुझे केवल "धोखा" नाम का श्रेष्ठ मैडल अथवा उपाधि तेरे गले में डाल कर ताली पीट रहे हैं अन्दर से । बाहर झूठा रोना अपना कर के बैठे हैं । इन की असलियत तूं स्वयं कुछ ही समय में देख लियो । अभी सब गीदड़ों की जमात की तरह से पुकारेंगे सब मिल कर के कि "झूठी देखी प्रीत जगत में झूठी रे ।" तूं तो सारी उम्र इसी प्रीत को सच्चा समझ कर के अपनी हस्ती केवल इन्हीं पर दोनों हाथों से लुटाता रहा । और ये मदद करने की बजाय तुझे ही झूठा साबित कर रहे हैं । ये दुर्लभ ज्ञान तुझे केवल जीते जी ही पढ़ना था । जिसे पढ़ने के लिये तेरे पास समय ही नहीं था । समय की कमी होने के कारण तूने इस पर कुछ विशेष ध्यान ही नहीं दिया । अब तूं पढ़ना चाहता है । पर क्या हो सकता है "कोई" तुझे इसकी केवल एक मात्रा भी पढ़ने ही न देगा । और आगे तूं फिर इन की चालाकी और देखियो । अभी तुझे ये आग पर जलने के लिये अकेला ही छोड़ देवेंगे अथवा केवल कीड़ों के खाने के वास्ते इनका प्यारा सा उत्कृष्ट भोजन बना कर तुझे ही सजा करके उनके आगे धर देंगे । फिर महीनों ये तुझे नोंच-2 कर के खायेंगे तथा तुझे अपने निकृष्ट गन्द में ही बदलने का धन्धा केवल बनाने में जुटे रहेंगे । तूं यदि "ध्यान" से देखेगा तो तुझे पता चलेगा कि ये सब तेरे पीछे कभी न कभी तेरे प्यारी-2 शक्लों वाले बड़े ही

नजदीकी सम्बन्धी ही रह चुके हैं । अर्थात यहाँ भी बचे हुए हिसाब को ये तेरे इसी उत्कृष्ट शरीर को जिसे तूं सारी उम्र सुगंधियों अथवा वस्त्रों से सजाने में ही अपने को मिटाता रहा, बड़ी ही बेरहमी से कुतर-2 कर अपना विशेष-2 बचा हुआ "बकाया" प्राप्त कर के बेहतरीन निपटारा करेगें । और फिर देखियो तुझे इस जोखिम से भरे दुर्लभ कार्य (चिता पर जलना या छुद्र कीड़ों से नोचवाना) को करने के लिये अकेला ही छोड़ कर के घर पर नहा धो कर के केवल इसी पाठ को दृढ़ करने लगेगें कि "सच्ची देखी प्रीत जगत की सच्ची रे ।" अगर ये पाठ न पढ़ें तथा दूसरों को भी यही पाठ न पढ़ावे तो भाई इन का धन्धा कैसे चलेगा ? ये विद्वान नहीं जानते कि केवल इसी उल्टे पाठ को पढ़ने के कारण ही तो तुझ जैसे सृष्टि के सिरमौर को ये सब दिक्कतें भुगतनी पड़ रही हैं वो भी केवल अकेले । अपने लिये भी ये केवल इन्हीं दिक्कतों को प्रत्यक्ष करने का ही सामान बाँध रहे हैं केवल । यही पाठ ये दूसरी जमात वाले पढ़ने में लगे हैं "राम नाम सत है" जीते जी तो इसके लिये न पढ़ने वाले को समय मिला, न पढ़ाने वाले को ही । जीते जी तो यह केवल एक फालतू अथवा व्यर्थ की ही चीज साबित करते रहे, अब दूसरों को नहीं केवल अपने को ही अन्धा स्थापित कर रहे हैं । वे जानते हैं कि पाठ केवल जिन्दा ही पढ़ सकता है भला मुर्दा भी कभी पढ़ने में समर्थ हो सकता है ? अर्थात कदापि हर्गिज नहीं । पर सब "कौओं की बारात" की

तरह से ढोल पीटते हैं और मुर्दो को पढ़ाने का ही केवल झूठा दावा पेश करते हैं। अगर झूठ समझता है तो तूं खुद ही थोड़ी देर बाद देख लियो, घर आते ही नहा धो कर के ऐसे बैठेंगे जैसे राम का नाम कोई भयावला भूत था उससे पिण्ड छूट गया । वर्ना नहाने का क्या अर्थ हो सकता है ! वहीं पर तिनका तोड़ेंगे, कि हे भूत अब तेरा हमारा कोई सम्बन्ध ही नहीं है । कहीं तू भूल जाये और फिर से इनको आ दबोचे । इसलिये आते ही फट से नहा लेते हैं । और इस तरह से व्यस्त हो जाते हैं कि एक ही बात साबित होवे कि राम का नाम ही केवल इस सृष्टि में झूठ है अथवा व्यर्थ का सामान मात्र ही तो है । अतः जिन्दगी भर पूरी सावधानी वरती जाती है कि कहीं भूले से भी वे फालतू की चीज आपके एकत्र किये जाने वाले कीमती सामान में मिल करके भूले से भी समस्त अपनी जिन्दगी भर की "अकथ कमाई" को मैला अथवा उच्छिष्ट न बना दे । फिर इस "कीमती नुकसान" को आप कैसे पूरा कर सकोगे ? क्योंकि उम्र तो आपकी सारी इन्हीं पर जरूरत से भी ज्यादा खर्च हो ही चुकी होगी । परमात्मा के दरबार में आप को खाली हाथ लौटने पर शर्मिंदा होना पड़ेगा भला ये आप को कैसे सुपने में भी गवारा हो सकता है । शायद इसी समस्या को ध्यान में रखते हुऐ आप भी सारी उम्र इस फालतू सी चीज "राम का नाम" से परहेज ही करते रहते हो । अच्छी बात है आखिर सावधानी बरतनी ही श्रेयस्कर है । क्योंकि जो सावधान रहता है

अवश्य कोई और भी सावधान हो ही जाता है जो खुद स्वंय ही असावधान है फिर भाई उसका कब किस काल में निपटारा होगा इस "विशेष विषय" का तो बड़े-2 ऋषि-मुनि भी एक अक्षर भी ब्यान करने में सदा असमर्थ ही रहे । फिर किसी और की क्या कहें !

"इक लख पूत-सवा लख नाती-तिस रावण घर दीया न बाती !" प्रभु प्रेरणा स्पष्ट ही है । कि जिस "कुल-परिवार-वंश" इत्यादि को कायम रखने के चक्कर में दिन-रात निरन्तर प्राणी अपनी कीमती हस्ती अथवा "कीमती दुर्लभ मानव" जन्म को न्यौछावर अथवा व्यतीत करने में ही केवल अपने को श्रेष्ठ स्थापित करता हुआ अपने को बुद्धिमान समझता रहता है । केवल थोड़े से ही जुबान के स्वाद के फेर में अपने ये सभी सम्बन्धी जन तथा समस्त पदार्थों (उपलब्धियों सहित) को सदा के लिये खो बैठता है ! इन सभी ऐतिहासिक घटनाओं से केवल इन्हीं शब्द (गुरू-केवल रागमई प्रकाशित आवाज) वचनों की ही साक्षी निश्चित रूप से स्थापित होती है । ऐसी अनन्त घटनाओं से आप का यह दुर्लभ इतिहास ठूंस-ठूंस कर के भरा हुआ है । जब कभी भी "दुर्लभ युग" काल में आपको फुर्सत मिलेगी आप विचार कर लीजियेगा, निश्चित रूप से केवल यही वाक्य आपको पत्थर की लकीर ही साबित होंगे । अर्थात आप कभी भी अनन्त प्रयत्नों के

बावजूद कभी सुपने में भी इन्हें बदलने में समर्थ हो ही न सकोगे ! अपने समय में "राज श्रेणी" के श्रेष्ठ राजा रावन के ही इतिहास को विचारो, तीनों मुल्कों का राज केवल अकथ प्रयत्नों से ही स्थिर करने वाले इस श्रेष्ठ राजा को सिर्फ अपनी "अनन्त कामनाओं" के स्वादों को ही पूरा करने के कारण, अपने सभी सम्बन्धियों को समस्त उपलब्धियों सहित अपने ही हाथों इन "अनन्त वासनाओं" के अथाह समुन्द्र में डूबने के लिये मजबूर अथवा विवश होना ही पड़ा । जिसके पुत्रों की संख्या एक लाख से अधिक तथा नातियों की संख्या सवा लाख से भी अधिक थी । ये केवल कोई थोड़ी सी जगह में ठूंस-2 कर भरे नहीं हुऐ थे । प्रत्येक को उस वक्त की उपलब्ध तीनों मुल्कों की श्रेष्ठ-2 इनायतें स्वाभाविक रूप से प्राप्त थीं । तथा रहने को जो महल थे वे केवल सोने-चांदी तथा कीमती मणियों को तराश कर ही प्रत्यक्ष किये गये थे । तथा उनकी सुरक्षा स्वाभाविक रूप से प्राप्त समुन्द्र ही उपलब्ध था । आज न वो महल हैं न उसके नाम वंश को चलाने वाला ही कोई प्राणी उपलब्ध है । केवल यही नतीजा निकलता है इस "कीमती दुर्लभ मानव शरीर" के झूठे स्वादों को पूरा करने में अपनी हस्ती को मिटाने का नतीजा निश्चित रूप से केवल । इन्हें पूरा करने के लिये जो क्रिया जीव जाने-अनजाने में भूले से भी अपनाता है उस का भुगतान निश्चित रूप से जीव को ही केवल अपनी समस्त उपलब्धियों को खो कर के सदा के लिये इन निकृष्ट पिंजरों को

रोशन करने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से अनन्त कल्पों के बाद भी । अपनी धरती के श्रेष्ठ राजा "पाण्डू" के इतिहास को ही विचार लो । पूरी धरती को अपने पैरों तले रोंदने वाले इन श्रेष्ठ राजन पाण्डू को केवल थोड़ी सी अपनी भूल का नतीजा, अपनी उसी उम्र में इन सभी प्राप्त उपलब्धियों को अपने प्राणों सहित खो कर के भुगतने अथवा चुकाने पर मजबूर होना ही पड़ा । एक बार पूरी धरती पर अपना राज्य स्थापित कर लेने के बाद राजन "आखेट" को निकले "शस्त्राभ्यास" हेतू । काम में रत एक जंगली जानवर को अपने तीर का निशाना बनाया । नजदीक आने पर पता चला कि वह प्राणी एक तपस्वी ऋषि था । प्राण त्यागने से पहले ऋषि वचन कर गये कि हे राजन तुम ने मुझे "सुख" प्राप्त करने से पहले ही शरीर छोड़ने पर मजबूर कर दिया है । निश्चित रूप से तुम्हें भी केवल इसी स्थिति में प्राण त्यागने पर मजबूर होना ही पड़ेगा । केवल इसी कारण ऋषि वचनों को "सत" मान कर राजन अपने "हरम" में दाखिल नहीं होते थे । अपने को केवल राज कार्यो में ही व्यस्त रखते थे । आखिर कब तक चलता ? होनी को निश्चित जान अपना समस्त राज अपने भाई अन्धे धृतराष्ट्र के हवाले कर दोनों पत्नियों सहित "वनप्रस्थ" हो गये । बड़ी पत्नी कुन्ती इस भेद को जानती थी तथा बहुत सावधान रहती थी । उसने दूसरी पत्नि माधरी को भी बहुत नियन्त्रण में रखा हुआ था। एक बार घोर वन में जब कुन्ती

बालकों को ले कर के व्यस्त थी तब माधरी स्नान कर पानी भर कर के ला रही थी । उसे इस अवस्था में देख कर राजन मोहित हो गये तथा ऋषि वचनों को भुलाने का अपराध कमा ही बैठे । उन्हें भी ठीक उसी अवस्था में प्राण त्यागने पर मजबूर होना ही पड़ा था । कर्म की गति कभी भी किसी भी काल में अनन्त प्रयत्नों के बावजूद कभी सुपने में भी नहीं बदलती ! ऐसा निश्चित जानो । रावन के समय के ही धरती के श्रेष्ठ राजा भगवान रामचन्द्र जी को ही विचार लो, पूरा जगत रामचन्द्र जी को "परमात्मा" का "दुर्लभ पिता" मान कर निश्चित रूप से पूजने में ही केवल अपने को श्रेष्ठ स्थापित करता हुआ अपनी हस्ती को व्यर्थ खोने में व्यस्त है । भूल जाता है कि जो स्वंय भुगतान में निश्चित रूप से कैद है उससे इस जेलखाने से मुक्त होने का आप का यह "दुर्लभ कीमती सुपना" साकार हो सकेगा । अपने जीवन में केवल एक कार्य को सिद्ध करने के लिये एक निरपराध प्राणी की हत्या की । ऐसा नहीं कि राम में समर्था नहीं थी । समस्या विचित्र थी । "बाली" के पास अपने "तप विशेष" की दुर्लभ कमाई थी । इस कारण युद्ध में कोई भी उसे परास्त करने में असमर्थ ही साबित होता था । क्योंकि उसे सिद्धि विशेष उपलब्ध थी, कि जब भी कोई उससे युद्ध करने आता था । उसका आधा विशेष बल अपने आप स्वाभाविक रूप से बाली को प्राप्त हो जाता था । अब आधे रह

गये शेष बल से कैसे कोई पहाड़ जैसी समर्था रखने वाले "बलवान बाली" से युद्ध में उसे परास्त करने का अपना कीमती सुपना साकार कर सके । भगवान राम के साथ भी ऐसा ही हुआ । बार-2 सुग्रीव (बाली का जुड़वा भाई) के हारने का यह दुर्लभ कारण जान कर राम ने केवल उसे परास्त करने के लिये जिस से कि राम का अपना कार्य सिद्ध हो सके बाली को छुप कर के तीर मारा । प्राण छोड़ते समय बाली ने वचन किया, कि हे राम क्यों तूने मुझे छुप कर के मारा । मैंने तो तेरा कुछ भी बिगाड़ा ही नहीं था । इसका बदला मुझ निरापराध को मारने का तो तुझे अवश्य चुकाना ही पड़ेगा आवश्यक रूप से । ठीक पूरे एक युग के बाद जब यही आत्मा जो "भगवान राम जी" के रूप नाम के पिंजरे को सुशोभित करती रही, दस हजार से अधिक वर्षों तक इस धरती पर जब फिर से धर्म-मर्यादा को स्थापित करने के लिये द्वापर युग में "भगवान कृष्ण" जी नाम के "पिंजरे" अथवा "कन्न विशेष" को रोशन करने के लिये एक हजार साल से भी अधिक समय तक के लिये इसी धरती पर प्रत्यक्ष हुई । तब जब आखिरी समय अपनी लीलायें समेटने लगे । जंगल में एक वृक्ष के नीचे ध्यान मग्न थे । डूबते सूर्य की किरणें उन के चरण कमलों से टकरा कर विशेष रूप से चमक रही थी । कारण उनके पाँव में विशेष चिन्ह "पद्म" था जिससे स्पर्श करने पर सूर्य की किरणें

विशेष रूप से प्रभावित हो रही थी । उस वक्त एक भील शिकार पर निकला हुआ था । दूर से इस विशेष चमकने वाली किरण को हिरण की आँख समझ कर के उसने वहीं से निशाना साध कर अपना "जहर से बुझा हुआ तीर" छोड़ दिया । जो सीधा आ कर के "भगवान कृष्ण जी" के पैर को भेद गया । नजदीक आने पर वह भील भगवन को इस हालत में देख कर बहुत पछताया । पर अब क्या हो सकता था, होनी अपना कार्य सिद्ध कर ही चुकी थी । वो भील नाम के "पिंजरे" को रोशन करने वाली वही आत्मा थी जिसने त्रेता युग में कभी लम्बे समय तक "बाली" नाम के पिंजरे अथवा कब्र को रोशन किया था । अर्थात एक युग के बाद भी आत्मा को अपने किये का दुर्लभ भुगतान चुकाने पर निश्चित रूप से "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" ने मजबूर कर ही दिया । फिर हम कौन-2 से पार्क विशेष की लाल-2 गाजर अथवा सफेद-2 मूली ही हैं वो कुछ आविष्कार अथवा चमत्कार कर ही दिखायेगा ? इन सब घटनाओं को ब्यान करने का केवल एक ही मकसद है कि आप बहुत चालाकी से कैद किये गये हो । अपने छुड़ाने की फिक्र को भुला कर के आप अपना "कीमती दुर्लभ जन्म" केवल नाचने कूदने इत्यादि रंग-तमाशे में व्यर्थ खोते अथवा डुबोते चले जा रहे हो निश्चित रूप से । कुछ भी करने से पहले आप खूब विचार करो, क्या आप को कुछ नुकसान तो नहीं होने

वाला । आप एक छोटी सी वस्तु को खरीदने से पहले चार दुकानें पूछते हो अपने जानकारों से निश्चित रूप से सलाह भी लेते हो । फिर खूब सोच समझ कर फैसला करते हो कि कहाँ तथा किस से आप को लाभ अथवा सुविधा प्राप्त हो सकती है । तभी उस मार्ग पर अपना यह कीमती पाँव धरते हो! लेकिन अपने इस "दुर्लभ मानुख जन्म" को आप बिना विचारे इस तरह से खर्च करने में व्यस्त हो, जैसे कि यह हमेशा इसी तरह से बरकरार रहेगा निश्चित रूप से । इसकी "दुर्लभ कीमत" केवल उस वक्त पता चलती है जब आप इसे पूरी तरह से गंवा बैठते हो । आप को इसकी "दुर्लभ कीमत" का पता चल सके तथा आपको फैसला करने में कुछ मदद मिल सके, केवल यही मकसद है इन दुर्लभ शब्द (गुरू-प्रकाशित रागमई आवाज) वचनों का ।

"बकरी (या गउ) अथवा जहाज" नाम का भाव केवल इतना ही है कि आप इस पर चढ़ कर अथवा सदुपयोग कर के जहाँ भी जाना चाहो अवश्य जा ही सकते हो । ये जहाज आप को आप के वाच्छित-2 स्थानों तक पहुँचाने में हर काल में समर्थ हो ही जायेगा निश्चित रूप से जान लो । यानी के यदि आप बकरी अथवा गउ के लाल रंग (खून) को अपनाते अथवा प्रयोग में लाते हो तो आप के लिये "उत्कृष्ट घोर-2 पार्कों" की सैर "अनन्त काल" के लिये अपने ही आप निश्चित हो ही जायेगी निश्चित

आवश्यक रूप से, और यदि आप बकरी अथवा गउ (गाय) के केवल सफेद रंग (दूध) पर ही कुर्बान होते हो केवल जो कि "मानव जीवन को स्थिर" रखने का एक कीमती साधन प्रकृति के जरिये अकाल पुरख परमात्मा की एक उत्कृष्ट दुर्लभ देन ही है तो आप इसी अपने "दुर्लभ मानव शरीर" में ही उस अकाल पुरख परमात्मा को प्रत्यक्ष अनुभव कर, अपने आप को सदा के लिये इस जेलखाने से मुक्त करवाने में समर्थ आवश्यक निश्चित रूप से समर्थ हो ही जाओगे ऐसा यकीनी तौर पर निश्चित ही जानो !